स्वर्ण रेखा

बद्री प्रसाद पाण्डेय

कार्यालय
उप निदेशक, समाज शिक्षा, बीकानेर

[illegible]

(I) केन्द्रीय क्रय हेतु (198– 8 –)
(II) विक्रय के लिए नहीं।

मूल्य : तीस रुपये मात्र

प्रकाशक : ऊर्जा प्रकाशन
६६, नया बैरहना, इलाहाबाद

संस्करण : प्रथम, १९८४—प्रतियाँ १०००

लेखक : बद्रीप्रसाद पाण्डेय

सज्जा : सुमन्त भट्टाचार्या

मुद्रक : न्यू कमल प्रिन्टर्स
कीडगंज इलाहाबाद

SWARN REKHA By B P Panday

Price : 30 00

दो शब्द

स्वण रेखा कल्पना नहो, दो युगल प्रेमियो के अधूरे जीवन के सजीव चित्रण हैं। इन प्रेमियो के स्वच्छ सरल, मान प्रतिष्ठा, सम्मान से ओत प्रोत ममस्पर्शी रेखाकन, भावात्मक अ तद्व द और बहिद्व द के जीते जागते रूपक जो इस लघु उप यास मे दिखलाये गये हैं, आज के नही, इतिहास के गर्भ मे युगो युगा से समाये अनेक ऐसी सच्ची कहानिया के जीवित चित्र हैं, जि हें देख, सुन, पढ़ और जानकर भी यह समाज अपने मन मोहक युवक और युवतिया को बलि की वेदी पर निछावर करता हुआ, एक अहम् को जीवित रखे है।

ऐसा नही कि घटना के बाद उसे मर्मा तक पीड़ा न पहुँचती हो, उसे अपनी त्रुटियो का अनुभव न होता हो, लेकिन समाज आज भी अपनी झूठी मान मयादा का अपने अक मे समेटे इस दु ख के गरल को पीता जा रहा है, और पीता रहेगा कब तक ?

यह इतिहास भी इन कहानियो को अपने मे जि दा रखे हुये समाज की मुदी आँख का खोलने के लिये घटना के पीछे पीछे चल रहा है।

—दमयन्ती भट्ट

रसीद

सवश्री श्रीराम सिंह भू० पू० युवक समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र अल्मोड़ा, श्री ललित मोहन साह प्रवक्ता भौतिक विज्ञान तथा श्री दान सिंह वाणी प्रवक्ता रसायन विज्ञान, रा० इ० का० अल्मोड़ा, श्री भैरव दासगुरुरानी, प्रवक्ता जे० बी० टी० सी० अल्मोड़ा, श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय, नूतन वस्त्र भण्डार अल्मोड़ा, कु० उर्मिला शर्मा प्रवक्ता गणित, कुमारी इन्दु प्रवक्ता जीव विज्ञान रा० बा० इ० का० अल्मोड़ा, श्री रमाशंकर सहायक सम्पादक समता, श्री राजेन्द्र सिंह विष्ट 'पिण्टू' लिपिक रा० इ० का० अल्मोड़ा, श्री विजयकुमार ढौंडियाल, उल्का भवन, थपलिया, अल्मोड़ा, श्री योगेन्द्र शर्मा एव रामकृष्ण वर्मा, रा० अ० का० इ० का० अल्मोड़ा से प्राप्त प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष भावनाओं का ऋण मुझे व्यग्र किये था।

श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र, छिवकी, इलाहाबाद, श्री दयाप्रकाश दीक्षित महोबा, डा० शिवमूर्ति शर्मा, प्राचार्य लालगंज, प्रतापगढ़; श्रीमती माया शर्मा, इलाहाबाद, डा० हर्षवर्द्धन द्विवेदी उमरन, रायबरेली और श्री राज सिंह, प्रवक्ता, रा० इ० का० बाँदा का सम्मिलित स्नेह उत्कण्ठित किये था। स्वर्णरेखा का प्रणयन—ऋण और उत्कण्ठा की एक अभिव्यक्ति है। यदि कुछ दोष है—इसमें, तो उपरिलिखित सभी महानुभाव—हिस्सा लेने का तैयार रहें, इसीलिए यह रसीद लिख दी कि वक्त जरूरत पर काम आये।

रामनवमी २०४१ विक्रम —बद्रीप्रसाद पाण्डेय

[१]

साध्य प्रभा की स्वर्णिम-दीप्ति नभोमण्डल के उत्सङ्ग पर कुछ अलसविलसित नवयौवना के मुखपटल की आभा सी प्रतीत हो रही थी, कालिन्दी के तटद्रुमो पर विहगावली का कलरव शनै शनै बढता ही जा रहा था, सलिल लहरियो की चपलता कुछ शान्त सी होती जा रही थी, आर पार तटिनीतटविलास शिथिल उच्छ्वास सा लेता हुआ विश्राम मुद्रा मे प्रतीत हो रहा था—मुकुल के अन्तमन की भावधारा के उद्रेक को सम्भवत इस बढती हुई नीरवता से कुछ उद्दीपन सा प्राप्त हो रहा था—कहाँ तो वह आया था, कालिन्दीकूल की सुषमाश्री की सौन्दयमाधुरी का आकण्ठ पान करने और कहाँ वह हृदय कालिन्दी की धारा मे उत्प्लावित होने लगा ।

वर्षों का अन्तराल भी कलिन्दतनया की मञ्जुल मदिरतटी के सौन्दय को विलुप्त नही कर सका । कालिन्दी के तट पर स्थित, एकान्त के अधिराज्य से विलसित वैभव सम्पन्न मुकुल भवन इस क्षेत्र में दूर दूर तक अपनी शिल्पकला एव अलकारो के लिए प्रख्यात है । लगभग १० वष व्यतीत हुए होगे—तभी अचानक कालिन्दी के सिकता प्रान्तर के जन जन मे यह अनुश्रुति प्रचलित हो उठी कि कानपुर के निवासी किसी व्यक्ति ने कालिन्दी के उजर तट का विशाल भू भाग ले लिया है किंवदन्ती सत्यानुयायिनी होती है—अत जो समाचार मात्र वाग्विलास था, वह कुछ ही दिनो मे वास्तविकता बन गया । कालिन्दी के तट पर जहाँ नीरव एकान्त था—वही जन कोलाहल उमडने लगा ।

इस भू भाग के क्रेता मुकुल ही थे । प्रयाग से १५ मील पश्चिम फैला हुआ कालिन्दी का तट अपने सौन्दय के लिए विख्यात था, कानपुर

के एक वैभव सम्पन्न परिवार मे जन्में मुकुल को इण्टरमीडिएट तक शिक्षा लखनऊ के कालिवन तालुकेदार कालेज मे सम्पन्न हुई। इण्टर मीडिएट प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण करने के बाद प्रयाग विश्वविद्यालय के गुरुजनों की यश श्री ने मुकुल को अपनी ओर आकृष्ट किया, यद्यपि कानपुर तथा लखनऊ—दोनों ही स्थानों पर उच्चशिक्षा की उत्तम एव समुचित व्यवस्था है, फिर भी प्रयाग की मर्यादा, उसकी ज्ञानराशि का असीम वैभव तथा कलिन्दतनया, भागीरथी एवम् अन्त सलिला सरस्वती का पुनीत सङ्गम कितने स्वतः आकर्षक हैं—यह शब्दपरिधि की सामर्थ्य से परे है।

इन कतिपय आकर्षणों से मुकुल ने प्रयाग विश्वविद्यालय में बी० ए०, प्रथम वर्ष मे प्रवेश लिया। अपनी प्रतिभा, शालीनता एव सहज मृदु स्वभाव के प्रभाव से मुकुल थोड़े ही समय मे विश्वविद्यालय के कतिपय इने गिने सम्मानित छात्रों की श्रेणी मे अपना स्थान बनाने मे समर्थ हो गया। इन्हीं दिनों मुकुल अपनी मित्रमण्डली के साथ प्रयाग के रम्य स्थलों का दर्शन कर सका। परम पावनी सुरसरि की सलिलधारा, देव मन्दिरों की शंखध्वनि एव महर्षि भारद्वाज का पुनीत आश्रम जहाँ भक्तहृदय की अविरल भक्तिधारा के प्रस्रवण को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करने मे समर्थ हैं वहीं प्रयाग विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा शोध संस्थान, मेडिकल कालेज, इंजिनियरिंग कालेज, एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट, साहित्य सम्मेलन, महिला विद्यापीठ, आनन्द भवन आदि तथा सरस्वती के वरदपुत्र अनेक साहित्यकार एव विद्वान् ज्ञान पिपासुओं की सहज पिपासा का शमन करने हेतु आकृष्ट करते है। केवल मनोविनोद के लिए यात्रा करने वाले सैलानियों के लिए प्रयाग की मदिर सुहानी छवि, असीम सौन्दर्य सजोये है, कम्पनीबाग के बहुवर्णी पुष्पनिकुञ्ज, खुसरोबाग के गुम्बद एव वटवृक्षों की छाया, करीने से सँवारी गयी बॉब्ड हेयर के समान पुष्पवीथियाँ, यमुना की स्निग्धतटी, हाथी पार्क,

उच्चयायालय संग्रहालय, इतिहास प्रहरी प्रयागदुर्ग, अशोकस्तम्भ, विश्वविद्यालय के पुष्पोद्यान एव भवन सौन्दयपायी के लिए मदिरचषक उत्फुल्ल मन से समर्पित करते हैं। प्रयाग का यह आकर्षण सम्भार मुकुल क्या किसी के लिये आकर्षक हो सकता है, किन्तु मुकुल के आकषण का कारण ही कुछ दूसरा था—आज वही कारण नीरव एकान्त म बैठे मुकुल के हृदय मे कालिन्दीतट के सलिल के समान उच्छलित हो रहा है।

आज मुकुल के पास सब कुछ है। सामाजिक प्रतिष्ठा है, भव्य भवन है, आर्थिक वैभव है—माधवी जैसी प्रियवदा सुदशना पत्नी, हँसते पाटल पुष्प की प्रभा को अपहृत करने वाले आलोक और ज्योति पुत्र पुत्री हैं, फिर भी वर्षों बाद मिले इस एकान्त मे उसकी हृदय तटिनी मे कुछ कसमरश सी हो रही है, लगता है मुकुल को आज याद आ रही है, वह घटिका—जिसने उसे सब कुछ दिया और सब कुछ छीन लिया। समय विदूषक कब किसका परिहास कर दे—कौन जानता है?

समय पूर्वाह्न ११ बज रहा था। मुकुल विश्वविद्यालय की ११ २० से होने वाली कक्षा के लिये पहुँच चुका था। बी० ए० पास करन के पश्चात् उसने एम० ए० प्रथम वर्ष प्राचान इतिहास की कक्षा मे प्रवेश लिया था। प्रो० जोशी की कक्षा का समय था। मुकुल सीधे कक्षा मे पहुँच गया—कक्षा मे वह अकेला ही पहुँचा था, कुछ देर पश्चात् तीन चार छात्रायें पहुँच गयी। मुकुल सीट पर बैठकर अपनी अभ्यासपुस्तिका के पृष्ठ पलटने लगा। कक्षा मे आने वाली छात्राओं में अलका, नीलिमा, दीपा और विजया थी—घण्टी का समय हो गया था, किन्तु प्रो० जोशी और अन्य कोई छात्र कक्षा मे नही आये—आते भी क्यो? प्रो० जोशी ने पहले ही दिन अगले दिन न आने की सूचना सूचनापट पर अङ्कित

करा दिया था। इस समय कक्षा मे उपस्थित छात्र छात्राओं को यह सूचना नही विदित हो सकी थी। इसी समय मुकुल का मित्र शरद् कक्षा मे आया। शरद् को देखते ही मुकुल कक्षा से बाहर निकल गया। आपस में कुछ दोस्ताना बातें होती रही।

छात्राओं को स्वच्छन्द तथा स्वतन्त्र वातावरण मिला। इतने म मुकुल के जाते ही विभागीय कार्यालय मे सूचना पट पर प्रो० जोशी के विषय म सूचना देखने दीपा चली गयी। लौटकर उसने प्रो० जोशी के न आने के विषय मे बताया—अब क्या था? नीलिमा ने प्रवेश द्वार बन्द कर दिया और वह गुनगुनाने लगी।

"धीरे धीरे मचल ऐ दिले बेकरार कोई आता है"

सभी शान्त होकर तन्मयता से उसका गाना सुनती रही। गाने के समाप्त होने पर सहेलियो ने उसस एक गाना और सुनाने के लिय कहा तो उसने "न जाओ सयाँ छुड़ा के बहियाँ—' गान का सुनाया। गाने की समाप्ति पर विजया ने अच्छा सा मूड बनाकर नीलिमा को इङ्गित करके कहा— यार! क्या बात है? कहीं सौदेबाजी तो नही चल रही है? नीलिमा भी चुप न रहो उसन कहा—'वाह डियर! अच्छी भाषा समझती हो।" विजया को निरुत्तर होती हुई देखकर दीपा ने कहा—'अरे! इसमे छिपाने का क्या बात है, अगर हम कुछ जान भी गये तो ' आगे वह कुछ कहती, तभी नीलिमा ने कहा—'चुप, सबके सामने नही, अकेले मे तुझे सब बता देंगे' इस पर सभी सखियाँ हँसने लगी।

चारो कक्षा मे बैठी हुई इधर उधर की बातें करती रही। इन सबके बीच अलका लगभग शान्त ही रही। अलका विश्वविद्यालय के ही हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० नरेन्द्र की पुत्री है। बी० ए० पास करके उसने भी अपने प्रिय विषय प्राचीन इतिहास से एम० ए० करने

के लिये विश्वविद्यालय मे प्रवेश लिया है। स्वभाव मे मृदुता, वाणी मे मधुरिमा, प्रतिभा की प्रखरता, सस्कार की धरोहर के साथ अलका अपनी सौन्दयराशि के कारण सखियो मे कुछ अनकहा प्रभाव रखती है। सभी सखियाँ उसका हृदय से सम्मान करती हैं। विश्वविद्यालय मे अपनी सखियो के साथ वह बहुत ही मधुर व्यवहार करती है, गुरु जनो के प्रति अगाध श्रद्धा एव सम्मान उसके सहजात सस्कार हैं।

प्रो० जोशी के न आने की सूचना ज्ञात करके उसे समय नष्ट होने की चिता सता रही थी, किंतु नीलिमा के गानो को सुनकर उसका कुछ मनोरञ्जन ही हो गया। नीलिमा के गानो के बाद भी अभी अगली घण्टी लगने मे समय शेष था—अब दीपा ने बात की डोर अपने हाथ सम्हाली और उसने बताना शुरू किया कि कल मैंने फिल्म फेयर पढ़ी थी—उसमे सिम्पल की शादी को लेकर राजेश खन्ना बहुत ही असन्तुष्ट है—यह समाचार सविस्तार प्रकाशित है। विजया ने कहा—"पगली! तुझे तो दीन दुनियाँ की खबर है ही नही—अपना अलका की शादी तय हो गयी है तभी तो यह शान्त है विजया की इस बात पर एक साथ दीपा और नीलिमा ने पूँछा—"सच है, अलका?' अलका कुछ बोलती इसके पहले ही विजया ने बिल्कुल मूड बनाकर कहा—"झूठ बोले कौआ काटे " अब दीपा को मसाला मिल गया—वह अलका से कहने लगी—'मैं ही तुम्हारी दुश्मन हूँ, मिठाई मत खिलाती, किंतु मिठाई से भी मीठे इस समाचार को बता देती तो क्या तुम्हारी जगह मैं दूल्हन बन जाता!!" विजया बिल्कुल शान्त हो रही थी, क्योंकि वह कुछ बोलती तो चुहलबाजी का सब मजा किरकिरा हो जाता। अलका ने नीलिमा और दीपा से विजया की सूचना के विषय मे असहमति व्यक्त करना चाहा, किंतु इन दोनो को समझाये कौन? तब तक विजया की ओर मुखातिब होकर नीलिमा ने

पूछा—"अच्छा डार्लिंग ! यह तो बताओ हमारी राजकुमारी किस राजकुमार को अनुगृहीत करने जा रही हैं ?" विजया उत्तर क्या देती। घंटी बज रही थी, मुकुल दरवाजा खटखटा रहा था—जैसे दरवाजा खुला—विजया ने कहा—"हमारी राजकुमारी का यही है—राजकुमार ?"

सब हँसने लगी, तब तक जिनका पीरियड था। वे प्रो० साहब कक्षा में आते हुए दिखायी पड़े।

□

[२]

कक्षा मे प्रोफेसर साहब पढाते रहे, सभी छात्र छात्रायें व्याख्यान सुनने मे तन्मय थे। इतने मे ही विभागीय चपरासी सूचना लेकर आया—"जो छात्र छात्रायें कौशाम्बी भ्रमण पर चलना चाहें, वे प्रो० जोशी से व्यवस्था एव कार्यक्रम जानने के लिये सम्पर्क स्थापित करें।" वत्स वश के ललित नायक वीणावादक के अद्भुत जादूगर उदयन की राजधानी कौशाम्बी देखने कौन नही जाना चाहेगा? सभी छात्र-छात्राओ के हृदय म सूचना सुनकर सहज कौतूहल जागृत हो उठा। नीलिमा ने दीपा की ओर देखा, उसने अदा के साथ अपने भ्रूमण्डल को नर्तित करते हुये एक मधुर मुस्कान बिखेर दिया। लगभग यही स्थिति विजया और अलका की भी थी। छात्रो मे शरद ने मुकुल की ओर देखा उसने भी उसके हाथ पर धीरे से हाथ रखकर सहमति व्यक्त की। कक्षा के अन्य छात्रो की भी यही मन स्थिति थी।

प्रो० जोशी ने १३ जनवरी की तिथि निर्धारित की। वत्सराज उदयन की राजधानी कौशाम्बी इलाहाबाद के कतिपय ऐतिहासिक स्थलो मे से है। इतिहास विभाग का भ्रमणार्थीदल निर्धारित समय एव तिथि पर प्रो० जोशी के सरक्षण म कौशाम्बी भ्रमण के लिये सोल्लास चल पडा। जाने के लिये एक प्राइवेट-बस को पहले से रिजर्व करा लिया गया था। बस के चलते ही उत्साह उल्लास मे परिवर्तित हो गया। लगभग ४० लोगो की पार्टी कुछ समय बाद कौशाम्बी पहुँच गयी। कौशाम्बी उत्खनन मे कार्य करने वाले तथा तद्विषयक अध्ययन करने वाले पहले से ही वहाँ उपस्थित शोधछात्रो एव सहायको के दल ने विश्वविद्यालय के इस दल का स्वागत किया। मदभाण्ड, वास्तुशिल्प

मुद्राओं एवं कौशाम्बी के उत्खनन् से उपलब्ध वस्तुओं का अवलोकन करके लोगों ने हार्दिक संतोष प्राप्त किया ।

दीपा और नीलिमा अलका के साथ मनोयोग से एक एक वस्तु का प्रगाढ़ अनुवीक्षण करती रही । विजया कुछ अन्य छात्राओं के साथ भ्रमण का आनन्द लेती रही । मुकुल शरद्, तथा कतिपय दूसरे साथियों के साथ कौशाम्बी की वस्तुओं के पुरातात्विक महत्व पर विचार करता रहा । लन्च का समय हो जाने पर समवेत रूप से सभी छात्र छात्रायें आमने सामने पंक्तियों में बैठ गये । बैठने का सिलसिला कुछ इस प्रकार पड़ा कि दीपा के सामने शरद तथा अलका के सामने मुकुल बैठा । अचानक अलका की दृष्टि अपने सामने बैठे मुकुल पर पड़ी । उस सुदर्शन युवक के सौन्दर्य को वह धीरे धीरे अपने हृदयतल में उतारती रही । कभी उसकी और मुकुल की दृष्टि यदि मिल भी जाती तो भी वह चतुरता से अपने वीक्षण व्यापार को नियन्त्रित कर लेती । मुकुल अलका के इस हृदय-जलधि के उद्वेलन से अनभिज्ञ ही था । अलका को याद आने लगी । दीपा, विजया और नीलिमा की पिछले दिन की चुहलबाजी, जब अनायास ही केवल अलका को चिढ़ाने के लिये दरवाजा खटखटाते हुये मुकुल को लखकर विजया ने कह दिया था— "यही है हमारी राजकुमारी का राजकुमार ।।' उस दिन तो सब हँस पड़ी थी और अलका बिल्कुल शान्त, निस्पृह, निष्पुलक, निरुत्साह, निर्व्यापार एवं निष्प्रभाव ही बनी रही, किन्तु स्मृति पटल मौन छवि कार होता है वह एक एक बिम्ब को सँजोकर रखता है, और एक एक घटना की चित्रावली निर्मित कर लेता है । अलका के स्मृतिमन्दिर में सुसज्जित बहुवर्णी चित्रावली में न जाने कहाँ से मुकुल कब स्थान पा गया था—यह अलका को भी विदित नहीं हो सका । अतीत के बिना वर्तमान अबोध रहता है । अतीत की तरंगें मुकुल होकर वर्तमान को निनान्दित कर देती हैं । कुछ यही स्थिति अलका के साथ हुई । आज

अलका को विजया का वह वाक्य एक मदिर अनुभूति से पुलकित करने लगा था—वह "मुकुल अलका अलका मुकुल" की कल्पना करने के लिये विवश हो गयी। विवशता का प्रभाव कुछ इस प्रकार गम्भीर होता गया कि 'मुकुल और अलका' की कल्पना के अतिरिक्त वह कुछ सोचना ही नही चाहती थी। सभी लञ्च मे व्यस्त थे। अलका लञ्च उपयोग कर रही थी। लञ्च समाप्त हुआ। अब तो इस अप्रघटिता का जादू अलका को सम्मोहित कर चुका था। अलका का हृदय पट लोचन मग से मुकुल का अपने पास बुलाकर पलक कपाट को पिहित कर देना चाहता था। अलका शेष कार्यक्रमो मे कुछ इतना पुलकित हो गयी थी कि सखियाँ इसके नवोत्साह को देखकर अध्ययन का भूत समझ रही थी, किन्तु वे क्या जाने की कल्पना लोक म विचरण करने वाला यथार्थ के परिवेश से सुदूर अतिदूर अपनी मजिल बनता है। लगता है कि इतिहास प्रसिद्ध उदयन की घोषवती वीणा का त त्री निनाद अब भी कौशाम्बी के गगनपट पर व्यक्त होता है, क्योकि उदयन की वह वीणा विमोहिनी शक्ति से सवलित थी—आज भी प्रतीत होता है कि उसकी स्वर लहरी म "घूघट के पट खोल तोहि पिया मिलेगे" का अनुरजन अलका की हृदयतन्त्री को झकृत करने के लिये अनुगुञ्जित हो उठा है।

□

[३]

उसी दिन शाम तक भ्रमण्दल कौशाम्बी से वापस चल पड़ा। अलका के शैशव क्षणो का आकलन किया जाय तो यही विदित होता है कि वह शशव की परिधि को पारकर किशोरावस्था मे आ जाने पर मचलती ललचती नन्ही सी मुन्नी ही थी—अपने पिता प्रो० नरेन्द्र एवं माता प्रेमावती के लिए। उसकी जिद से माँ प्रेमावती ऊब जाती थी और पुलक मोद से असीम आह्लाद की स्रोतस्विनी मे अवगाहन करते थे—पिता प्रो० नरेन्द्र। अलका बस पर अपनी सखियो से बता रही थी—इतिहास के उस प्रणय पूर्ण अध्याय को, जिसमें वत्सराज उदयन एव वासवदत्ता की प्रणयम दाकिनी की अविरल रसनिष्यन्दिनी धारा प्रवाहित होकर अद्यावधि प्रणयि जनो की मदिर अनुभूतियो को प्रेरणा सम्भार प्रदान करती है।

उत्साह मानव हृदय के सहजोल्लास से आविर्भूत होता है, अलका का उदयन विवेचन कुछ इसी उत्साह का अभिद्योतक था—वह बता रही थी कि उज्जयिनी नरेश महाराज प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता से उदयन का परिचय कारागार की दुदम परिखावलय क भीतर वीणा प्रशिक्षण के मध्य होता है। वत्सराज उदयन के महामात्य यौगन्धरायण की योजना स उत्प्रेरित होकर उज्जयिनी की राजकुमारी वासवदत्ता को अपने साथ लेकर कारागर से पलायन करने मे उदयन सफल होते हैं, कितना प्रणय का प्रेरणादायी इतिहास है—यह अतीत का अध्याय॥

× × ×

अलका के शान्त हो जाने पर सभी सखियाँ उदयन की इस इतिहास गाथा से आह्लादित होती हैं, किन्तु विजया शान्त न रह सकी,

उसने चुटकी लेने के अवसर को नही गँवाया, अलका से उसने तुरन्त कहा—क्या बात है डालिंग ? कहीं कौशाम्बी से तुम भी तो यही प्रेरणा प्राप्त करके नही चल रही हो ?" अलका दूसरा दिन होता तो शायद अनसुनी कर देती, किन्तु आज उसमे असीम उल्लास भरा है, उसने कहा—"जब योजना पर निश्चय कर लेगे तो कार्यान्वयन मे तुझ से जरूर परामश करेंगे।" अलका की बात से झेंप खाकर विजया चुप हो गयी, किन्तु दीपा ने कहा—"अलका डियर ! उड़ान भरते समय पाइलट मुझे बनाना।" सभी एक साथ हँस पड़ी—अलका भी अपनी मुसकान को निरुद्ध न कर सकी।

बस जैसे जैसे अग्रसर होती जा रही थी—अलका के मन की व्यग्रता बढ़ती जा रही थी। बस मे यद्यपि मुकुल अलका से दूर बैठा था, फिर भी अलका को सदैव उसके सान्निध्य की अनुभूति हो रही थी। काल्पनिक अनुभूतियो की तरङ्गिणी मे अवगाहन करने वाले को जो आनन्द प्राप्त होता है, वह अनुभूतिया के साक्षात् प्रस्तुत हो जाने पर भी नही मिलता। ध्यानमग्न योगी की चित्तसमाधि और कल्पना लोक की सुहानी छटा मे तन्मय मन मे अन्तर नही होता। चित्तसमाधि सप्रयास होती है, किन्तु काल्पनिकता के प्रति मन सहज आकर्षित होकर यथार्थ के परिवेश से अपने को उन्मुक्त कर लेता है। अलका को खीझ हो रही थी कि बस जैसे इलाहाबाद पहुँचेगी, उसी क्षण मुकुल के सान्निध्य से तत्काल वञ्चित होना पड़ेगा। लेकिन बस की गति को मन्द करना उसके अधिकार मे नही था। बस इलाहाबाद पहुँच गयी। सभी भ्रमणार्थी अपना अपना सामान लेकर उतर पड़े। अलका का वह पुलक-रोमाञ्च उत्साह शून्य होने लगा जिसका अंकुरण कौशाम्बी मे ही हो चुका था। बासन्ती समीर अनजाने आकर हृदय कलिका को विकसित करके मधुमकरन्द से भर गया था, किन्तु बेचारी कलिका अब उस भ्रमर

की प्रतीक्षा मे उत्कण्ठिता है, जो आकर उसके मकरन्दबिन्दु का पान करके उसके विकास को सार्थक कर सके।

विजया, दीपा, नीलिमा की हृडबड़ी अलका को अपने अन्तर्गोपन मे सहायता देती रही। अन्यथा चुहलबाजो की सरदार विजया आदि जरूर ही इस अनन्य मानसिकता पर कटाक्ष करती। सभी कौशाम्बी भ्रमण के मादक अनुभव को सजोये अपने वास स्थान को ओर चल पड़े।

□

[४]

अलका घर आकर अपने प्रकोष्ठ मे पहुँचकर पलग पर लेट गयी । उसे कौशाम्बी भ्रमण के अनेक दृश्य याद आते रहे । सुषुप्ति म निमीलित नयनपट पर दृश्यावली का आवलन होता रहा और अलका का मन लञ्च वाले दृश्य पर स्थिर हो गया । उसे अपनी वह स्थिति याद आयी, जब अवलोकन करते समय वह मुकुल द्वारा अवलोकित कर ली गयी थी और पलाश कोरक की भाँति उसका मुखमण्डल रक्ताभ हो गया था ।

मृदुल दृश्यावली की रश्मियाँ उद्भासित होने लगी और अलका देखती है कि कौशाम्बी का खण्डहर एक विशाल भव्य, राजमंदिर मे परिवर्तित हो गया है । प्रो० नरेद्र ही उस राजमंदिर के स्वामी हैं, और अलका अपने पापा के इस महल म सोल्लास भ्रमण कर रही है । भ्रमण करते समय वह विशाल गृहवादी की तटी पर पहुँच जाती है और उस वादा की छटा देखकर उसका मनमयूर नाच उठता है । अरविंद प्रसून विलसित हो रहे हैं, राजहसा का युग्म मादकगति स सलिल सतह पर सतरण कर रहा है, वादी के तटा पर पुष्पनिकुञ्जो की सौ दय—छटा मनोहारिणी हो रही थी, मादक सुगधि अलका के मन मे खुमार भरने लगी थी तट पर भ्रमण करती अलका थोडा आगे की ओर जाकर वादी के कोने पर सपुलक बैठे हुए मुकुल को देखती है । मुकुल तट पर ही एक विकसित कमल पुष्प से क्रीडा करता हुआ अत्यधिक आह्लादित अवलोकित हो रहा था । अलका के हृदय का उत्कम्प द्विगुणित हो गया और वह अपने को निरुद्ध न कर सकी और कहा— "स्वागत है आपका इस परिवेश मे" इतने मे ही अलका की नीद

टूट जाती है—न तो कौशाम्बी दीखती है, न वादी तट और न मुकुल ही ।

किसी कवि ने कहा है कि शयन और स्वप्न मे जीवन सौन्दर्य लगता है, जागने पर जीवन कर्त्तव्य प्रतीत होता है । अलका के सामने भी अब कर्तव्य का आह्वान था । उसे सदा की भाँति अध्ययन क्षेत्र मे अभीष्ट सफलता प्राप्त ही करना है । विश्राम को विराम लगाकर वह उठती है, मम्मी से कुछ देर वार्तालाप करने के बाद पुन अपने कक्ष मे आकर अध्ययन मे ही तन्मय हो जाना चाहती है । पुस्तकें उलटते हुए उसे एक एक भास का "प्रतिज्ञा यौग धरायणम्" अवलोकित हो जाता है । कौशाम्बी के भग्न राजमन्दिर मे उल्लसित प्रणयपुष्प की रसभीनी सुगन्ध उसे बरबस आकृष्ट कर लेती है । अलका 'प्रतिज्ञा यौगन्धरायणम्' पढने लगती है । उदयन की प्रणयानुभूति को प्राप्त करने वाली वासवदत्ता के विषय मे अलका सोचती है कि वह कितनी धन्य थी, जिसे अपने प्रणय सहचर का अभीष्ट सहयोग मिला । मानव अलौकिक काम्य व्यापार को भी यथार्थ समझ लेता है, यदि उसके मनोमुकुर से वर्ण्यवस्तु सवाङ्ग स्थापित कर लेती है । इस मन स्थिति से आकृष्ट अलका मुकुल के ही विषय मे सोचने लगती है । उसे प्रवेश का प्रथम दिन याद आता है, जब दोनो ही अन्य सहपाठियो के साथ कक्षा म प्रविष्ट होते हैं । मुकुल को तो प्राय सभी प्रो० जानते थे, फिर भी औपचारिकतावश परिचय होता रहा । आज अलका चाहती है कि वह दिन पुन वापस आ जाय, और प्रो० जैसे ही मुकुल से औपचारिक परिचय पूँछे उसी समय स्वय अतिरिक्त प्रश्न करके विस्तृत विवरण के साथ वह मुकुल का परिचय ज्ञात कर ले, किन्तु जीवन यात्रा के प्रसङ्ग मे पार किये गये समयरूपी किलोमीटर पर पुन प्रत्यावर्तित होना असम्भव है, अत अलका भी इतना ही याद कर सकी कि मुकुल का परिचय प्राप्त करते समय सभी प्राध्यापक परिचित से थे । आश्चर्य

तो जरूर हो रहा था किन्तु अन्तत प्रो० जोशी से विदित ही हो गया था कि मुकुल प्रतिभापूर्ण छात्र है साथ ही अतिविनम्र तथा व्यवहारनिपुण भी। इसके अतिरिक्त न तो वह कुछ सुन ही सकी थी और न ज्ञात ही कर सकी थी। समय काफी व्यतीत हो चुका था अलका अब सो जाना चाहती थी, तभी उसकी माँ आ गयी और कौशाम्बी के विषय में अलका अपनी माँ से बातें करती रही।

□

[५]

विद्वत्परिषद् की सभा समाप्त हुई। सभाकक्ष से बाहर प्रो० जोशी को प्रो० नरेन्द्र मिल जाते हैं। प्रो० जोशी और प्रो० नरेन्द्र यद्यपि पृथक् पृथक् विभागो म हैं, किन्तु आपस म प्रगाढ मैत्री है। एक-दूसरे का बहुत ही सम्मान करते हैं। प्रो० जोशी और प्रो० नरेन्द्र सीढ़ियो से उतर कर पोच मे आ जाते हैं। प्रो० जोशी को विदित है कि नरेन्द्र की गाडी आजकल रिपयर मे है, अत जोशी ने साग्रह अनुरोध किया कि नरेन्द्र साहब आइय चलें। ड्राइविंग सीट पर प्रो० जोशी स्वय बैठ जात हैं और आग की बगल की सीट पर प्रो० नरेन्द्र। विश्वविद्यालय की विद्वत्परिषद् की कायवाहियो का दोनो ही पास्टमाटम करने लग जाते हैं।

प्रो० जोशी रहते हैं दरियाबाद के पास और प्रो० नरेन्द्र का बँगला कल्याणी देवी पाक के बिल्कुल समीप है। जोशी साहब कार ड्राइविंग बडी ही आइडियल-स्पीड स करते हैं, साथ ही साथ भीडभाड से बचकर ही चलना चाहते हैं। अत उन्होन मेडिकल कालेज के रास्ते स रामबाग होत हुए इविंग क्रिश्चियन कालेज के सामने स दरियाबाद क लिए प्रस्थान किया। अपने बँगले के पास पहुँचकर जाशी जी न प्रो० नरेन्द्र से कहा— 'आइये नरेन्द्र साहब एक प्याली चाय हो जाय तो फिर आपको छाड आऊँ। प्रो० नरेन्द्र जानते थे कि आग्रह को टालने के लिए प्रयास करना व्यथ हागा, इसलिए उन्हाने कहा—"ठीक है भाई जैसा कहा। इस तरह बात करते हुए दोनों ही ड्राइग रूम मे पहुँच जाते हैं।

एक सोफे का ओर इशारा करते हुए प्रो० जोशी नरेन्द्र से बैठो

'का अनुरोध करने हैं तथा अपने सर्वेण्ट को बुलाकर चाय लाने के लिए आदेश देते हैं। इतने मे ही प्रो० जोशी की पत्नी आ जाती हैं और वे प्रो० नरेन्द्र को नमस्कार कहकर बैठ जाती हैं। प्रो० जोशी के द्वारा आने वाले के विषय में पूछे जाने पर मिसज जोशी ने स्टडीरूम म व्यस्त मुकुल के विषय म बताया। इतने मे ही सर्वेण्ट चाय लेकर आ गया। प्रो० जोशी उसे स्टडीरूम से मुकुल को बुलाने का आदेश देते हैं। कुछ क्षण बाद ही मुकुल भी ड्राइंगरूम मे विनम्रभाव से आ जाता है और प्रो० जोशी उसका परिचय प्रो० नरेन्द्र स कराते हुए कहते हैं कि "प्रो० साहब ! यह मुकुल मेरा प्रिय छात्र है। प्रतिभा का धनी तो है ही। विनम्रता तो इसके प्रत्येक कार्य मे अवलोकित होती है। यह कानपुर के एक सम्भ्रान्त एव सम्पन्न परिवार को सन्तान है। सम्प्रति एम० ए० प्रथम वर्ष प्राचीन इतिहास का छात्र है या यह समझिए आप की पुत्री अलका का सहपाठी है। प्रो० नरेन्द्र का परिचय मुकुल से देना प्रो० जोशी ने अनावश्यक ही समझा, क्योंकि प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रो० का औपचारिक परिचय देना उसकी बेइज्जती करना है। इस विश्वविद्यालय के प्रो० की अगाध ज्ञानराशि स्वय उनका विस्तृत परिचय दिग्दिगन्त मे पहुँचा देती है। अत प्रो० नरेन्द्र का परिचय जोशी ने नही ही दिया।

मुकुल अलका को तो जानता ही था और प्रो० नरेन्द्र को तो मुकुल ही क्या सम्पूर्ण साहित्य ससार ही जानता था क्योंकि "रस मे अनौचित्य की भूमिका" की व्याख्या प्रो० नरेन्द्र को समालोचना के क्षेत्र मे एक अद्भुत सम्मान दिला चुकी थी—अत प्रो० नरेन्द्र विश्वविद्यालय मे मौलिक शोधकर्त्ताओं में अग्रसर थे। इतना प्रो० नरेन्द्र के विषय मे जानने पर भी मुकुल यह नही जानता था कि अलका के पिता प्रो० नरेन्द्र हा हैं। यह तो उसे अभी अभी प्रो० जोशी द्वारा विदित हुआ था।

प्रो० नरेन्द्र मुकुल का परिचय प्राप्त करके उसे काफी देर तक देखते रहे, फिर उन्होंने स्वयं ही कहा—"मुकुल! तुमसे मिलकर मुझे अतीव प्रसन्नता हुई है, फिर इसके बाद प्रो० नरेन्द्र ने इतिहास विषय से सम्बन्धित एकाध प्रश्न मुकुल से पूछा। मुकुल ने प्रो० नरेन्द्र के सभी प्रश्नों का उत्तर शालीनता एवं विनम्रता से प्रदान किया। वाणी की मधुरिमा निखिल जगत् का वशवद कर लेती है, कुछ यही स्थिति मुकुल के साथ बात करते समय प्रो० नरेन्द्र की हो गयी। आलोचना जगत् का विख्यात विद्वान् मुकुल से अत्यन्त प्रभावित हुआ। काफी देर तक प्रो० नरेन्द्र मुकुल से ही बातें करते रहे। उन्हें प्रो० जोशी एवं मिसेज जोशी की उपस्थिति का ध्यान ही नहीं रहा। अचानक उनकी दृष्टि अपनी कलाई में बंधी घड़ी पर गयी तो वे चौंक गये और सहसा प्रो० जोशी की ओर देखा। प्रो० जोशी तुरन्त प्रो० नरेन्द्र को छोड़ने के लिए तैयार होने लगे। मिसेज जोशी से अभिवादन करके बाहर निकले तो मुकुल ने अतिविनीत भाव से प्रो० नरेन्द्र को विनम्र प्रणाम किया।

रास्ते में पुनः प्रो० जोशी एवं प्रो० नरेन्द्र की बातें होती रहीं। प्रो० नरेन्द्र मुकुल से अत्यन्त प्रभावित थे। सरस्वती के कृपापात्र के लिए किसी को परिचित नहीं कराना पड़ता—वह अपने वाग्वैदग्ध्य की शक्ति से सर्वत्र सम्मान प्राप्त कर लेता है। मुकुल के विषय में सोचते एवं बातें करते हुए प्रो० जोशी ने प्रो० नरेन्द्र के बंगले के पास गाड़ी खड़ी कर दिया। प्रो० नरेन्द्र ने प्रो० जोशी से भी उतरने का आग्रह किया। किन्तु प्रो० जोशी फिर किसी दिन हेतु निवेदन करके अपनी कार को बैक करने लगे। प्रो० नरेन्द्र ने ज्यों ही जोशी जी से हाथ मिलाया—घर्राती हुई गाड़ी स्टार्ट होकर चल पड़ी।

□

[६]

१३ जनवरी के कार्यक्रम का अलका के हृदय पर प्रभूत प्रभाव पड़ा। अलका ने अपनी भावनाओं को उकेरने का प्रयास करना चाहा—किन्तु तूलिका से नहीं लेखिनी से। मदिर अनुभूतियों की स्मृति सिहरन सी भर जाती है, सहसा पुलकित सा कर जाती हैं, कल्पना पटल पर मनचाहा दृश्य भी कदाचित् अङ्कित कर जाती है। स्मृतियों की मकरन्दपूर्ण कलिकाओं का रसबिन्दु जमी छलक उठता है, तभी मधुरता का वह अलौकिक उत्स प्रवाहित होता है, जिसे अँजलिपुट से भी पान करने वाला सुहानी सन्तृप्ति अनुभव करता है। स्मृतिलोक इस धरित्री के आक्रोड में विलसित बासन्तीवैभव से मादक सुरभि प्राप्त करता है, ग्रीष्म से उष्णता प्राप्त करता है रतनारे कारे कजरारे जलद मण्डल से रसधारा प्राप्त करता है—इन उपादानों से परिपूर्ण होकर वह धरापटल के वैभव का धरामण्डल पर त्यागकर सीमातीत नभोमण्डल की उच्चता पर उड़ान भरने लगता है उस धरित्री पर आना है या नहीं—कोई चिन्ता नहीं रहती है।

नन्दनवन के पुष्पनिकुञ्ज, माधवीविभूति से सवलित पादप वीथियां प्रासादों की प्रियछटा सब कुछ स्मृतिलोक की कमनीयता से बहुत पीछे छूट जाते हैं। अलका चाह रही थी कि स्मृति के इस असीम वैभव को ऐसे मजबूत लाकर में बन्द कर लें, जहाँ से न तो कोई इसे अपहृत कर सके और न स्वयं यह गायब हो सके।

वह अपनी लेखिनी लेकर सनद्धभाव से लिखने बैठ जाती है—और जो भी समझ में आता है, लिखती जाती है। लिखने का विषय भी उसका अजीब है, शीर्षक देखकर तो मन कौतूहल से तो कम परि

ह्रास से अधिक मुक्त होना चाहेगा। उसके लेख विषय का शीर्षक था—"कौशाम्बी का आकाश।" अलका की इस भावप्रस्तुति में नक्षत्रलोक का उद्भास कुन्दपुष्प के सदृश विलास उपन्यस्त कर रहा है। वह लिखती है कि कौशाम्बी का खंडहर तथा इसके उत्खनन् से उपलब्ध सामग्री सम्भार ने इतिहास के अधीतियों को अत्यधिक प्रेरित किया है और अब भी प्रेरित करेंगे, किन्तु मैं इतिहास की छात्रा हूँ और विषय के प्रति मेरी सहज अभिरुचि भी है, किन्तु न जाने क्यों? कौशाम्बी के उत्खनन् से प्राप्त सम्पूर्ण सामग्री मेरे लिए जुगुप्सा का उद्दीपन बनती जाती है। मैंने सुना था कि इस कौशाम्बी नगरी का अधीश्वर उदयन था, मुझे लगता है कि उदयन के विषय मे लिखित इतिहास इतिहासकारों की बेईमानी से भरा है, क्योंकि उदयन इस नगरी का शासक नहीं था—उदयन तो साधक था—कला का, आराधक था—सरस्वती का और शासक था—मंदिर अनुभूतियों से उत्फुल्ल हृदयलोक का। इस नगरी का शासक था—योग धरायण। वह केवल शासन करता था। शासन के लिए साम, दाम दण्ड और भेद अत्यन्त आवश्यक हैं। सबसे घृणित—'भेद'—उपाय है। शासन की रीढ़ है। उदयन ने क्या कभी इन उपायों का पालन किया है, कभी नहीं। उदयन इस नगरी का था—ललित कलाकार। कला के प्रति उसकी अभिरुचि नहीं 'आसक्ति' थी। स्वभाव मे शासक हृदय की दृढ़ता नहीं कलाकार की मृदुता थी, दैनिक जीवन म शासक की उत्तेजना, व्यग्रता उद्विग्नता एव परेशानियाँ नहीं, बल्कि अबोध कलाकार की निश्चिन्तता थी, अत उदयन के प्रति लिखा गया इतिहास झूठा है।

मृद्भाण्ड, मुद्रायें राजमहलों के अवशेष एव अन्य वस्तुयें उदयन की कला के प्रतीक नहीं हैं। उदयन की कला को प्राप्त करने के लिए खण्डहरों का उत्खनन् व्यर्थ है। उदयन की कला की अनुगूंज अनुरंजित हो रही है कौशाम्बी के नभपटल मे। 'कौशाम्बी का आकाश" उस

वीणा की मधुर झकृति को सँजोये है, जो उदयन की कला का जागृत स्वरूप थी। कौशाम्बी के आकाश मे सम्भवतः आज नक्षत्र मालिका अपने स्वर्गीय सङ्गीत को प्रस्तुत करती है, जिसे उसने उदयन से सीखा था। उदयन एव वासवदत्ता के मृदुल और रसचाटुल दृश्य नक्षत्रो मे अवलोकित किये जा सकते हैं, अत आवश्यक है कि कौशाम्बी के खण्डहरा का उत्खनन् बन्द करके कौशाम्बी के आकाश का अध्ययन किया जाय, किन्तु अभी ऐसी वैज्ञानिक प्रगति नही हुई है कि हम धरित्री का सामग्रिया के सदृश आकाश का ठोस एव यथार्थ अध्ययन कर सकें—इसलिए हमे उस युग तक की प्रतीक्षा करनी पडेगी, जब तक हम आकाश के सभी रहस्या का जानने की क्षमता प्राप्त कर सकें।

उदयन का नाम हटाकर मृद्भाण्ड एव वास्तुशिल्प की दृष्टि से कौशाम्बी का अध्ययन किया जा सकता है, कि तु इन सबमे उदयन की नही यौग धरायण की आत्मा विद्यमान् है। यौग धरायण के शासन तन्त्र के अध्ययन की दृष्टि से कौशाम्बी का उत्खनन् उपयोगी हो सकता है, किन्तु उदयन—वासवदत्ता की दृष्टि से यह उत्खनन् व्यर्थ है। प्रणयानुभूतिया की कहानी खण्डहरा मे जीवित नही रहती है, वहाँ उसकी कब्र रहती है। कहानी तो जनजीवन की वाणी मे रहती है—इस उद्देश्य से कौशाम्बी के आकाश मे स तरण करने वाली किंवदन्तियो, कहानिया, लाककथाओ, जनश्रुतियो, एव जनभावनाआ की अनुगूज को पकडना होगा। अत आकाश की ओर देखना प्रेरणा प्राप्त करना और खण्डहर खादना कब्र खोदना होगा।

अलका ने कुछ इसी प्रकार से उदयन के विषय मे अपनी अनुभूतियो को व्यवस्थित करके अपने लेख मे उतारा, किन्तु इस विचार की पृष्ठभूमि मे तथ्य क्या है? सभा जान सकते हैं कि अलका की अपनी

हृदयवाटिका की कल्पना लता का यह आतान वितान है, जो "कौशाम्बी का आकाश" के रूप में मुखरित होता है। विकसित पुष्पवीथियों की सुरभि और मकरन्द ही रसव्यापी मिलिन्द के मानस में मधुरगुजन की सृष्टि करत हैं। कौशाम्बी के आकाश की अनुरजिति ने ही अलका की कल्पना भ्रमरी को गुनगुनाने के लिए प्रेरित किया है।

□

सब कल्पनाओ मे डूबते-उतराते मुकुल को डॉ० जोशी क बंगले पर परिचय प्राप्त किये हुये प्रो० नरेन्द्र की याद आ जाती है और उसका परिचय कराते समय उसी के विषय मे प्रो० नरेन्द्र से कहा गया। प्रो० जोशी का कथन "या यह समझिये कि आपकी पुत्री अलका का सहपाठी है" मानसपट के उद्घाटित होते ही उसकी स्मृति व थिका मे छलांगें लगाने लगता है। प्रो० नरेन्द्र—उनकी पुत्री अलका, अलका उसके पिता प्रो० नरेन्द्र, प्रो० नरेन्द्र मुकुल के पूज्य गुरु प्रो० जोशी के मित्र, अलका उसकी सहाध्यायिनी, एम० ए० की कक्षा सहपाठियो क बीच म बठी निशाकर का प्रतीक्षा म मौन निर्वाक् कुमुदिनी सी अलका, कितनी ही बातें उसे याद आती जा रही थी अलका, विजया, दीपा और नीलिम, के बीच सदैव रहती है। विजया, दीपा और नीलिमा कक्षा का मुखर छात्रायें हैं, किन्तु इन सबकी दोस्त अलका शारदी निमलता स सवलित सरिता सी शा त, गगनपथ मे आह्लादित चन्द्रिका सी सरस, शवरी म शबनम स विभूषित दूर्वादल सी निरलस, परिपूण रसकलश सी गम्भीर, सरोवर सलिल पर स तरित कमलिनी सी विलसित, मयूरनृत्य का अवलोकित करती हुई मयूरी सी मुग्ध, सर्वस्व श्रवणपुट से पान करती हुई सारिका सी तन्मय, बास ती समीर की सुरभि सी मनमोहक और शिशिर समीर सी सिहरनमयी है। अलका के विषय म सोचता हुआ मुकुल अपने को ही भूल गया। कहाँ तो कुछ खोया खोया सा था—वह व्यग्र था कि क्या करू ? क्या न करू ? और अब उसे महसूस होने लगा था कि वह सोच रहा है—अलका के विषय मे।

अलका—न तो नीरवता है और न क्रन्दन, वह तो प्रगीत होती है—हृदय को अभिनन्दन सी। अलका क्या प्रो० नरेन्द्र की पुत्री है ? कदापि नहीं, वह मेरी सहपाठिनी है। अलका की सहेलियाँ छात्रावास

हैं तो वह है मन्द पवन का मृदुल अभिसार, सहेलियाँ पूर्ण विकसित पुष्प की पँखुडियो की आभा समेटे हैं तो अलका सरसिज की सद्यो विलसित कली की उदर पटल की आभा से युक्त है।

कभी कभी अनायास ही खिडकी का बन्द दरवाजा निष्प्रयास उद्घाटित हो जाता है और पवन प्रवाह आकर प्रकाष्ठ की सामग्री के साथ क्रीडारत हो जाता है। मुकुल के हृदय का द्वार कब और कैसे खुल गया ? क्या समीर की मन्थरगति अलमस्ती भर गयी है ? क्या किसी ने हृदयद्वार खोलने के लिए आह्वान घण्टिका की गुटिका पर सहसा अपनी अञ्जुलि रख दी है ? अथवा किसी के आमन्त्रण की मधुरध्वनि की अनुगूंज सुन पडी है ?

मुकुल अपनी इस मन स्थिति मे व्यस्त होकर सतत् अनुचिन्तन कर रहा है। वह अपने प्रवेश के दिन से लेकर आज तक अलका क्या किसी भी सहपाठिनी के विषय मे कभी भी नही सोच पाया था। प्रो० जोशी के कथन मे न जाने क्या रस घुला था कि मदिर-अनुभूतियो की सृष्टि हो गयी। मुकुल जितना ही और जिस कोण से अलका के विषय मे सोचता है उतना ही उसके हृदय जलधि का उद्वलन बढता जाता है।

मधुर छुवन और मीठी चितवन किसी को प्रखर ज्वर से झुलसाने के लिए पूर्ण समर्थ होता है। यदि मानव को हृदयहीन किया जा सकता तो उसकी निश्चित रूप से अस्सी प्रतिशत समस्याओ का निष्प्रयास ही समाधान हो जाता है। किन्तु समस्या है मानव के हृदय को सुरक्षित संरक्षित रखने की। मानव मस्तिष्क बडा ही चतुर है, किन्तु मानव हृदय बडा ही सरल है। हृदय पर रेखाङ्कन जितना आसान है मस्तिष्क का अनुकूलन उतना ही कठिन। मुकुल के हृदय पर अलका का छवि-रेखा तो कौशाम्बी महोत्सव के समय अङ्कित हो चुकी थी, किन्तु

चित्र का निगेटिव धुलकर सुहाना चित्र प्रस्तुत कर सका प्रो० जोशी के कथन से ।

मुकुल अलका के विषय मे जितना ही सोचता है, उतना ही प्रणय-पराग अपनी सुरभि से उसे विह्वल करने लगा था । अलका को अगर वह कलिका का म दविलास समझता है, तो अपने को उस कलिका के रस का लोभी मिलिन्द समझता है ।

अपने हृदय मे चित्रित अलका की छवि को देखता है और धीरे-धीरे उस कौशाम्बी मे अपने सामने बैठी हुई अलका का रूप याद आ जाता है । उत्फुल्ल नयनदल से अलका मुकुल को अवलोकित कर रही थी और मुकुल अलका की इस चेष्टा से अनभिज्ञ था, कि तु अलका का प्रणय विलोकन मुकुल से छिपा न रहा । मुकुल से दृष्टि मिलते ही अलका ने बडी निपुणता से अपन उत्कम्प पर निय त्रण किया, पुलक को छिपाया और सहसा अपने नयन को निमीलित किया, कि तु उसके मुख पटल पर रक्तिमा और स्वेदकण प्रकट ही हो गये । उस समय तो मुकुल कुछ भी नही समझ सका, कि तु आज वह साचते समय अलका की इस स्थिति पर विचार करने लगा । मुकुल के हृदय की धडकन उससे बता रही है कि तू अलका के विषय मे आज सोच रहा है और अलका तो घायल हिरनी सी तुम्हारे विषय म व्यग्र है ।

चि तातुर हृदय पर मन का विश्वास नही होता, फिर भी मन कुछ सोचने के लिए बाध्य हो ही जाता है । मुकुल बार बार अलका के विषय मे सोचता है, कि तु अनिश्चय ही उसके मन पर अपना प्रभाव स्थापित किये रहता है । प्रणय का प्रारम्भ शङ्का से होता है निश्चय कौतूहल से होता है, शक्ति व्यग्रता से मिलती है, और परिपुष्टि मन्दिर अनुभूतियों से होती है । आज समवेत रूप से मुकुल मे इन सभी दशा-

दाना का अनुकरण हो चुका है। वह अधीर हो उठा है अलका की एक छवि की निराली छटा का अवलोकन करने के लिए।

अपनी इस मनोदशा मे डूबे हुए मुकुल को उबरने का सहारा मिला शरद् के आ जाने से। मुकुल का दास्त शरद इसी समय आ जाता है और समय कायक्रम की योजना को याद दिलाता है।

□

कौशाम्बी से लौटने के पश्चात् विभाग की अध्ययन गोष्ठी क समक्ष औपचारिक रूप से अपनी प्रभावरेखा को प्रस्तुत करना था। विभाग के सभी छात्र एव गुरुजन उपस्थित थे। प्रो० जोशी ने भ्रमण के प्रारम्भिक विवरण के साथ व्यवस्था सम्ब धी बातो का उल्लेख करते हुए सभी के सहयोग एव अभिरुचि के प्रति अपना हार्दिक धन्यवाद दिया। भ्रमण दल के अ य सदस्यो से कौशाम्बी के विषय मे विचार व्यक्त करने का आग्रह किया गया। अलका चाहती तो थी कि वह अपनी विचारमालिका को प्रस्तुत करे, कि तु वह सोचती ही रही—साहस न कर सकी।

छात्राओ मे से विजया ने अपने विचार व्यक्त किये। उसका विचार था कि भारत ही नही विश्व के समस्त इतिहासवेत्ता भारतीय इतिहास के इस स्वर्णिम अध्ययन से परिचित हैं, कि तु उनका परिचय या तो कल्पना पर आधारित है अथवा जनश्रुतियो पर, प्रत्यक्ष परिचय अधिकाश इतिहासकारो का नही है। कौशाम्बी उत्खनम् का अवलोकन करके हम उदयन से, उसकी ललितनगरी से उसकी कला से एव उस समूचे परिवेश से साक्षात् परिचय प्राप्त करते हैं, जो इतिहास के प नो पर अतुल कि तु अपूर्ण है।

विजया के पश्चात् मुकुल अपने विचार व्यक्त करने क लिए अग्रसर हुआ। मुकुल ने अपने अवलोकन को चित्रित करते हुए इतिहास एव जनश्रुतियो के उस अनदेखे बि दु की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट करना चाहा—जो कौशाम्बी को अमर कर गया।

उसका विचार था कि जो जीवन म निर्भय होकर अपने लक्ष्य पर अग्रसर होता जाता है, आलोचना—प्रत्यालोचना—की मान-अवमान की

और व रना—अतिभर्त्सना की चिन्ता नही करता—वह इतिहास जगत् का देवदूत होता है । उदयन की प्रसिद्धि का कारण—मानते तो हैं इतिहासकार कौशाम्बी की, उसकी घोषवती वीणा का या फिर यौग धरायण की श्रेष्ठ नीति को, किन्तु कौशाम्बी को अमर करने वाली ये एक भी बातें नही है ।

वह विचार व्यक्त कर रहा था, गोष्ठी के सभी सदस्य स्तब्ध थे कि फिर कौशाम्बी की प्रसिद्धि का कारण क्या था ? स्तब्धता एव कौतूहल के मध्य मुकुल ने पुनः बोलना प्रारम्भ किया । उसने विचार-शृ खला मे एक लडी पिरोई और कहा कि उदयन का "प्रणयोत्सग" ही कौशाम्बी को अमर कर सका । एक ललित कलाकार अपनी मृदुल भावनाओ को रागिनी एव तन्त्री के माध्यम से जन जन की कर्ण लहरिका मे उतरगित करता रहा, तब तक वह सम्मान प्राप्त करता रहा, कि तु स्मरण कीजिए उदयन की उस दशा को जब वह उज्जयिनी-नरेश के आग्रह पर उनके राजमन्दिर मे पहुँचता है, और उनकी पुत्री वासवदत्ता को वीणा त त्री की मधुर झकृति का अभ्यास कराने लगता है । यहाँ तक तो उदयन उज्जयिनी का सम्मानित अतिथि था, कि तु उज्जयिनी के कारागृह मे क्या डाला गया ? उदयन का क्या दोष था ? घटना बडी ही साधारण तथा दूरगामी थी । विश्वविश्रुत घोषवती वीणा के ललित कलाकार से वीणा की शिक्षा प्राप्त करने वाली उज्जयिनी की राजकुमारी यदि उसके प्रति अपने सुकुमार स्वप्नो का सृजन करने लगी थी तो उसका भी कोई दोष नही था, किन्तु मिथ्या सामाजिक प्रतिष्ठा एव आत्मदम्भ से परिपूर्ण उज्जयिनी-नरेश महासेन प्रद्योत इस सम्बन्ध को सह नही सके, अन्तत कारागृह के परिखावलय मे कलाकार उदयन को प्रक्षिप्त करके उन्होने सोचा कि वासवदत्ता के प्रणयांकुर शुष्क हो जायेंगे—उदयन सन्त्रास की विभीषिका से आक्रान्त होकर वासवदत्ता क्या अपने को ही

घुल जायगा, किन्तु वासवदत्ता और उदयन का प्रणय इतिहास बन गया, विषद ही घर गया और जन जन के कण्ठारविन्द का मधुर सौरभ बन गया। प्रद्योत को स्वतः इस आकस्मिक प्रणय की स्वीकृति देकर परिणय बन्धन का कार्यक्रम बनाना पड़ा।

सघननिशीथ में उद्भासित यही ज्योतिरश्मि है, जो अद्यावधि कौशाम्बी को इतिहास पटल पर गौरव प्रदान कराती है।

मुकुल के इस विचार का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। अध्यापक समुदाय ने उसकी इस विचारमालिका में प्रतिभा का स्फीत अंकुरण अनुभव किया, सहपाठी छात्रों ने पुनीत नवल विचार प्राप्त किया, छात्राओं के मन ने उसके इन विचार बिन्दु में कुछ अन्य तथ्य ही अवलोकित किया और अलका के हृदय में मुकुल की इस विचाराभिव्यक्ति का प्रभाव प्रणय मन्त्र सा लगा। वह सोचने लगी कि मेरे ऊपर कौशाम्बी का जो प्रभाव है, वही मुकुल के ऊपर भी है प्रणय मन्दाकिनी की जिस जलधारा के अभिषेक से मुकुल अभिषिञ्चित हुआ है उसमें मैं पहले ही अवगाहन कर चुकी हूँ। वह सोचती है कि मुकुल भी मेरे समान कामनानगरी बसा रहा है। उदयन के माध्यम से सम्भवतः मुकुल ने अपने को ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

गोष्ठी विसर्जित होती है। कतिपय छात्र छात्राओं ने मुकुल को नयी विचार मालिका की प्रस्तुति के लिए बधाइयाँ दीं। अलका तटस्थ भाव का प्रदर्शन करती हुई सुदूर खड़ी रहकर मुकुल के अभिनन्दन को देखती रही। मुकुल का प्रसन्नता से विकसित मुखमण्डल अलका को एक सुरम्य पुष्प के समान अवलोकित होता रहा और वह अनुभव करती रही कि उस पुष्प की उत्कट सुरभि उसे आकृष्ट कर रही है। उसे ज्ञात ही नहीं हो सका कि मुकुल और उसके साथी कब चले गये—

वह अपने म ही खोयी रही। न जाने कब तक वह विश्वविद्यालय मे खडी रहती। यदि दीपा ने घर चलने के लिये उस न याद दिलाया होता।

दीपा ने आकर कहा—"अरी फिलासफर ! क्या यही योग साधती रहगी—या फिलासफरी का बहाना बनाकर किसी का टाइम देकर प्रतीक्षा कर रही हो ? अलका ने उत्तर दिया—"टाइम वाइम देने म तू ही एक्सपर्ट है तभी तो ऐसी बात करती है, मैं तो तेरा इ तजार कर रही थी।" दीपा ने इस पर कुछ लज्जा जरूर अनुभव की कि तु उसस भी न रहा गया और कहने लगी—'अलका रानी तू अलकापुरी स भी सु दर है, जानती है भाषण पढत समय मुकुल तुझे ही देखता रहा है।' अलका का दीपा के इस अनुवाक्य से झुरझुरी भरी गुदगुदी सी महसूस हुई। लाज की एक विद्युत्तरङ्ग उसकी काञ्चनकाया मे सहसा तरङ्गित हो गयी—क्या सचमुच इसका कथन सत्य है ? कि तु उसे डर था कि यदि नया तैराक प्रखरधारा म अभ्यास करेगा तो डूब जायगा, इसीलिए चुपचाप एव अनजान सी बनती हुई दीपा का पीठ पर एक धौल जमाती हुई बोली—'तू बडी ही बदमाश है—तुझे ईरान—तूरान की बहुत सूझती है, कहाँ तो वह बेचारा सावधान हाकर डरता डरता सा अपना भाषण पढ़ रहा था—और तू पगली उसकी इस सतर्कता का मुद्रा मे नयन व्यापार अवलोकित करती रही। वहा तू तो अपने और उसके विषय मे कुछ ऊटपटाग सपने तो नही बुन रही है।" दीपा ने सब सुनकर साचा ज्यादा अनावश्यक बात बढाना उचित नही, कि तु इस उक्ति को साथक होने स न रोक सकी कि दो लडकियाँ एक साथ हा तो कभी चुप नही रह सकती—अत यह फिर बोली—"डियर अलका ! मुकुल की विचार समीक्षा ता मुझ बहुत ही अच्छी लगी, मैं ता यह चाहती थी कि वह बोलता रहे बालता रहे बस और हम सभा सुनते रहे।" अलका ने उसकी बात सुनकर कहा—"हाँ ! यद्यपि विचार मे अ तत है कुछ नही,

किन्तु प्रस्तुति का ढंग पर्याप्त रूप से प्रभावकारी रहा है, इसमें सन्देह नहीं, पुराने तथ्य को अभिनव प्रभाव प्रदान करने का प्रयत्न किया है।'

वार्ताक्रम में उन्हें कुछ पता ही न चला कि कब वे मार्ग समाप्त कर अपने वासस्थान पर पहुँच चुकी हैं। दोनों ही आश्चर्यचकित होकर अपने अपने बँगले में प्रविष्ट हो गयीं।

[६]

गोष्ठी के पश्चात् सीधे मुकुल अपने मित्र शरद् के साथ प्रा० जोशी के बगले पर जाता है, क्योंकि ज्ञानघृत के बिना प्रतिभादीप प्रज्वलित नही हो सकता। प्रो० जाशा मुकुल की विचारशैली से बहुत ही प्रभावित हुये थे। उन्हे गौरव की अनुभूति भी हुई थी साथ ही साथ उनके हृदय म भरी स्नेहधारा भी उत्प्लावित होन लगी थी। मुकुल और शरद् का देखकर प्रा० जोशी न स्नेहपूर्ण स्वागत किया।

प्रो० जोशी, मुकुल एव शरद् आपस मे वार्त्तालाप कर रहे थे, तभी मिसेज जोशी वहाँ आ गयी, मुकुल और शरद् न—"चाची जी! नमस्ते" कहते हुये अभिवादन किया। मिसेज जोशी ने दोना को आशीर्वाद दिया। प्रो० जोशी ने मिसेज जोशी को इङ्गित करते हुये कहा—"अरी! तुम खाली हाथ यहाँ आयी, हम तो सोच रहे थे कि तुम कुछ अच्छा सा नाश्ता ला रही होगा, लेकिन तुम ता हाथ झुला रही हो खाली! खाली!! जानती नही हो तुम्हारा भतीजा 'द ग्रेट और मेरा शिष्य मुकुल आज विभाग की गोष्ठी म बहुत ही प्रभावपूर्ण विचार व्यक्त करके आया है, न विश्वास हो ता शरद् से पूछ लो।' शरद् पूछने की बिना प्रतीक्षा किये हुए ही कहने लगा—"हाँ! चाची जी, सर बिल्कुल ठीक कहते हैं आज मुकुल ने तो कमाल कर दिया, सभी मन्त्रमुग्ध होकर इसे सुनते रहे और यह आत्मविश्वास के साथ बोलता रहा। सबसे बडी बात तो मुझे यह लगी कि इसका विचार बिल्कुल नया था।'

मिसेज जोशी ने एक बार प्रो० साहब को देखा, एक बार स्नेहपूर्ण

दृष्टि से मुकुल को निहारा और बोली—"इस समाचार से मुझे बहुत बड़ी प्रसन्नता हुई है और मेरी शुभकामना है कि मुकुल जीवन में निरन्तर उन्नति करे।' साथ ही प्रो० साहब को इंगित करती हुई बोलीं—'लेकिन, आप कहीं मुकुल के विचार में अपना योगदान न समझेंगे, नहीं तो उस बेचारे का सारा सम्मान अपने हिस्से में लेकर अपनी गौरव गरिमा में खो जायें'—इस प्रकार प्रो० जोशी की चुटकी लेकर वे हँसती हुई भीतर चली गयीं।

थोड़ी देर बाद सर्वेण्ट के साथ जलपान लेकर मिसेज जोशी आयी। सभी लोगों ने जलपान किया। कुछ देर तक प्रो० साहब के साथ इधर उधर की बातें शरद् और मुकुल करते रहे, फिर दोनों एक साथ निकल पड़े। शरद् ने चलते हुये मुकुल से रास्ते में कहना प्रारम्भ किया—

'आज तुझे तो बहुत ही बधाइयाँ मिली हैं। लड़कियाँ तो बड़े ही उत्साह के साथ अपने सम्मान को व्यक्त कर रहीं थीं—दीपा तो उतावली सी लग रही थी।" मुकुल कहता ही क्या! बात तो सत्य ही थी, लड़कियाँ क्या लड़के और अध्यापकों ने भी मुकुल को प्रोत्साहित किया था, किन्तु मुकुल शरद् की बात सुनकर चुप न रहा उसने शरद् से कहा—"क्या तू लड़कियों को ही देखता रहा है? शरद् तो कुछ कहने के लिए व्यग्र था ही, केवल वह मुकुल का रुप देखना चाहता था। शरद् ने कहा—"मुकुल! मैं क्या देखता हूँ, तू खूब जानता है, लेकिन दोस्त! तू क्या देखता है? तू छिपाता जरूर है किन्तु मैं सब जानता हूँ।" मुकुल ने अनुभव किया कि शरद् चुहलबाजी ही कर रहा है लेकिन मन में वह सोचने लगा कि इसकी चुहलबाजी में भी कितना यथार्थ है, फिर भी उसने कहा—"अच्छा शरद्! अगर तू जानता है तो बता—मैं क्या देखता हूँ!" शरद् ने कहा—'मैं क्यों बताऊँ? मैं जानता हूँ ठीक जानता हूँ, सब कुछ जानता हूँ, लेकिन तुझे बताने के

लिये मैंने अपनी यह ज्ञानराशि नही अर्जित की है। इतना निश्चित है कि एक दिन तू ही बतायेगा, सब कुछ बतायेगा।"

मुकुल की उत्कण्ठा को जागृत करके शरद् मजा लेना चाहता था। मुकुल व्यग्र हो उठा था, कौतूहल का स्थिति मे पहुँच चुका था। टहलते-टहलते दोनो कम्पनी बाग के अल्फ्रेड पार्क मे पहुँच जाते हैं। अल्फ्रेड-पार्क की सुहानी वशारिका के बहुवर्णी फूलो पर भ्रमर दल एव तितलियाँ उड रही थी। सुमन सुरभि सुरभित हो रही थी। कटी एव सँवारी गयी घास को सुन्दर वीथियाँ मनमुग्ध कर रही थी। कुछ किशारियाँ लकदक उछल रही थी—किन्तु मुकुल एव शरद् दोनो ही शान्त थे, तब तक एक मयूरपखो तितली को देखकर मुकुल आकृष्ट हो जाता है और शरद् का भी ध्यान उस ओर खीचना चाहता है। शरद् से कहता है—"देख, कितनी अच्छी तितली है।" शरद् जब तक उस तितली की ओर देखता तब तक तो वह उडकर न जाने कहाँ अदृश्य हो जाती है, किन्तु दीपा, अलका और अलका की छोटी बहिन शालिनी दीख जाती हैं। शरद् चुप क्यो रहता—उसने मुकुल से कहा—"तुम तो अन्धे हो, या फिर कही कुछ और है, तितली तो नहा, तितलियाँ जरूर देख रहा हूँ।"

मुकुल की दृष्टि दीपा, अलका और शालिनी पर पडी तो वह आश्चर्यचकित हो गया, किन्तु हृदय के एक कोने मे अपरिमित आनन्द की सृष्टि हुई उसे अनुभव हुआ कि मानो अल्फ्रेड पार्क की पुष्पवाटियाँ झिलमिलाती तारकावली हैं और उनके मध्य मे सुशोभित चाँद अलका है। अलका ने तो काफी दूर से शरद् और मुकुल को देख लिया था, किन्तु वह अनदेखा कर रही थी, दीपा ने जब इन दोनो को देखा तो वह बिना कुछ कहे इनकी ओर बढने लगी, शालिनी पर कोई प्रतिक्रिया नही थी, क्योकि वह मुकुल और शरद् को पहचानती नही थी।

दीपा के समीप चलती हुई अलका को अवलोकित कर मुकुल के

नयन खिल गये और दीपा ने इन लोगों को सामने देखकर कहा—"अरे ! आप लोग भी यहीं ।" मुकुल चुप रहा । अलका और शालिनी भी चुप रहीं । तब तक दीपा ने परिचय कराया—"अलका की बहिन शालिनी है । इण्टर फाइनल में पढती है । शालू ये हैं शरद् और ये हैं मुकुल, हमारे क्लासफेलो ।" शालिनी ने शिष्टाचारवश नमस्कार किया । मुकुल और शरद् ने भी प्रत्यभिवादन किया ।

मुकुल और शरद् जहाँ खडे थे—वहीं थोडी दूर पर आमने सामने दो बेंच पडी थीं । शरद् ने आग्रह किया कि चलो वहीं बैठकर थोडी देर बात करते हैं । मुकुल और शरद् एक बेंच पर बैठ गये, दीपा, अलका और शालिनी दूसरी पर । तब तक चना बेचने वाला आ गया और वह मस्ती से गा रहा था—

'चना जोर गरम, मसालेदार ।

× × ×

जिनको कलम चले सर् सर् ।
उनको कहते हैं अफसर ॥
मेरा चना बना है आला ।
इसको खाते हैं लाला ॥

× × ×

शरद् ने उसको बुलाकर चना लिये । मुकुल, शालिनी, दीपा और अलका को देकर खुद लिया । अब तक शान्त अलका ने कहा—"थैंक यू, यह मुझे बहुत ही पसन्द है, थैंक्स अगेन ।" शरद् जानता है कि अलका गम्भीर प्रकृति की है, उसकी यह कृतज्ञताज्ञप्ति कृत्रिम एवं औपचारिक नहीं यथार्थ है । चने खाकर सभी लोग पास में लगे नल पर पानी पीने गये । मुकुल के अन्तर्मन ने एक निर्णय लिया और उसने मन ही मन अपनी एक योजना बनायी, किसी को कुछ बताने का प्रश्न ही नहीं था । शालिनी, दीपा और शरद् पानी पी चुके तो अलका

मुकुल के अग्रसर होने की प्रतीक्षा करने लगी। देखा कि मुकुल खड़ा ही है तो उसने कहा—"आप पीजिए।" मुकुल अलका की इस वाणी को सुनकर मुग्ध हो गया, किन्तु अग्रसर न होकर उसने कहा—"ओह! थैंक्स्, लेडीज फर्स्ट।" अब अलका कहती क्या चुपचाप पानी पीकर नल को बन्द करके बगल हो गयी। मुकुल ने आगे बढ़कर नल को कुछ इस अन्दाज से खोला कि उसके बड़े-बड़े छोटे सब पर पड़ गये। शरद् ने कहा—"अरे! तूने हम सबको भिगो दिया। मुकुल जितना बन्द करने का प्रयत्न कर रहा था, उतना ही जल उच्छलन तीव्र हो रहा था, किन्तु धीरे-धीरे मुकुल ने उसे प्रकृतिस्थ किया। दीपा भी खीझ रही थी, शालिनी तो कूदकर बाहर हट गयी, अलका को नल से निकली वे सलिल बिन्दुयें गुलाबपाश से छिड़की जाती हुई गुलाबजल की सुरभि सी प्रतीत हुईं। मुकुल मन में प्रसन्न था, किन्तु बाहर से—"सारी, आई एम रियली वेरी सारी"—कहकर क्षमायाचना माँगने का उपक्रम किया, किन्तु दीपा इस बहकावे में कहाँ आती उसने कहा—"वट वी आर नाट गोइंग टू एक्सक्यूज यू" कृपया हमारी साड़ियों के ड्राई क्लीनिंग के पैसे आप अदा कर दें, तभी एक्सक्यूज किया जायगा।"

मुकुल के अभिन्न दोस्त शरद् ने उसे झेंपते देखकर के कहा—"हाँ! ड्राई क्लीनिंग के चार्जेज इससे जरूर वसूल किये जाय और नकद, वह भी लकी स्वीट हाउस में।"

शरद् ने यह प्रस्ताव रखकर मुकुल के मन में तो आनन्द की सृष्टि कर दी थी। अलका मन ही मन प्रसन्न थी। शालिनी चहकने लगी थी—"हाँ! भाई साहब जरूर, अवश्य ही लकी स्वीट हाउस चला जाय।" और दीपा के तो मुह में पानी भर गया था, क्योंकि इलाहाबाद की लड़कियों को लकी स्वीटहाउस और यहाँ के साहित्यकारों को काफी हाउस स्वर्ग से भी सुहाना लगता है।

तुरंत शरद् ने नेतृत्व में डग भरे। अल्फ्रेड पार्क से बाहर आ गया सभी ने अनुगमन किया। वह रिक्शों में लिये इधर उधर देखने लगा, तभी दीपा ने अपनी कार सामने लाकर दरवाजा खोल दिया। शालिनी, अलका और दीपा आगे बैठ गयी। शरद् और मुकुल पीछे की सीट पर बैठ गये। सबो स्वीट मार्ट में एक ही टेबुल पर सब बैठे। शरद् को अवसर अच्छा मिला था आडर पर आडर देकर विभिन्न आइटम्स मँगाता रहा। बातें भी अब बहुत कामल नही रह गयीं थी। अलका और मुकुल की दृष्टि कई बार आपस मे मिल गयी, चन्द्रकिरन को देखकर गम्भीर जलधि उजरगित हो उठता है, यही हाल मुकुल का था। अलका से तो दो बार चम्मच ही अनायास ही जमीन पर गिर गया। वह झेंप गयी, क्योंकि उसकी मनचकोरी विमलचन्द्र के मुख-मण्डल का पान करती हुई यह त्रुटि कर गई थी। बिल आने पर शरद् और दीपा ने तेजी दिखाई, किन्तु चुपचाप मुकुल ने उन सबकी तेजी को शान्त कर दिया बिल लेकर धनराशि प्लेट पर रख दी। बेयरा शेष धन वापस लाया, मुकुल ने सौफ लेकर प्लेट उसके आगे खिसका दिया उसने प्रसन्नता से सलाम किया। सभी स्वीटहाउस से बाहर रोड पर आ गये।

□

का सम्पूर्ण भार नरेन्द्र पर सौंप करके अपने समयकों के साथ निर्वाचन प्रचार में लग गया।

राघवेश बहुमत से विजयी हुआ। उसके बाद तो वह निरंतर राजनीति में उतरता गया, किंतु राजनीतिक-बीमारियों से वह कोसों दूर था, अगर उसने दल बदल किया होता तो न जाने कहाँ पहुँचा होता, किंतु प्रारम्भ से ही वह सत्यनिष्ठ राज कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य करता रहा।

राघवेश इस समय संसद् सदस्य हैं, कृषकों के हितचिंतन के लिए वे विख्यात हैं, ट्रेड यूनियन के सशक्त कार्यकर्त्ता माने जाते हैं, छात्रों के हितार्थ राघवेश प्रखर वक्ता माने जाते हैं, चाहे दक्षिण भारत की समस्या हो चाहे उत्तर भारत की, चाहे देश की हो या विदेश की, राघवेश का अपना विचार व्यक्त करने के लिए अवश्य ही संसद् में समय प्राप्त होता है। कतिपय बार शासक दल द्वारा उन्हें मन्त्रिपद के लिए गुपचुप रूप से आमन्त्रित किया गया, किन्तु विनम्रता के साथ उन्होंने अस्वीकार कर दिया था। संसद् सदस्यों द्वारा बनी हुई कई समितियों के वे सदस्य हैं। इस समय राघवेश गृह मन्त्रालय, शिक्षा मन्त्रालय एवं सूचना प्रसारण मन्त्रालय की सलाहकार समितियों के अध्यक्ष हैं।

शिक्षा मन्त्रालय की सलाहकार समिति के कुछ सदस्य प्रयाग विश्वविद्यालय की समस्याओं का अध्ययन करने आ रहे थे। राघवेश को भी प्रो० नरेन्द्र की याद आयी और वे इस समिति के साथ ही इलाहाबाद आ गये। राघवेश संसद् के प्रखर वक्ता होते हुए भी दम्भ एवं दर्पविहीन हैं। उन्होंने अपने मित्र प्रो० नरेन्द्र के यहाँ ही ठहरने का निश्चय किया। प्रो० नरेन्द्र को यह सूचना तो जरूर थी कि संसद् से शिक्षा मन्त्रालय की सलाहकार समिति का एक दल आ रहा है, किन्तु उन्हें यह नहीं ज्ञात था कि इस दल में उनके अभिन्न मित्र राघवेश अध्यक्ष के रूप में आ रहे हैं।

प्रो० नरेन्द्र के लान मे बैठे हुए राघवेश नितान्त पारिवारिक एव व्यक्तिगत वार्त्तालाप कर रहे थे। अब तक दीपा जा चुकी थी। अलका अपने पापा के पास आकर बात करना चाहती थी, आज उसका मन असीम उत्साह से भरा था। शबनम बौछार दूर्वादल को मुक्तादल बना देती है, मुकुल द्वारा सलिल प्रक्षेपण अलका के लिए असीम मधुर अनुभूतियो का अभिनव अकुर सा लगा। वह अपने आह्लाद मे निमग्न "पापा, पापा" कहती हुई प्रो० नरेन्द्र के पास पहुँच गयी, उसे बडी झेंप लगी, क्योकि वह अपन मे डूबी हुई यह नही याद कर सकी कि पापा किसी अपरिचित व्यक्ति क साथ वार्त्तालाप कर रह हैं, किन्तु प्रो० नरेन्द्र समझ गये कि उनकी पुत्री आज असीम उल्लास मे है—अत उन्होने कहा—"बेटी अलका ! आप है ससद सदस्य राघवेश, मेर बचपन के क्लासफेलो' राघवेश की ओर मुखातिब होते हुए प्रो० नरेन्द्र फिर बोले—'और यह है मेरी पहली बेटी अलका"। इस प्रकार अलका और राघवेश का परिचय प्रो० नरेन्द्र ने दिया।

परिचय मिलन के पश्चात् सहज शालीन होकर अलका ने—"नमस्ते चाचा जी' कहकर राघवेश के प्रति सम्मान व्यक्त किया। राघवेश ने अलका को अपना आशीर्वाद दिया साथ ही साथ कभी नई दिल्ली आने का आमन्त्रण भी। प्रो० नरेन्द्र ने—"अपने चाचा के लिए चाय तो ला" अलका को आदेश दिया। अलका चाय लाने के लिए भीतर चली गयी। अलका के जाने के बाद राघवेश ने प्रो० नरेन्द्र से अलका के काफी बडी हो जान की चर्चा की और कहा कि पुत्री की शादी म हमे जरूर आमन्त्रित करना।

प्रो० नरेन्द्र एक क्षण तो स्तब्ध रह गये, वे सोचने लगे कि क्या मेरी बेटी इतनी बडी हो गयी है, आज तक तो हमने इस विषय म सोचा ही नही, फिर चेतना म आकर राघवेश स कहा—"क्यो नही इसमे भी कोई भूलने की बात है हाँ अतिथियो की परिसीमा का

पालन करते हुए भोजन व्यवस्था तुम्हारे लिये नहीं रहेगी।" राघवेश चुप रहा क्या? उन्होंने तपाक् से प्रत्युत्तर दिया—"प्रोफेसर! मत भूलो, मैं अतिथि नहीं, घर का सदस्य हूँ।" प्रो० नरेन्द्र कहते क्या?

अलका चाय लेकर आ गयी—उसने चाय बनाकर पहले राघवेश को, फिर पापा को दिया, बाद में स्वयं अपना कप लिया। राघवेश अलका से बातें करते रहे। अलका ने राघवेश से पूछा—"चाचा जी! आप लोग वर्ष में छः मास संसद् में बैठकर क्या करते हैं?" राघवेश अलका की चुहलबाजी समझ रहे थे, इसलिए उन्होंने कहा—"बेटा! संसद् सदस्यों की बिना बोले हुए जबान खुजलाती है, इसलिए "

अलका और प्रो० नरेन्द्र हँसने लगे, राघवेश भी उनकी हँसी में सम्मिलित हो गये। अलका ने पुनः पूछा—"चाचा जी! अच्छा यह बताइये संसद् में पास तो वही होता है, जो सरकारी पक्ष चाहता है, फिर विरोधी दल के साथ वाग्युद्ध क्यों छेड़ा जाता है।" राघवेश अब गम्भीर हो गये और उन्होंने कहा—"बेटा! संसदीय प्रणाली की तो यही विशेषता है कि सभी को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है, यही नहीं है कि सरकारी पक्ष मनमानी ही करेगा, बल्कि विरोध पक्ष के रचनात्मक सुझावों को भी वह स्वीकार करेगा, अतः वाग्युद्ध तो नहीं—विरोधी पक्ष की रचनात्मक बुद्धि की भी परीक्षा होती है।"

अलका और राघवेश संसार से सम्बन्धित बातें करते रहे, प्रो० नरेन्द्र राघवेश के अलका की शादी में निमन्त्रित करने के आग्रह को याद करते रहे। प्रो० नरेन्द्र को लग रहा था कि वे नितान्त प्रौढ़ हो गये हैं, और उन्हें अपने पितृत्व दायित्व का अतिशीघ्र निर्वाह करना चाहिए, उन्हें यह महसूस हो रहा था कि अनायास ही महत्वपूर्ण किन्तु मेरे द्वारा अचिन्तित दायित्व की ओर राघवेश ने अचानक याद दिला दी है।

नरेद्र इस विचार मे मग्न होते जा रहे थे, और अलका कभी दिल्ली के वोट क्लब, तो कभी लाल किला, तो कभी कनाटप्लेस, कभी पालम की चर्चा पूछती रही। राघवेश भी उसकी जिज्ञासा को स्नेहपूर्ण उत्तर से शात करते रहे। न जाने कैसे अलका को याद आ गयी २६ जनवरी की। उसने राघवेश से कहा—"चाचा जी ! आप बडे होशियार हैं, दिल्ली के विषय मे इतना बताया, किन्तु उस महान् पव के विषय मे चर्चा तक नही की, जो सदियो के परत त्रतापाश से उन्मुक्त भारत के जन जन के उल्लास का प्रतीक गणत त्र दिवस यानी कि २६ जनवरी है।" राघवेश ने कहा—'नही बेटी ! यह सब त्रुटि तुम्हारे पापा की है। मैं तो बन गया हूँ नेता, नेता वही है जिसे घर, परिवार, मित्र, कुटुम्ब, कबीला सब भूल जाते हैं, केवल जनता याद रहती है जीवन मे मैं इसी प्रकार का नेतृत्व करता रहा हूँ। यह तो तुम्हारे पापा का दायित्व था कि दिल्ली आते तुम्हें भी लाते, मैं तो आज के पहले केवल प्रतिभा शाली नरेद्र को ही जानता था—तुम्हारे बुद्धू पापा को नही।'

राघवेश की बात पर अलका हँसने लगी, प्रो० नरेन्द्र भी अपनी चिन्तन-दशा से उन्मुक्त हुए। राघवेश को रात्रि मे ही किसी एक्सप्रेस ट्रेन से जाना था, अत नरेद्र ने अलका से कहा—'बेटी ! तुम्हारे चाचा को आज ही जाना है, इनकी सम्पूण व्यवस्था सम्पन्न कराओ जाओ अपनी मम्मी को सहयोग दो।" अपने पापा की बात को सुनकर अलका राघवेश से बोली—"चाचा जी ! इतनी क्या जल्दी है, दिल्ली तो रहते ही हैं, एकाध दिन प्रयाग रहकर जाइये।' राघवेश ने अलका के आग्रह पर उत्तर दिया—"बेटी ! कल दस बजे प्रात ही गृहम त्रालय से सम्बन्धित विषय पर विचार विमर्श हेतु प्रधानम त्री के साथ मेरा समय निर्धारित है, मुझे कष्ट है कि इस समय मैं तुम्हारा आग्रह पालन करने मे अपने को निसहाय पा रहा हूँ, फिर कभी आने पर तुम्हारे इस आग्रह को कम्पेनसेट कर दूगा।"

राघवेश के जाते समय अलका तथा प्रो० नरेन्द्र स्टेशन तक उन्हें छोड़ने के लिए तैयार होने लगे। राघवेश प्रेमावती से विदा लेते समय निवेदन करने लगे—"भाभी! प्रो० साहब मेरे बचपन के मित्र हैं, प्रतिभा सम्पन्न हैं, किन्तु कभी इन्होंने मुझे यहाँ आने का आमन्त्रण तक नहीं दिया। अब आप से परिचय हो गया है। अलका की शादी के समय अवश्य निमन्त्रण भेजियेगा, चाहे मैं जितना व्यस्त रहूँगा, आऊँगा जरूर।" अलका को इङ्गित करते हुए राघवेश ने प्रस्तावित किया—"बेटी! दिल्ली आने के लिए मैं तुम्हें अभी से निमन्त्रित करता हूँ, जब भी तुम उचित समझो या तुम्हें समय मिले दिल्ली आ जाना, फिर मैं तुम्हें भारत की राजधानी दिखाने की सम्पूर्ण व्यवस्था करा लूँगा। अगर हो सके तो अपनी मम्मी तथा पापा को भी लाना।" अलका से बातें करने के पश्चात् राघवेश ने प्रेमावती से विदाभिवादन किया और नरेन्द्र की ओर मुखातिब होकर कहा—"चलो चला जाय।"

इसके बाद प्रो० नरेन्द्र तथा अलका राघवेश के साथ स्टेशन की ओर चल पड़े। गाड़ी छूटते छूटते राघवेश ने पुनः पुनः अलका से दिल्ली आने की योजना बनाने के लिए आग्रह किया।

□

[११]

प्रो० नरेन्द्र सोकर उठे ही थे कि डा० जोशी के यहा से पत्र लेकर उनका सर्वेण्ट पहुँच गया। प्रो० नरेन्द्र ने पत्र पढा—

"आदरणीय नरेन्द्र साहब !

सन्ध्या ५.३० बजे मेरे आवास पर आज ही सपरिवार उपस्थित होकर अनुगृहीत करें, आज दीप्ति का जन्म दिवस है।

स्नेहाकांक्षी—
अमरेन्द्र जोशी

प्रो० नरेन्द्र ने पत्र पढकर प्रेमावती को दे दिया और कहा कि सायकाल जोशी जी के यहा सभी को पहुँचना है, उनकी पुत्री का आज जन्म दिवस है। प्रेमावती ने पत्र पढकर शालिनी को देती हुई आदेश दिया कि तू पढ़कर अपनी दीदी को दे देना। शालिनी प्रो० जोशी की बहुत ही मुह लगी है। बचपन मे प्रो० जोशी उसे गोद मे खिलाते रहे हैं। प्रो० जोशी से शालिनी बहुत ही बेझिझक है, जितना ही जोशी जी से निसकोच है उतना ही मिसेज जोशी से हिलीमिली। प्रो० जोशी एव मिसेज जोशी को वह 'चाचा' 'चाची' सम्बोधन से सम्बोधित करती है। अगर कोई जरा सी भी बात उसके चाचा चाची को कह दें तो शालिनी का मुह फूलकर कुप्पा हो जाता है।

शालिनी यह निमन्त्रण पत्र पाकर "दीदी, दीदी" चिल्लाती हुई अलका के कमरे मे पहुँच गई। अलका तन्मयता से पढ़ रही थी। उसने समझ लिया कि शालिनी बेमतलब परेशान करने आ रही है, अत अलका ने उससे कहा—"शालू! मुझे डिस्टब मत कर, यह टापिक खत्म करने

ग, शाम यहीं रा, नहीं तो मम्मी से तेरी शिकायत करूंगी।" शालिनी ने चिढ़ाते हुए कहा—मेरा अच्छी दीदी! यह टॉपिक तो खत्म होता ही रहेगा, आज शाम को फिर तेरा स्वीट हार्ट वाला टापिक सामने आ रहा है।" अलका घबड़ा गयी साथ ही साथ कौतूहलमयी भी हो गयी। उसने अपनी घबड़ाहट और बेसब्री दबाते हुए कहा—'क्या है री! साफ साफ बता" अलका की उत्सुकता को देखकर शालिनी ने कहा—"दीदी! आप अपना टॉपिक खत्म कर लें तो बताऊंगी, नहीं तो आपको डिस्टर्ब न होगा और करेंगी तब आप मम्मी से मेरी शिकायत।" अलका ने शालिनी से पुनः आग्रह किया—"बता री क्या है? डिस्टर्ब करके अब परेशान कर रही है।" पूछती हुई अलका के हृदय की धड़कन तीव्र हो गयी।

शालिनी ने उत्तर न देकर डॉ० जोशी का पत्र ही उसे दे दिया। कम्पित हृदय से उसने पत्र लिया। डॉ० जोशी के यहाँ निमन्त्रण जान कर प्रसन्न हुई। यह अब तक जो आशङ्कित हो रही थी सभी बातें टापिक की बात छेड़ने से अब आश्वस्त हो गयी। शालिनी से बोली—"अच्छा आज तेरे चाचा चाची जी के यहाँ निमन्त्रण है, इसीलिए इतना चहक रही है। पापा और मम्मी से कह दे मैं नहीं जाऊंगी।" अलका भी अब शालिनी को चिढ़ाना चाह रही थी, क्योंकि शालिनी डॉ० जोशी को हृदय से सम्मान देती थी। शालिनी ने अलका की बात को सच मान लिया, उसने सोचा, यदि दीदी नहीं जायेंगी तो हो सकता है कि मम्मी पापा चले जायें और मुझे भी यहीं कहीं न छोड़ जायें, इसलिए वह आग्रह भरे स्वर में बोली—"दीदी! क्या नहीं चलेंगी, मैं सब तेरे कपड़े सहेज दूंगी और तू जो कहेगी सब कर दूंगी मेरी अच्छी दीदी चलोगी तो।"

अलका तो यही चाहती थी, उसने कहा—"अच्छा जा पढ़, अभी से तो चलना नहीं है शाम को देखा जायगा।' शालिनी समझ गयी कि

दीदी चलेंगी केवल मुझे परेशान करने के लिए अनिश्चयात्मक उत्तर दे रही हैं।

डा० नरेन्द्र विश्वविद्यालय जाने लगे तो प्रमावती को बुलाकर सलाह दी— "किसी समय पाँच बजे के पहले शालू या अलका के साथ चौक जाकर दीप्ति को प्रिजेण्ट करने के लिए कुछ ले आना।" प्रमावती ने डॉ० नरेन्द्र से जानना चाहा कि क्या ले आऊँगी ? किन्तु डॉ० नरेन्द्र ने कुछ नही बताया, केवल यह कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो वह ले आना।

अलका ही पहले विश्वविद्यालय से आती थी। सवा दो ढाई तक प्राय वह रोज ही घर वापस आ जाया करती था। आज विश्वविद्यालय जाने पर पता चला कि दूसरे पीरियड के बाद कोई पीरियड नही होगा, अत अलका एक बजे तक ही घर वापस आ गयी। दो बजे के करीब प्रेमावती तथा अलका चौक खरीददारी के लिए गयी। जवाहर स्क्वायर तथा जानसेनगज की कुछ दुकानो पर फ्राक आदि देखने के बाद फलमण्डी के भीतर बिसातखाना की ओर कुछ खिलौने आदि भी देखने के लिए प्रेमावती अलका के साथ गयी। अलका ने बिसातखाने के भीतर मुकुल और शरद् को देखा। दोनो ही आज विश्वविद्यालय के दूसरे पीरियड मे नही थे। अलका को देखते ही शरद ने आगे बढ़कर नमस्कार किया। मुकुल से भी नमस्कार हुआ, तब तक अलका ने अपनी मम्मी से इन दोनो का परिचय कराया। अलका ने सकोच करते हुए पूछ ही लिया कि इस समय क्या खरीद रहे हैं? दोनो ने बताया कि आज प्रो० जोशी की पुत्री का जन्मदिवस है कुछ उपहार की सामग्री लेने के लिए आये है। मुकुल तो अलका को देखने के बाद से ही अपने हृदयतटिनी की हिलोरो मे आ दोलित होने लगा था। अलका को प्रो० जोशी के यहाँ इन लोगो की उपस्थिति के समाचार ने असीम

आनन्दानुभूति से भर दिया। वह मन ही मन आह्लादित तथा उत्साहित हो उठी।

मुकुल अलका ही क्या, किसी भी किशोरी की उपस्थिति में मुखर नहीं हो पाता था, क्योंकि पुलकानुभूतियों का चुपचाप पान करने में जितना मन प्रमुदित होता है, उतना 'नवरस' से भी आह्लादित नहीं होता। शरद् ने अलका से भी आने के उद्देश्य के विषय में जानना चाहा, किन्तु—"ऐसे ही मम्मी के साथ चली आयी—कहकर उसने प्रो० जोशी के यहाँ अपने परिवार की उपस्थिति के विषय में कोई वार्ता नहीं की। फिर थोड़ी देर औपचारिक वार्ता करके अपने अपने कार्यक्रम में व्यस्त हो गये। प्रेमावती ने अलका की च्वाइस के अनुरूप कुछ अच्छे से खिलौने लेकर फिर लक्ष्मी-स्टोर में जाकर दोनों ने कुछ सेट्स कपड़े पसन्द किये। उन्हें खरीदकर साढ़े तीन के लगभग अलका अपनी मम्मी के साथ घर वापस आ गयी।

अलका सामान रखकर अपने कमरे में कुछ रेस्ट के मूड में चली गयी। वह धीरे धीरे फिर सोचती हुई दिशाखाने में मिले मुकुल के विषय में याद करने लगी। आयत नयननलिन, स्मित की प्रभाती मृदुरेखा, विकसित मुखकान्ति जो मुकुल के मुखमण्डल पर छायी थी, उसे याद करती हुई वह सपनों के ताने बाने बुनती रही।

□

[१२]

मुकुल और शरद शीघ्र ही दीप्ति के लिए उपहार सामग्री लेकर चौक बाजार से वापस आ गये। लौटते समय मुकुल और शरद ने घर जाकर कपड़े आदि चेन्ज करके जोशी जी के यहाँ लगभग ५ बजे तक पहुँच जाने का निश्चय किया।

मुकुल और शरद रहते समीप समीप ही थे, किन्तु अलग अलग मुहल्ला में। मुकुल तो रानी की मण्डी में रहता था और शरद रहता था मालवीय नगर में। दोनों दस मिनट में एक दूसरे के घर आ जा सकते थे। मुकुल घर पहुँच कर अपने द्वारा लाये उपहार को एक बार खोलकर फिर से देखने लगा। उपहार के प्रति जो इच्छा शक्ति थी, वह कुछ सोशल कर्त्तव्य अथवा प्रा० जोशी के प्रति श्रद्धा भावना व्यक्त करने का माध्यम ही थी, किन्तु उपहार क्रय करते समय अलका के मिलन ने सहज ही उसके हृदय में पुलकसिहरन की अनुभूति जागृत कर दिया था। मुकुल के हाथ मे उपहार था, किन्तु मन कल्पना नौका पर विहरण करने लगा था।

सघन नीली जलदमालिका की प्रतिछाया में सलिल सतह पर वह तैर रहा था, तैरने की न कोई निश्चित दिशा थी और न कोई सुदृढ उद्देश्य। मनमाविक उसे धीरे धीरे भुलावा देते हुए बढ़ता जा रहा था और इस स्थिति मे मुकुल सोच रहा था—

"हमे सिन्धु के पार जाना नहीं है,
जहाँ कोई नाविक भी पहुँचा नहीं है।

भले आज जलयान डूबे हमारा,
भले आज हम भी न पायें सहारा ।।"

मुकुल को स्वय अनुभव होने लगा कि अलका मरे लिए मन्द समीर की शीतल सिहरन है, सावनी फुहार की सलिल बिन्दुओं का अभिषिञ्चन है, शारदी सुषमा से अमल धवल तटिनी की प्रथम लहरिका की तरङ्ग है, सघन निशीथ मे तारिका मण्डली की कान्तिमयी रश्मिछटा से सजी सँवरी है, गगन मे उल्लसित मन्दाकिनी की पयोधारा की प्रमुदित हास की मृदुरेखा है, शवरी के स्लथ हो जाने पर कार्य सम्भार सम्हालती हुई ऊष' किरण की लालिमा से अनुरञ्जित प्रभात पटल पर विलसित सुनहरी दीप्ति है ।

भावना की भागीरथी, कल्पना की कालिन्दी और मधुर सुधियों की सरस्वती के लिए अवसान विश्रामदायिनी बँगाल की खाडी अभी तो बनी नही, इसलिए मुकुल सुधियों की नगरी का विश्वकर्मा बनता जा रहा था, स्मृतियों की बस्ती का सम्मानित ललित कलाकार ।

अन्तमन की अनुभूतियो की अभिव्यक्ति नही मिल पा रही थी, मुकुल सोचता था कि क्या अपनी स्थिति के विषय मे अपने मित्र शरद् से कहूँ ? किन्तु मन की तो चोरी करने की प्रवृत्ति होती है, यदि अपराध जगत् के प्रबल अपराधी के प्रतिपक्षी के रूप मे मुझे खडा होना हो तो मैं कहूँगा कि सबसे बडा चोर मन है, किन्तु उससे बडा चोर शेर के घर सवा शेर चित चोर है । मुकुल कुछ निश्चय नही कर पाता ।

मुकुल शरद् से भी अपनी मनोदशा के विकास का उल्लेख करने का साहस नही कर पाता जब मनुष्य अपनी भाव स्थिति म ही निरन्तर किसी वस्तु के प्रति सोचता रहता है तो उस वस्तु के प्रति उसके मन मे सहज आसक्ति का आविर्भाव हो जाता है । यही आसक्ति

आकांक्षा की सृष्टि करने लगती है, आकांक्षा के बाद तो फिर कौतूहल का उछाल जलधि उमड़ता है और अजस्र अधीरता का लहरा मे आवर्तित कर लेता है। मुकुल अधीरता की स्थिति मे अलका के प्रति सोचते हुए याद करना चाहता है कि क्या अलका की कोई चेष्टा इस रूप मे नही स्फुटित हुई, जिससे उसके आकर्षण के विषय मे कुछ अनुमान लगाया जाय।

वह एक एक क्षण को स्मृतियो की पोटली से खोलकर तहस विहस करता है, कही कुछ नही मिलता, केवल एकमात्र सौरभ की गमक विवश बनाकर उसे स्मृतियों के विशाल भण्डार मे कुछ टटोलने के लिए बाध्य करती है। मुकुल सोचता है कि मेरे द्वारा अल्फ्रेड-पार्क मे जल के उन्माजन पर सभी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, केवल अलका ही है जो कही अपने मे खो गयी थी, किन्तु वदनपटल पर मञ्जु मधुर छवि कुछ अनन्य सौन्दर्य विकास लेकर विलसित हो गयी थी, दीप्ति के लिए उपहार खरीदते समय मिली अलका के विषय मे सोचता है कि कितनी चतुरता से अलका ने माँ से परिचय कराते हुई कहा था—"मम्मी! ये हैं मुकुल—हमारे सहपाठी, कक्षा मे इतना अच्छा व्यवहार है कि सभी लड़के लड़कियाँ इनका अत्यधिक सम्मान करते हैं।"

अलका के इस वाक्य के विषय मे सोचते हुए मुकुल उसकी प्रतिक्रिया, उसकी भावना, उसकी अनुभूति का अनुमानित करना चाहता है, किन्तु उसे इस वाक्य मे कुछ स्पष्ट एव विशेष नही मिलता है फिर से अनायास ही सोचता जाता है, सोचता जाता है, सलिल की तरङ्गो के थपेड़ो मे उलझा कमल उन्मुक्त होकर अपनी आभा दीप्ति को विभूषित करने लगता है, मुकुल का भी मनकमल भावसलिल की उद्दामधारा से उन्मुक्त होता हुआ सोचता है कि अलका ने माँ से कहा था "सभी लड़के-लड़कियाँ इनका अत्यधिक सम्मान करते हैं' और

इस वाक्य को पुन, याद करते हुए मुकुल कुछ प्राप्त करता है—सघन तिमिर पटल म आलोक रश्मि की एक स्वर्णिम रेखा। सोचता है कि लड़कियों से आशय सभी के साथ अलका का अपने से भी है। अतः निश्चित है कि माँ के समक्ष अपनी भावराशि को प्रकट नही कर सकती थी, इसलिए उसने सभी लड़कियो का उल्लेख करके अपने को भी उन्ही म समन्वित करके व्यक्त किया है। अन्यथा 'सभी' शब्द की कोई आवश्यकता न थी।

मुकुल अब सहज पुलक, उल्लास एव आह्लाद का अनुभव करने लगा था, उसे याद आती है 'प्रसाद' जी का वह मधुर शब्द गीति, जिसम प्रणयी अपनी लाजविह्वला प्रणयिनी का मुखरित करन के लिए पूँछता है। मुकुल के स्मृति पटल पर 'प्रसाद' जी की यह पक्ति कौंध जाती है—

"तुम कनक किरण से अ तराल मे लुक छिपकर चलते हो क्या ?
हे लाज भरे सौ दर्य बता दो, मौन बने रहते हो क्या ??

अधरा के मधुर कगारो मे,
कल कल ध्वनि की गुजारो मे,

मधुसरिता सी यह तरल हँसी, अपनी पीते रहते हो क्यों ?
हे लाज भरे सौन्दय बता दो, मौन बने रहते हा क्या ??"

× × ×

मुकुल यह भी भूल सा गया था इस स्थिति मे कि उसे डा० जोशी के यहाँ जाना है, यह तो अच्छा हुआ कि शरद आ गया, उसे देखते ही मुकुल "बस दो मिनट, चलता हूँ' कहकर अपने कपड़े परिवर्तित करने लगा। मुकुल जब तैयार हो जाता है तो शरद के साथ डा० जोशी के यहाँ के लिए चल पड़ता है। शरद मुकुल से पूँछता है कि मुकुल वहाँ कौन कौन आयेंगे ? कुछ तुम्हें मालूम है ?

मुकुल ने उत्तर दिया—"नहीं, यार, डॉ० साहब से न तो मैंने पूँछा ही था और न उन्होंने मुझे बताया ही।" इस प्रकार उत्तर देने के बाद मुकुल स्वयं सोचने लगता है कि डॉ० जोशी के यहाँ कौन कौन आयेगा, क्या डॉ० नरेन्द्र का भी परिवार आयेगा ? क्या कक्षा के अन्य छात्र भी आयेंगे ? इन सब प्रश्न बिन्दुओं पर चिंतन करते हुए मुकुल और शरद् डॉ० जोशी के यहाँ पहुँच जाते हैं।

□

[१३]

डॉ० जोशी के बंगले पर पहुँचते ही मुकुल को कुछ नवल स्फूर्ति एवं नूतन चेतना सी अनुभव होती है, मन की अंतरंगों में डूबते हुए उसे कूल की आशामयी तटरेखा अवलोकित होती है, द्वार पर ही मुकुल एवं शरद् का स्वागत शालिनी करती है। मुकुल के नयनदल पर एक सहज आलोक विहँस पड़ता है।

ड्राइंगरूम में प्रो० जोशी, नरेन्द्र तथा प्रेमावती बैठे हुये अवलोकित हुए। मुकुल एवं शरद् ने अभिवादन किया। प्रो० जोशी तथा प्रो० नरेन्द्र ने उत्फुल्लता से स्वागत किया। शरद् और मुकुल भी ड्राइंग रूम में ही बैठना चाहते थे किन्तु डा० जोशी ने आग्रह किया कि भीतर जाकर देखो कोई आवश्यकता हो तो सहायता करो और अतिथियों का स्वागत करो। जैसे ही दोनों ड्राइंग रूम से बाहर आते हैं तब तीन चार अपरिचित तथा नीलिमा, दीपा एवं विजया आती हुई दीख पड़े। इन लोगों का स्वागत करने के लिए मुकुल तथा शरद् वहीं प्रतीक्षा करने लगे। नीलिमा, दीपा एवं विजया के प्रति शरद् ने स्वागतपूर्ण सम्मान प्रदर्शित किया तो वे अत्यधिक हर्षित हुईं। शरद् के साथ वे तीनों ही घर के भीतर चली गयीं। मुकुल ने अन्य लोगों को ड्राइंग रूम की ओर जाने का संकेत कर दिया। प्रेमावती ड्राइंग रूम में अपने को अकेला महसूस करती हुई भीतर चली आयी।

मिसेज जोशी के साथ अलका तन्मयता से जलपान की सामग्री वितरित करने में संलग्न थी, तभी विजया आदि पहुंच जाती हैं। मिसेज जोशी से अभिवादन करके वे सभी सहायता करने में तन्मय हो जाती हैं।

शालिनी तो सबसे बेखबर होकर दीप्ति के साथ खेलने लग गयी थी। भीतर मुकुल और शरद् भी पहुँच गये और स्वतः ही व्यवस्था सम्बन्धी काय मे लग गये। मुख्य द्वार की बायी ओर लान पर जलपान के आयोजन की व्यवस्था थी। मुकुल ने मिसेज जोशी के सम्पुण आयोजन के सञ्चालन की जानकारी प्राप्त की और वह शरद् क सहयोग से काय व्यवस्था अवलोकित करने लगा।

शालिनी भी दीप्ति के साथ वहा आ जाती है, अलका की सभी सहेलिया को नमस्ते करती है। विजया शालिनी से पूछती है कि "शालू—पढायी कैसी चल रही है ?' शालिनी ने प्रत्युत्तर मे बताया —"दीदी ! मैं ता अपने ढँग से पढायी कर ही रही हूँ, देखिए क्या होता है ?' मिसेज जोशी को सहसा कुछ याद आ जाता है और वे वहाँ से हट जाती हैं।

इसी समय छोले लगाती हुई अलका के हाथ से अचानक चम्मच गिर पडता है। नीलिमा ने तुरत इस पर अपनी कमेन्ट्री दे दी—"महारानी जी ! मन कहाँ है ? और आप कहाँ हैं ??' अलका नीलिमा की ओर आँख तररती है, किन्तु समीप मे ही मुकुल बैठा था उससे अलका की आँख मिल जाती है। समस्त झञ्झावात स्तब्ध रह जाता है, अलका के मन मे एक अक्थ शाति प्रतीत होती है और मुकुल कुछ व्यग्र, चिंतित, उत्कण्ठित सा प्रतीत होता है।

लगभग सभी आमन्त्रित लोग आ गये थे। इधर मिसेज जोशी ने पूण तैयारी करा दी थी। सभी लोग लान मे पहुँच जाते हैं और एक एक करके दीप्ति को उपहार देने लगते हैं। उपहार देने के बाद दीप्ति के जन्म दिवस पर आशीवाद, शुभकामनायें एव बधाइयाँ समर्पित की जाती हैं। प्रो० जोशी एव मिसज जोशी सबके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। इतने मे ही नीलमा न जाने कैसे मुकुल से एक गीत गाने का

प्रस्ताव कर देती है, सभी के द्वारा आग्रह किये जाने पर मुकुल अस्वीकार न कर सका।

गीत की कल्पना एवं आवाज की कशिश—कुछ इतनी मधुर भावना सँजोये थी कि सभी लोग मुग्ध हो गये। प्रो० नरेन्द्र ने तो गीत समाप्त होने पर आगे अग्रसर होकर मुकुल को गले से लगा लिया। अलका एवं अन्य सभी अतिथि मुकुल की प्रशंसा करने लगे। नीलिमा, विजया और दीपा के साथ आगे बढ़कर अलका ने भी बधाई दी। उत्सव समाप्त हुआ, सभी लोग विदा होने लगे।

अलका थी कि वह बार बार मुकुल को ही देखती जा रही थी—देखती जा रही थी, चकोरी पान कर रही थी शारदी सुषमा का। आज इतनी भाव मग्न हो गयी थी कि उसे कुछ याद ही नहीं रहा कि कब दीपा, विजया, नीलिमा आदि चली गयी। वह चलने लगी तो प्रो० नरेन्द्र और प्रेमावती मे अभिवादन करते हुए मुकुल को शालिनी ने सानुरोध आमंत्रित किया—'भाई साहब! किसी दिन आप घर पर तशरीफ लाइए तो आपसे खूब गीत सुनूंगी, बोलिये कब आइयेगा।' मुकुल कुछ कहता इसके पूर्व ही प्रो० नरेन्द्र एवं प्रेमावती ने भी मुकुल से घर पर आने का आग्रह किया, अन्ततः परसो के दिन साय ५ बजे आने के लिए मुकुल ने आश्वासन दिया। अलका निर्वाक सब कुछ सुनती रही। हृदय में उत्कण्ठा का निर्मल तरङ्गिनी किल्लोलें लेने लगी और मुख मण्डल पर शरद् चन्द्रिका की आभा। घर पहुँच कर वह विश्राम हेतु अपने रूम मे चली गयी। शालिनी, मम्मी और पापा से देर तक बातें करती रही।

□

शालिनी का आग्रह अप्रत्याशित एव अयाचित था—प्यासे पपिहरे को अचानक स्वाती नक्षत्र की सलिलधारा मिल गयी थी। मुकुल ने सोचा प्रो० नरेन्द्र के घर जाने का अवसर प्राप्त हुआ यह मेरा सौभाग्य है। मुकुल निरन्तर सोचता जाता है कि कैसे डॉ० नरेन्द्र के यहाँ जाकर अलका से बात करूँगा। मुकुल ने सोचा कि मैं अकेले जाकर हो सकता है बोर होऊँ, इसलिए उसने अपने साथ शरद् को भी ले जाने का निश्चय किया। चार बजे के करीब मुकुल के कथनानुसार शरद् आ गया। मुकुल ने सोचा कि ठीक टाइम पर पहुँचने से महत्व कम हो जाता है, इसलिये इण्डियन टाइम का मानक रखा जाय अर्थात् कम से कम एक घण्टे लेट।

शरद् ने पूछा कि क्यों मुकुल चलना नहीं है क्या ? अभी तक ऐसे ही बैठ हो ? मुकुल ने कहा—यार ! प्रो० साहब के यहाँ टाइम देकर पहली बार चल रहा हूँ—ठीक समय पर पहुँच गया तो फालतू समझा जाऊंगा। शरद् ने पूछा—बात क्या है ? क्या इतना महत्व प्रदर्शित करने की जरूरत है ? प्रो० साहब को समय देकर उनके सामने तुम्हे महत्व याद आ रहा है ? तू अपने मन की सही बात छिपा रहा है। हमे तो लगता है कि यार है कुछ अवश्य दूसरी बात !

मुकुल फिर भी टालमटोल करता रहा और शरद् एक किताब निकालता, फिर दूसरी निकालता और उसके पन्ने पलटकर रख देता—एक ओर तो शरद् का यह क्रम था, दूसरी ओर मुकुल से भी बातें करता जा रहा था।

शरद् ने कहा—"मुकुल ! अपनी क्लासफेलो अलका—प्रो० नरेन्द्र की पुत्री—कितना रिजर्व रहती है। पढ़ने मे भी अपने ढग से सीरियस

है—वही लेबोरियस भी है, कहीं वही टाप पोजीशन पर न पहुच जाय—क्योंकि गुमसुम बनी किताब चाटने मे लगी रहती है, फिर प्रो० साहब की खुद की देखरेख तथा प्रोत्साहन—प्रो० नरेन्द्र के पास पुस्तकों का असीम भण्डार है—दोस्त सतर्क रहो, नहीं तो टाप पोजीशन खतरे म लग रही है। शरद् की दृष्टि सहसा अपनी घडी पर जाती है, तो वह कहता है—"अरे पाँच तो बज गये, आखिर विचार क्या है तुम्हारा ?' मुकुल कुछ दूसरी ही कल्पना म पुलकित था, उसने शरद् की एक भी समीक्षा का नहीं सुना, उपदेश वाक्य तो विचारा कहने वाले को ही रो रहा था, किन्तु शरद् के द्वारा समय के अतिक्रान्त होने की ओर जब इगित किया गया तो मुकुल ने धीरे से कहा—"चलो, कुछ देर तो हो ही गयी, कोई बात नहीं।"

मुकुल और शरद् के मध्य किसी प्रकार का दुराव छिपाव नहीं था, किन्तु मृदुल अनुभूतियाँ किसी किशोरी की पुलकावली के समान होती हैं, जो प्रकट होने की उत्कण्ठा लिए हुए अपना अवगूहन करती रहती हैं। मुकुल भी अलका को अपनी हृदय नगरी के किस राजप्रासाद की अधीश्वरी के पद पर अभिषिक्त करना चाहता है—यह उसने अभी तक शरद् से भी नहीं बताया। मुकुल और शरद् मार्ग पर चल रहे थे, किन्तु मुकुल का अन्तमन कुछ ऐसी उड़ान भर रहा था, जहाँ अलका और मुकुल ही थे। मुकुल को चुप देखकर शरद् ने पूछा—"मुकुल! अगर अलका तुम्हें चाहने लगे, तो तुम्हारा क्या निर्णय होगा ?" मुकुल ने सीरियस किन्तु परिहास के मूड मे कहा— 'तो तेरा पत्ता साफ, और क्या होगा ?" यद्यपि शरद् के प्रश्न से मुकुल रोमाञ्चित हो गया था। मुकुल के उत्तर को सुनकर शरद् हँसने लगा और उसने एक फिकरा जड़ा—"अच्छा तो यह चालबाजी है, मेरा ही पत्ता साफ करने पर लगे हो, खैर निश्चिन्त रहो, वहाँ तो मेरा कोई पत्ता ही नहीं है, और न मैं अलका के विषय मे सोचता ही हूँ। लेकिन सही बता

यार ! अलका, जो शबनम की निर्मलता, शर्वरी की गहनता, पुष्पवीथी की मादक सुरभि, किसलय की मञ्जिमा और मन की ललक लिये है, यदि वह तुम्हें प्राप्त करना चाहे तो ?

शरद् कहता जा रहा था और मुकुल तिरता जा रहा था—कल्पना में। शरद् शांत हो गया तो मुकुल एक लम्बी उसांस भरता है और मुख पर स्वर्णिम मयूरों के प्रथम स्पर्श की अनुभूति लिये कमलकोरक के मृदुल पटल की छवि विस्फुरित हो उठती है। शरद् फिर कहता है—याद है मुकुल ! वह दिन, जब हम सभी कौशाम्बी गये थे, सच कहता हूँ, उस दिन चकित हरिनी सी अलका तुम्हें ही देखती रही है और जिस दिन तुमने विभाग की गोष्ठी में कौशाम्बी के विषय में अपने विचार व्यक्त किये थे, उस दिन भी अलका तेरे विचारों से मुग्ध जैसी लग रही थी, फिर उस दिन की बात तो और ही संकेत देती है, जब हम सभी अचानक प्रोग्राम बनाकर लकी स्वीट मार्ट चल पड़े थे। अलका की भावमयी दशा जो कुछ भी संकेत दे रही है, वह बड़ा ही मनोनुकूल है, लेकिन तू तो ऐसा घुन्ना है, गाऊघप्प है कि कुछ कहता ही नहीं।

शरद् की बातों से मुख में रखी टाफी के समान रस मिल रहा था और उसकी बातों का आनंद लेता हुआ मुकुल डॉ० नरेन्द्र के बँगले पर पहुँच जाता है।

□

[१५]

अलका के हृदय में सम्भला समीर के स्पर्श सी सिहरन बार बार अनुभव हो रही थी, शालिनी के विषय में सोचती है और मुकुल को घर बुलाने के उसके आग्रह को याद करती है, तो शालिनी के प्रति अजीब सी स्नेहसिक्त भावना उसके हृदय में उठने लगती है, लेकिन अलका को परसों बरसों सा लग रहा था। मन में यह सोचती थी कि मुकुल के आने पर उससे "यह पूछूँगा", "वह पूछूँगी" और कैसे कैसे स्वागत करूँगी, लेकिन वह अपनी समस्त भावनाओं पर स्वत एक प्रश्न चिह्न लगा रही थी, "माँ, शालू और पापा के सामने यह सब कैसे कर सकूगी ?" अलका का मन तो कभी व्यग्रता का घोड़दुग बन जाता था और कभी सहजता की शिखर श्रेणी।

कई बार तो उसने सोचा कि वह अपनी सहेलियों में से एकाध को बुला ले, फिर सोचती है कि वह जाने क्या सोचेंगी, यह सोचकर अलका किसी अन्य दोस्त को भी बुलाने का साहस नहीं जुटा पा रही थी।

सब कुछ चाहते हुए भी अलका के समक्ष यह कठिनाई थी कि जहाँ कल्पना में बैठे मुकुल से वह घण्टों बातें करने की तैयारी करती थी, वहीं मुकुल को सामने देखकर भरपूर नयनों से वीक्षण करने में भी उसे पुलक, रोमाञ्च और भय हो जाता था, घबराहट इतनी होने लगती थी कि उसका शरीर कम्पित होने लगता था; इतना ही नहीं इस कम्प का प्रभाव यह होता था कि उसकी वाणी भी कम्प से युक्त होकर एक अद्भुत विह्वलता व्यक्त कर देती थी, इसीलिए

अलका कभी भी किसी के सामने कुछ भी मुकुल से नही कहना चाहती थी।

परसो की प्रतीक्षा समाप्त हुई परसो आज बनकर उदग्र उत्कण्ठा के साथ आया। प्रात कालीन पवन की अठखेलिया से चटकती हुई पुष्प कलियो के समान अलका की भी हृदयकली खिल उठी थी। सुबह ही शालिनी को बुलाकर उसने कहा— शालू! माँ को तू अपने द्वारा दिये गये निमंत्रण की याद दिला दे और पापा से भी कह दे।" शालिनी ने उत्तर दिया —"दीदी! मुझे तो याद है, कि तु ऐसा न हो कि आपके सहपाठी महोदय ही न भूल जायें। अच्छा होगा, दी, आप क्लास म किसी समय उन्हें याद दिला दें।'

कभी-कभी सुकोमल हृदय स देशवाहक बनकर वह साहस कर बैठता है, जो स्वय चाहकर भी व्यक्ति युगो तक नही कर पाता। शालिनी की सलाह उसे मन भा गयी, कि तु जब जब वह कल्पना करती कि इस तरह से मुकुल से कहूँगी—हा, यही तरीका ठीक होगा —तब तब उसे एक गुदगुदी सी महसूस होती। अलका ने सोचा— याद दिलाना आवश्यक है हो सकता है याद ही न हो। कहने मे तो कुछ भी नही रखा था, कि तु अलका को सबसे अधिक कठिनाई तो यह लग रही थी कि कैसे और क्या कहूँगी?

विश्वविद्यालय जाते समय शालू एक बार फिर कह गयी कि दीदी अवश्य याद दिला दीजिएगा। अलका ने कुछ कहा नही चुप रही। वह बार बार यह सोचती रही कि अगर आज मुकुल विश्वविद्यालय ही न आये तो फिर क्या करेगी? घर से जैसे ही विश्वविद्यालय के लिए वह निकली, घर के गेट से बाहर आती हुई उसकी सहपाठिनी दीपा मिल गयी। दीपा को देखकर उसे बडी प्रसन्नता की अनुभूति हुई। अलका ने पूँछा कि कैसे इतने सबेरे सबेरे? दीपा ने बताया कि

आज मूड मे ही आ गया कि अलका के साथ विश्वविद्यालय जाते हैं, बस इधर से ही चली आयी। आओ चलें। कुछ दूर जाकर दोनों ने एक रिक्शा कर लिया।

रिक्शे के चलते ही रिक्शे की स्पीड कम किन्तु दीपा कुछ अधिक ही बोलने लगी। अलका चुप रही—दीपा की बात सुनती रही। अचानक दीपा को महसूस हुआ कि अलका कुछ खोयी-खोयी सी किसी ताने बाने में उलझी है तो उसने पूछा लिया—"अलका! क्या बात है? कहाँ उड रही है?" अलका ने उत्तर दिया—"चिड़िया जैसी तो तू ही चहक रही है, मुझे डर लग रहा है कि तू एम० ए० भर पूरा साथ देती भी है?" दीपा इस पर तुनक गयी— 'तेरी यही बात तो खराब लगती है, जब कुछ पूछो तो महारानी जी इधर उधर की बात पूछने वालों के सिर पर ही दे मारेंगी और अपना एयरकन्डीशन्ड सी बनी रहेगी।'

अलका ने सोचा दीपा कुछ फील कर गयी है तो उसने कहा—"तू तो क्रैक है पक्की, मैंने क्या कह दिया जो इतना फील कर गयी, मैं तो तेरी सब बातें सुन रही थी, दीपा प्रसन्न हो गयी, उसने फिर बोलना शुरू कर दिया—"यार! तेरी चुप्पी से मुझे कोई तकलीफ थोड़ी है, कभी कभी बस यही लगता है कि कहीं तू किसी घुटन में तो नहीं है। कुछ लोग चोट खाकर कसकते रहते हैं कराहते भी नहीं, उन्हें बड़ी पीड़ा होती है, किन्तु किसी को अपनी चोट का राज बताते फिर भी नहीं, इसलिए मैं तुझसे पूछती हूँ कि कहीं कोई बात तो नहीं।'

एक बार तो अलका ने सोचा कि वह अपने मन की सभी अनुभूतियों को दीपा से बता ही दे, किन्तु तभी विश्वविद्यालय का मुख्य द्वार आ गया। दोनो ही चुप हो गयी। अलका को फिर याद आयी कि उसे मुकुल को याद दिलाना है तो एक बार कँपकँपी सी महसूस

होने लगी। कक्षा मे प्रोफेसर महोदय का व्याख्यान चलता रहा और अलका के मन मे शालिनी का स देश मुकुल से कहने का रिहसल। इसी बीच चपरासी कक्षा मे एक सूचना लेकर आया। प्रोफेसर महादय ने सूचित किया कि अध्यक्ष महोदय ने मुकुल और अलका को अपने कक्ष मे बुलाया है। साढे १२ बजे उनके कक्ष मे पहुँच जायें। दोना ही आश्चय एव कौतूहल से परिपूण थे कि बात क्या हो सकती है ?

□

[१६]

विभागाध्यक्ष महोदय के कक्ष के पास जाकर मुकुल प्रतीक्षा करने लगा, तब तक अलका भी आदेशानुसार आ गयी। चपरासी ने जाकर विभागाध्यक्ष को सूचना दी कि दोनो ही आहूत छात्र छात्रा आ गये हैं। अध्यक्ष महोदय ने भीतर बुला लिया और आमन्त्रित करने के विषय मे बताने लगे कि अगले सप्ताह अपने विभाग मे एक सेमिनार होने जा रहा है, जिसमे भाग लेने के लिय बाहरी विद्वान् एव अनुसन्धानकर्त्ता आ रहे है, हम चाहते है इतने म ही टलीफान की आवाज आती है, चपरासी सुनकर बताता है कि सर! २ मिनट के लिए डीन साहब आपको अपने प्रकोष्ठ मे बुला रहे हैं। अध्यक्ष महोदय ने अपनी बात को बीच मे ही छोडते हुए अलका तथा मुकुल स कहा— "आप लाग दस मिनट प्रतीक्षा करें, यदि इससे अधिक विलम्ब हो तो अपनी कक्षा मे चले जाइयेगा। आने पर मैं फिर बुला लूँगा—बात बहुत आवश्यक है। अध्यक्ष महोदय इतना कहकर खडे हो गये। दोनो—अलका, मुकुल भी उनके सम्मान मे खडे हो गये।

अलका और मुकुल पुन बैठ गये वे जानते थे कि इस कक्ष म १० मिनट तक कोई नही आने वाला है, एका त पाकर दोनो के हृदय की धडकन बढ गयी, मुकुल भूतपूव विभागाध्यक्षा का चित्र देखने लगा और अलका कभी छत दखती, तो कभी अपना आँचल सम्हालती, कभी छिप छिप कर मुकुल को देखने का प्रयास करती एव नीरव मौन, कहीं कोई आवाज नही, मुकुल ने एक उडती हुई दृष्टि अलका पर डाली, दोना के नयन उलझ गये। अनजाने अपलक हो गये, हृदयतल पर न जाने क्यो एकदम निष्पन्दता-सी हो गयी—सहसा दोनों ही को कुछ झेंप, कुछ लाज जैसी लगी और एक साथ इधर-

उधर देखने लगे। अलका तो सोच रही थी कि इसी समय शाम को घर आने की याद दिला दूँ, फिर साहस किया, आँचल सँजोया, धीरे धीरे अँगुलियाँ चटकायीं, हाथ सहलाया, अधर स्फुटित हुआ, किंतु साहस उखड़ गया, मुकुल चुप था, अलका फिर देखने लगी मुकुल को नयनकोर से, मुकुल देख रहा था अलका को अपने नेत्रदल के त्रिभाग से, हृदय में अब उमड़ने लगा था—एक विपुल जलधि का उल्लास, इतने में ही अलका के हृदय महोदधि में एक ज्वार उठता है उफनता है उजाल तरंग आकाश में सुशोभित निशीथिनीनाथ को छूना चाहती है, अलका का भी चाँद सामने बैठा है, और वह एक साँस में कह जाती है—"आपको तो आज शालिनी का निमंत्रण याद होगा न "

फिर मौन, मुकुल मौन, प्रकोष्ठ मौन, पवन मौन लेकिन हृदय दोनों के ही व्यग्र, चपल और अशांत! अलका तो उस चकोरी के सदृश थी मानो उसने अपनी बात कहकर शशि की शीतल रश्मियों के अमृत स्पर्श से अपने को अभिषिक्त कर लिया हो। मुकुल ने अपने को सहेजा, उसाँस भरी, नयनतारिका नाच गयी, निमीलित हुई, वाणी का आविर्भाव हुआ—"हाँ, कैसे भूल सकता हूँ, यह भी कोई भूलने की बात है। अवश्य जाऊँगा शाम को, साथ में इजाजत हो तो शरद् को भी लेता आऊँ ?"

अलका कुछ कहती तभी विभागाध्यक्ष महोदय वापस आ गये और उन्होंने सेमिनार में उन लोगों के सहयोग की अपेक्षा की। दोनों ने आश्वासन दिया और क्लासरूम में चले आये।

× × ×

कोई शाम उदास होती है, कोई शाम संदली सुगंधि सी महमहाती रहती है, कोई शाम महुए के समान रसभरे पुष्प टपकाती रहती है, कोई शाम बीत जाती है पलक झपकाते और कोई शाम

बीतने ही नही आती—बढती ही जाती है बढती ही जाती है द्रोपदी की सारी की तरह।

आज की शाम बिल्कुल द्रोपदी की साड़ी की तरह बढ रही है, निर तर बढ रही है, बीतने का नाम नही लेती, शालिनी ड्राइङ्गरूमको बारम्बार देखती है, गेट को देखती है और कई बार वह अलका से पूँछ चुकी है कि दीदी आपने सदेश कहा है न ? याद दिला दिया है न ! शालिनी को गीत सुनने की तम ना थी—वह व्यग्र तो नहीं, उत्साहित, मात्रा से कुछ अधिक थी और ज्यों ज्यो समय आगे को बढ़ रहा था अलका व्यग्र होती जा रही थी उसे मुकुल का दिया हुआ आश्वासन याद आ रहा था हाँ, कैसे भूल सकता हूँ यह भी कोई भूलने की बात है '

लेकिन ५ १५ हो गये थे अभी तक मुकुल का पता नही, हृदय सरिता की नीरवधारा म बीच बीच मे ककड़ी जैसा कोई फेंक देता था और अलका के शा त हृदय मे एक व्यग्रता की तरग उठती थी, उसे मन ही मन भूझलाहट जैसी लगती थी, सोचती थी कि मुकुल आता है या नही आता, उसकी दृष्टि भी अनायास ही गेट की ओर चली जाती थी। मन मे जैसी कुढन आज हो रही थी शायद ही उसे कभी ऐसी दशा का अनुभव हुआ हो।

अत्यधिक व्यग्रता स देह का बीजारोपण करती है, मन के एक कोने मे मुकुल के न आने की आशका मशकदश सी उठ जाती थी किन्तु मशकदश पर कर किसलय के कोमल स्पश सी आशामयी अनुभूति होती थी कि आयेगा मुकुल अवश्य आयेगा।

इसी समय गेट पर मुकुल और शरद दीख पडे। शालिनी चहक उठी "मम्मी, पापा, दीदी वे लोग आ गये" और अलका की मुरझाई मुखकान्ति पर सावनी फुहार की सी एक मधुर बौछार पड़ गयी, अलका के नयनदल विकसित हो गये, ओष्ठ विद्रुम मे अरुणिमा

प्रगाढ़ हो गयी, उसकी वेणी स्वत वाम उरोज पर बल खाने लगी, अब हृदय न तो शान्त है और न अशान्त, फिर भी उतना कम्प हो ही रहा है, जो उरोजों पर एक मादक कँपकँपी का सचार कर रहा है।

अलका देख रही थी—मुकुल को और मुकुल चकित हिरन सा पूरे बँगले पर इधर उधर दृष्टिपात कर रहा था, अलका सोच रही थी मुकुल के विषय में, मुकुल के विलम्ब करने से वह कितना व्यग्र हो रही थी, अपनी मनोदशा को न वह व्यक्त कर पा रही थी और न पूर्ण नियन्त्रित ही कर पा रही थी। अलका तो मुकुल को निविड एकान्त से अवलोकित कर रही थी, किन्तु मुकुल इधर उधर अलका की एक छवि की झलक पाने के लिये अवलोकित ही करता रहा। आकुलता भरे हृदय को वह नियन्त्रित कर शान्त सा शरद् के साथ बरामदे तक आ गया, भीतर से दौडती हुई शालिनी ने आकर स्वागत किया। सुसज्जित ड्राइङ्गरूम म मुकुल तथा शरद् को बैठाकर सभी को बुलाने वह भीतर चली गयी।

□

[१७]

प्रो० नरेन्द्र के ड्राइङ्गरूम मे उनका पूरा परिवार और शरद् तथा मुकुल बैठे थे। नाश्ते के बाद एक एक करके मुकुल ने चार गीत अब तक सुना दिय थे। हर एक गीत नये भाव, नयी लोच और नयी रागिनी के साथ मुकुल ने प्रस्तुत किया। सभी उसके गीतो और उसकी लय से अत्य त आह्लादित थे। कुछ वातावरण शान्त सा हो रहा था, कि तु न नीरवता थी और न कोलाहल बस शान्त था सुखद अनुभूति म। मुकुल कही दूर, प्रो० नरेन्द्र के ड्राइङ्गरूम से दूर सोच रहा था शरद् चुप था, प्रो० साहब शा त थे, प्रेमावती प्रसन्न थी, शालिनी अत्यधिक खुश थी, और अलका भी उत्कण्ठित—प्यासी गीत रस की, अलका ने इस शान्त वातावरण म अपनी प्यास को प्रकट ही कर दिया—"सुनिये ! एक गीत और सुना दीजिए प्लीज !" आग्रह मुकुल से किया मानो जलतरग से सुमधुर लहर उठी हो।

मुकुल अपने म लौट आया और उसने शा त वातावरण को देखकर अनुभव किया कि अलका के आग्रह की प्रतिक्रिया की मुझसे प्रतीक्षा की जा रही है बरसने के पहले निःशब्द बादलों की तरह वह पुनः गीत केवल मुझे समर्पित है, मुकुल गीत गा रहा था, कि तु अनुभव कर रहा था कि सुकुमार अमन्द रसनिभर कालिका की पुष्पांजलि पर पुष्पांजलि अपनी मनभावनी प्रणयदेवी को समर्पित कर रहा है, शालिनी इस गीत से उत्साह की अद्भुत सीमा पर पहुँच गयी, प्रो० नरेन्द्र एव उनकी पत्नी प्रेमावती जीवन म प्रथम बार इतने मनोयोग से तन्मय होकर किसी गीताकार को सुन रहे थे, अलका तो न जाने कहाँ भाव मग्न हो गयी, किसी अमृततटिनी मे अवगाहन कर रही थी,

क्या सोच रही थी, शायद वह स्वय न व्यक्त कर सके, शरद् मुकुल के गीतो से आज कुछ और ही आन द पा रहा था, वैसे उसने कई बार मुकुल के गीत सुने थे, कि तु आज कुछ इन गीतो मे, मुकुल की रागिनी मे उसे नयी अनुभूति प्राप्त हो रही थी ।

प्यास से गला सूखता है—सवसाधारण का; प्यास से कण्ठ फूटता है—पपिहरे का, काश, स्वातीनक्षत्र कभी न आता तो जितना ही प्यास से आकुल होगा पपीहा, उतना ही उसका कण्ठ दद को थिरकन लेकर मृदुल रागिनी से परिपूण अपनी प्यास की चाह को रसमाधुरी से घोल सकेगा । मुकुल प्यासा था—अलका की 'प्रणयमदिरा का, उसकी रसघातुल चञ्चल चतुर चितवन का, उसकी कलकण्ठी मयूरी की मुग्धा केका का, कणविश्रा त नयनो के तीखे प्रहार से आहत रक्ताभ उल्लसित कपोलपाली का, केवड़े के सुरभित मकर द की निष्पन्द बि दुओ को लेकर प्रवाहित होते हुये श्रा त मदिरपवन का विश्राम-स्थली रक्तपाटल की प्रथमकलिका के अ तस्थ पल्लव की प्रभा समष्ट उसकी अधरका ति का ।

ऐसी ही प्यास से व्याकुल भुकुल ने गीत की रागिनी छेड़ दी । स्वाती की प्रथम बि दु चातक की प्यास को शा त नहीं करती अपितु उस और तृषा त करती है । अलका के आग्रह ने मुकुल का [illegible] प्यास की आकुलता से भर दिया जो युगो से शशिप्रभा को देखकर बेचारा चकोर अनुभव करता है, जो सुरभि सरस अलस [illegible] के प्रथम विनाश को देखकर भ्रमर महसूस करता है, जो मञ्जुल [illegible] का [illegible] मञ्जरियो से विलसित रमणीय वाटिका को देखकर कोकिल [illegible] करती है और कृपा के सरकत मुकुट [illegible] हुए [illegible] राजमुकुट से विभूषित [illegible] को देखकर जो कमल अनुभव [illegible]

अलका—बसन्त की—[illegible] के कारण; मुकुलित [illegible] की उपस्थिति के कारण, डूबती जा रही थी—[illegible]

उद्दाम उद्वेग के कारण, मुग्ध थी मुकुल के गीत के रमणीय प्रस्तवन के कारण।

कौन क्या सोच रहा था ? कौन कहाँ था ? किसी को भी होश नहीं था। गीतकार अनोखी सृष्टि मे विहार कर रहा था। श्रोतागण गीत की मधुर तरंगिणी की उफनती हुई लहरिकाओ मे अवगाहन कर रहे थे। सभी चुप—ड्राइङ्गरूम भी—नीरव, पूरा परिवेश शान्त, बाह्य वातावरण स्थिर, किन्तु सभी के अन्तस्तल मे एक अनुभूति उमड घुमड रही थी,—आलोचक सम्राट् बहुत ही तीव्र प्रहार कर चुके थे—कविता पर और कविभावना पर।

प्रेमावती ने कभी जीवन मे गीतकार की कलगीतिका सुनी ही नहीं थी—उस दिन प्रो० जोशी के यहाँ अशान्त वातावरण मे मुकुल का ही गीत सुना था, किन्तु मुकुल के उस दिन के गीत और आज के गीतो म कोई तुलना सम्भव ही नही थी। प्रेमावती को मुकुल की गीतकला सर्वथा अनोखी और मजु को मनोहारी लगी। शालिनी का उत्साह नभस्पर्श कर रहा था, क्योंकि समस्त आयोजन उसके आग्रह का परिणाम था। वह तो बहुत कुछ मन मे सजोये है, प्रातःकाल की प्रतीक्षा करने वाले पक्षिकण्ठ के समान कोलाहल कलरव के लिए आकुल, किन्तु शान्त है। वह तो पापा से चहकेगी, मम्मी से हाँकेगी और विरुदावली सुनायेगी अपनी दीदा को, रहा सहा हिसाब सखिया के बीच प्रकट करेगी।

और अलका—हृदय की गहराई म अतुल सिहरन अनुभव करती तो उसकी अर्धमुकुलित नयनकुमुदिनी चोरी सी एक झलक की लालसा लिए अपने चन्दा की ओर दौड पडती, मन की गहराई पाताल से भी अधिक है, उसकी थाह अथाह है, किन्तु मन सपाट भी है, समतल भी है और सहज सवेद्य भी है। अलका को आज जो कुछ भी

अनुभव हुआ, वह उसके लिये सर्वथा अपरिचित नहीं था, बस कौशाम्बी के प्रथम अनुभव का विकास प्रतीत हुआ।

शरद् की दृष्टि अपनी घड़ी पर गयी। ६.४० रात्रि का समय हो रहा था, उसने कहा—अरे! समय बहुत बीत गया। सभी को शरद् के कथन के प्रति एक तीखापन प्रतीत हुआ, किन्तु समय की सीमा तो मानव जीवन के प्रत्येक कार्यक्रम की बाध्यता और अनिवार्यता है। मुकुल बिना कुछ बोले ही चलने का उपक्रम करने लगा। देखते रहे—नरेन्द्र, देखती रही—प्रेमावती, शान्त रही—अलका, किन्तु कार्यक्रम संयोजिका शालिनी कैसे शान्त रहती, आज वह सहज औपचारिकता भी भूल गयी, केवल याद थी—शालिनी को, उसने अनुग्रह व्यक्त किया, गीता भरी शाम की सुहानी मस्ती को तरंगित करने का व्यक्त किया—आभार। फिर तो स्त्री को सब कुछ याद आ गया। मुकुल शान्त—अचञ्चल था। नरेन्द्र और प्रेमावती ने बार बार उसकी प्रशंसा की तथा फिर आने का आग्रह किया।

□

[१८]

मुकुल और शरद् अभिवादन—प्रत्यभिवादन करके चल पड़े। मुकुल—शान्त था, किन्तु शरद् अपने पुलक को नियन्त्रित न कर सका। उसने मुकुल की प्रशंसा में कहा—"मुकुल ! आज तो तेरे गीतों की रागिनी ने सबको मुग्ध ही कर दिया, किसी को कुछ होश ही नहीं रहा—गीतों की रसरागिनी का चषक इतना मादक था कि सब पीकर मदिर पुलकावली से परिपूर्ण होकर पूर्णत आह्लादित हो उठे थे।"

शरद् की बातों को मुकुल सुन रहा था, कुछ नहीं सुन रहा था —यथार्थ जो स्वानुभूत होता है, उसे सुनकर कौन नहीं स्वीकार करेगा ? मुकुल को कुछ खोया-खोया सा देखकर शरद् ने पुनः कहना प्रारम्भ किया—"यार मुकुल ! मुझे तो बार बार तुम्हारे गीतों की अनुगूंज विभोर कर रही है और आँखों में उत्साहमुग्धा शालिनी तथा स्नेहार्द्र हृदय विह्वला अलका की छवि उभर रही है। तूने देखा या नहीं देखा—मैं नहीं जानता, किन्तु मित्र ! अलका को हृदयसरि को अपने उद्वेग को नियन्त्रित करने के लिए विपुल प्रयास करना पड़ा है। अलका कितनी गम्भीर है, कभी भी सखियों के मध्य उसे चंचल नहीं देखा। शुभ्रहृदया, मसृणकमलिनी की सुषमा से अभिभूषित प्रतीत होती है मधुकरों का निनाद उसके कण्ठ में भरा है, किन्तु अपने को नियन्त्रित करके कभी भी व्यक्त नहीं करती।"

अलका की बातों को शरद् व्यक्त कर रहा था और मुकुल किसी सर्वथा नूतन रहस्य से उद्घाटित होने की कल्पना में विभोर होकर तन्मयता से शरद् की बातों को सुन रहा था। धीरे धीरे दोनों मुकुल

के आवास पर पहुँच जाते है। मुकुल अपने आप अनुभव कर रहा था कि जीवनपथ का एक सुरम्य विश्राम व्यतीत हो चुका है।

आज के पहले उसने कई बार अपने गीतों की तान छेड़ी थी, किन्तु आज के जैसे ललकभरे श्रोता उसे कभी नही मिले थे। मुकुल के हृदय मे सुनाने की चाह थी और अलका के मन मे सुनने की उत्कट लालच थी,—शालिनी का उत्साह, प्रो० नरेन्द्र की भाव विह्वलता, प्रेमावती की तन्मयता, शरद् की उपस्थिति और अलका की सस्पृह पुलकावली ने मुकुल को मधुर प्रेरणा प्रदान की थी, कलाकार की प्रशंसा और गीतकार को सुकोमल श्रद्धा निरन्तर उत्साहित करती है। शरद् थोड़ी देर तक मुकुल के आवास पर रुककर अपने घर चला गया।

एकान्त—रहस्य छिपाता है—विश्व का, लेकिन प्रणयिहृदय मे गूढतम एव अन्तरतम भावो की पोटली उधेडकर खोलने मे तनिक भी सकोच नही करता। शरद् के जाते ही मुकुल एक लम्बा उसाँस भरता है और अब अपनी दृष्टि से तथा अपनी कल्पना से पूरे आयोजन की समीक्षा करता है।

प्रो० नरेन्द्र के यहाँ के स्वागत मे प्रत्यक्षत शालिनी का ही सम्पूर्ण उत्साह प्रदर्शित हो रहा था, किन्तु हर एक स्वागतविधि म पृष्ठभूमि कुछ सशक्त, कुछ निर्दिष्ट और कुछ इतनी चुस्त प्रतीत हो रही थी कि अलका का निगूहित निर्देशन स्वत आभासित हो उठता था। गीत सुनने वाली सहृदया अलका की भावोत्सुकता—किसी भी गीतकार को प्रोत्साहित करने के लिए—सचमुच मे अद्भुत था, फिर मुकुल की तो बात ही कुछ और थी। अलका का एक गीत और सुनाने का आग्रह—नलिन पटल पर अविरल रसप्यासी मधुकरी के सहसा आविर्भूत मधुर गुञ्जन की तरह—मुकुल को भावविह्वल बना गया

माधव समीर का मृदु प्रवाह मधुकर कण्ठ मे सरस वाग्धारा का आविर्भाव करता है, स्वातीनक्षत्र की प्रथम सलिल बिन्दु पपिहरे के कण्ठ को सुधारागिनी प्रदान करती है, रसालमञ्जरी की प्रथम कलिका कोकिल कण्ठ को अगर रसनिर्झरिणी समर्पित करती है तो मुकुल को अलका की आग्रह वाणी ने अनूठी प्रेरणा प्रदान की थी। मुकुल को प्रतीत हो रहा था कि उसकी कल्पनालोक की देवी ने, उसकी स्वप्न परी ने, उसकी भावप्रणयिनी ने उससे प्रथम-याचना की है। प्रिया का प्रथम याचन—किसी को भी अपनी शक्ति का अतिक्रमण करके भी पूर्ण करने को उत्प्रेरित करता है।

शालिनी का आग्रह कर्णपुट को आप्यायित करने के लिए था, अलका का आग्रह हृदय की सुकुमार मन्दिर अनुभूतियो की मञ्जुल कल्पनाओ, भावनाओ एव तरङ्गो के साथ तन्मयता स्थापित करने के लिए था। मुकुल का हृदय जिस उत्साह के साथ गीत को प्रस्तुत कर रहा था, गीतकार मे वह उत्साह यदा कदा ही आविर्भूत होता है।

निशीथिनी के मतवाले चरण बढ़ते चले जा रहे थे और मुकुल शबनम सुवासित दूर्वादल की हरीतिमा से अनुरञ्जित प्रात काल की प्रतीक्षा मे सो नही सका। सोने का प्रयास करता तो अधखिला कमलिनी की मृदुल मधुर अलका की छवि उसके स्वप्न जगत् म मच रण करने लगती और मुकुल अनुभव करता कि अलका उससे आग्रह कर रही है कि मैं आपकी कल्पना म आत्मलीन होकर जग रही हूँ और आप मुझे भूलकर सो रहे हैं।

× × ×

मुकुल और शरद् के जाने पर प्रो० नरेन्द्र का पूरा परिवार पुन ड्राइग रूम मे बैठ गया—मुकुल के गीतो की प्रशसा प्रारम्भ हुई।

शालिनी तो अपने उत्साह को नियन्त्रित नही कर पा रही थी—किसी को बोलने का बिना अवसर दिये, वह निर तर बोलती जा रही थी, प्रेमावती और प्रो० नरेन्द्र शालिनी की प्रत्येक बात का अनुमोदन कर रहे थे—शालिनी कह रही थी "पापा, आज का जैसा गीत कार्यक्रम मैंने प्रयाग सगीत समिति के वार्षिकोत्सव मे भी नही सुना। नरे द्र इतना तो नही कह सकते थे, कि तु उसे अवश्य ही गीतकार मुकुल ने प्रभावित कर दिया था। शालिनी फिर अपनी मम्मी से मुकुल की प्रशसा करने लगी। अलका उठकर बीच मे ही अपने प्रकोष्ठ म आ गई थी। मम्मी पापा को छोडकर शालिनी अपनी दीदी के पास आकर कहने लगी थी "दीदी तुम कितनी लकी हो—तुम्हे मुकुल जैसा सहपाठी मिला है, अगर मैं मुकुल की क्लासफैलो होती तो रोज रोज उससे गीत सुनती ' "

अलका इस समय एका त चाहती थी, उसने कहा—"पगली तू रात भर बकवास ही करेगी या सोयेगी भी, कितनी रात बीत चुकी है, कुछ होश भी है ?" न जाने शालिनी को क्या सूझा वह कमरे की स्विच को आफ करती हुई तुर त वहाँ से चली आयी। ड्राइग रूम की ओर देखा तो मम्मी पापा अभी कुछ बात ही कर थे। वह अपने रूम मे चली गई।

सघन निशीथ मे प्रकोष्ठ अधकार की तहो मे डूब गया—अलका को सहज राहत सी प्राप्त हुई, प्रकाश म वह सदैव चकित हिरनी सी आशकित रहती थी कि कही कोई उस मृदुल वदन पटल पर तिरती हुई लाजरेखा को अवलोकित न कर रहा हो। अपने पलग पर लटी हुई अलका के नयनदल पूणत प्रफुल्ल हो उठे, उनमे निशीथ की सहचरी नीद का प्रभाव नही था, उनमे आलस की रेखा नहीं थी और उनम शयन की भी आकाक्षा नही थी—भावना की कमनीय स्रोतस्विनी उमडकर गीतकार मुकुल की प्रियदर्शनी छवि को भावसरि से सद्म

स्थापित करना चाह रही थी। मुकुल के अधरपटल से तिरते गीत-शब्द पारिजात मञ्जरियों के सदृश अद्भुत रस सृष्टि आविर्भूत कर रहे थे, अलका उस समग्र परिवेश के प्रति मादक कल्पना में डूबती जा रही थी—नींद का झोंका कब आकर उसे तन्द्रिल बना गया कुछ पता ही नहीं।

□

[१६]

मुकुल विश्वविद्यालय से डॉ जोशी के बँगले पर पहुँचा था—डॉ साहब से कुछ बातें करने के बाद वह स्टडीरूम मे जाकर अध्ययन मे तल्लीन हो गया—३ घटे बाद जब वह स्टडीरूम से निकला तो उसे पता चला कि प्रो० नरेन्द्र आये थे और वे ही काफी देर तक बातें करने के पश्चात् डॉ जोशी को अपने साथ कही ले गये हैं। मुकुल के मन मे थोडी सी उत्कण्ठा जरूर हुई, लेकिन अस्वाभाविक कुछ नहीं लगा, क्योकि डॉ जोशी और प्रो० नरेन्द्र घनिष्ठ मित्र थे—अत इन लोगो के साधारण से साधारण कार्यक्रमो मे भी साहचय रहता तो कुछ अद्भुत नही होता।

राघवेश के प्रस्थान करने के बाद से प्रो० नरेन्द्र एव प्रेमावती कुछ चिन्तित से रहने लगे थे, क्योकि उन्हें अब अलका के विवाह की चिन्ता ने घेर लिया था। प्राय पति पत्नी इस विषय पर बातें करते रहते थे, गीत कार्यक्रम के दिन भी प्रो० नरेन्द्र तथा प्रेमावती अलका के विषय मे ही देर तक बातें करते रहे थे। प्रेमावती की स्पष्ट इच्छा थी कि अलका के लिए, यदि मुकुल तथा अलका को आपत्ति न होती, मुकुल से सम्बन्ध तय करके शीघ्रता से अलका का विवाह सम्पन्न कर लिया जाय।

मम्मी और पापा प्राय जब एकान्त मे इस तरह के वार्तालाप करते रहते थे, किन्तु अलका तथा शालिनी को इस वार्तालाप का कुछ भी भान नहीं हो रहा था। वह निश्चिन्त सी घरेलू वार्तालाप समझ कर ध्यान नहीं दे रही थी। समय की गति बढ़ती जा रही थी—गीत कार्यक्रम के आयोजन के बाद से अलका और मुकुल के बीच की झिझक

कुछ समाप्त हो गयी थी, क्योंकि ये कभी कभी आपस में बातें भी करने लगे थे। अलका की सखियाँ ताने भी मारने लगी थीं, किन्तु सखियों की बात मृदु परिहास तक ही सीमित थी।

तीन दिन से नीलिमा विश्वविद्यालय नहीं आ रही थी—सभी थोड़ा बहुत उसके विषय में चिंतित थे कि बात क्या है? दीपा को वहाँ जाने के लिए सभी ने कहा कि तू जाकर आज पता लगाना कि नीलिमा आजकल विश्वविद्यालय क्यों नहीं आ रह है। दीपा अपने घर पहुँची ही थी कि उसे नीलिमा की शादी का निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ। उसे अत्यधिक ईर्षानुभूति हुई। दूसरे दिन विश्वविद्यालय से कई सखियों के साथ वह नीलिमा के यहाँ गयी—वहाँ उसके विवाह की भव्य तैयारियाँ चल रही थी, नीलिमा अब भी गम्भीर नहीं—वाचाल थी—सबसे कह रही थी—"देखा, सबसे पहले मैंने हाथ मार लिया" —सभी सखियाँ हँसने लगी।

मैरेज के दिन तो दीपा, विजया, अलका, शालिनी—सभी उपस्थित थे, सपरिवार डॉ० जोशी एवं प्रो० नरेन्द्र भी उपस्थित थ। प्रो० नरेन्द्र के मन में बार बार विचार उभर रहा था, कभी तो उन्हें राघवेश का कथन याद आता और कभी उन्हें नीलिमा की मैरेज से दृढ़ निश्चिय होता कि अब शीघ्र ही अलका की मैरेज कर देनी चाहिए। नीलिमा की मैरेज में अपनी शुभकामना समर्पित करने के लिए शरद एवं कुछ सहपाठियों के साथ मुकुल भी उपस्थित था—प्रो० जोशी एवं प्रो० नरेन्द्र को उसने सादर अभिवादन किया। रात्रि में आयोजन के समाप्त होने तक काफी देर हो गई थी। चलते समय प्रो० नरेन्द्र ने मुकुल एवं शरद् से कहा—"मेरे साथ ही चलो घर तक तुम्हें छोड़ देंगे।" प्रो० नरेन्द्र ने मुकुल एवं शरद् के आग्रह पर उन्हें चौक चौराहे पर छोड़ दिया। चलते चलते प्रो० नरेन्द्र ने मुकुल से घर आने का आग्रह किया। शालिनी ने समय ले लिया। अगले दिन ही शरद् और मुकुल ने आने का आश्वासन दिया।

प्रो० नरेन्द्र बार बार नीलिमा की शादी से प्रेरित हो रहे थे, चिंतित एवं उद्विग्न हो रहे थे कि उन्हें भी शीघ्र अलका की शादी सम्पन्न कर देनी चाहिए। चिंतामग्न प्रो० नरेन्द्र सोचते थे, कल्पना करते थे, विचार करते थे, किन्तु कभी सामाजिक रीतियो के उत्तरदायित्व का महत्वपूर्ण पक्ष उनके सामने अभी तक नहीं उपस्थित हुआ था, आज प्रश्न था कि उत्तरदायित्व के निर्वाह में किससे सहयोग लें, किससे कहें ? अन्ततः उन्होंने अपने अभिन्न मित्र प्रो० जोशी से कहने का निश्चय किया, और विचार विमर्श की योजना बनायी।

□

[२०]

अलका और शालिनी—मुकुल और शरद् के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। प्रो० नरेन्द्र को प्रात ही दिल्ली जाने का अचानक कार्यक्रम बनाना पड़ा। नीलिमा की मैरेज से वापस आते ही राघवेश का तार मिला था, जिसमे नरेन्द्र को तुरन्त दिल्ली आने के लिए बुलाया गया था। प्रो० नरेन्द्र तार पाकर चिन्तित हो गये, सोच रहे थे कि सहसा राघवेश के तार भेजने का क्या प्रयोजन होगा? प्रो० नरेन्द्र ने पत्नी से तार के विषय मे बताया तथा प्रात अपने दिल्ली जाने के कार्यक्रम को भी निश्चित कर दिया।

रात भर आशकाओ, तर्क वितर्क, ऊहापोह से घिरे प्रो० नरेन्द्र को नींद नही आ सकी। प्रात होते ही उन्होने दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। आज मुकुल शरद् के साथ बिल्कुल ठीक समय से आ गया। शालिनी ने मुकुल तथा ५५ [illegible] मे [illegible] ।पता। ने

ने खीचकर शालिनी की ओर देखा और शरद् की ओर मुखातिब होकर कहा—"नही ऐसी बात नही है, आप ही बताइये, क्या आप दिन भर पढते ही रहते हैं ?" अब शरद् क्या जवाब देता, चुप हो गया ।

अलका शरद् से बात करती ही जा रही थी किन्तु बीच बीच म नयनकोण मुकुल की एक झाँकी चुपके से ले ही लेते थे । मुकुल निश्चित होकर शरच्चन्द्रकाछवि का पान कर रहा था । उसे यह याद नही था कि वह किसी कम्पनी मे बैठा है । शालिनी ने मुकुल की कल्पना लहरिका मे कंकड डाल ही दी, उसने कहा— मुकुल भाई साहब ! आप और दीदी की जोडी अच्छी है ।" शालिनी के इस कथन का अथ शरद् को स्तब्ध कर गया, मुकुल उत्सुक हो गया, लेकिन इसने अलका को लाज की सिहरन से सकम्प कर दिया । सभी के कान खडे हो गये । शालिनी ने फिर कहा—'आप दोनों ही कम बोलते है, लगता है इतिहास पढते पढते आप लोग इतिहास की करुण घटनाओ पर मातम मनाने लगते हैं—" शालिनी और कुछ कहती, किन्तु अलका ने उसे भिडक दिया—'तू बहुत बकवास करने लगी है आने तो दे पापा से तेरी शिकायत करूँगी ।"

शालिनी कुछ चुप तो अवश्य हो गयी, किन्तु उसकी मुखकान्ति से स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि उसके ऊपर अलका की झिडकी का कोई खास असर नही है । मुकुल ने मन्द मुस्कान प्रस्फुटित करते हुए कहा— "शालिनी ! आखिर बेचारे उन सम्राटो के प्रति हम भी शोक न मनाये तो कौन मनायेगा ? अगर हम उनके प्रति शोक भावना न प्रकट करें तो वे रात को भूत बनकर क्या हमे डरायेंगे नहीं ?" मुकुल की बात से अलका की स्मितरेखा कुन्दकली के समान उल्लसित हो गयी । शरद् ठठाकर हँस पडा और शालिनी तो लोटपोट हो गयी ।

इस बीच प्रेमावती ने जलपान लाकर ड्राईगरूम मे रखा । सभी

[२०]

अलका और शालिनी—मुकुल और शरद् के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। प्रो० नरेन्द्र को प्रात ही दिल्ली जाने का अचानक कार्यक्रम बनाना पडा। नीलिमा की मैरेज से वापस आते ही राघवेश का तार मिला था, जिसमे नरेन्द्र को तुरन्त दिल्ली आने के लिए बुलाया गया था। प्रो० नरेन्द्र तार पाकर चिन्तित हो गये, सोच रहे थे कि सहसा राघवेश के तार भेजने का क्या प्रयोजन होगा? प्रो० नरेन्द्र ने पत्नी से तार के विषय मे बताया तथा प्रात अपने दिल्ली जाने के कार्यक्रम को भी निश्चित कर दिया।

रात भर आशकाओ, तर्क वितर्क, ऊहापोह से घिरे प्रो० नरेन्द्र को नीद नही आ सकी। प्रात होते ही उन्होने दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। आज मुकुल शरद् के साथ बिल्कुल ठीक समय से आ गया। शालिनी ने मुकुल तथा शरद् को ड्राइगरूम में बैठाया। प्रेमावती ने आकर बडे ही सम्मानित भाव से मुकुल को आशिर्वाद दिया, फिर जलपान व्यवस्था करने के लिए भीतर चली गयी। शालिनी ने अलका को मुकुल के आने की सूचना दी तो वह भी ड्राइगरूम मे आ गयी।

शरद् ने अलका से यू ही कहा—"कौन सा चैप्टिर पढ़ रही थीं?" आकस्मिक प्रश्न से कुछ झेंपती हुई अलका ने कहा—"पढ़ाई तो हो ही नही पा रही है, कुछ कुछ डिस्टरबेन्स लगा ही रहता है।" इस बार शालिनी ने बिना पूछे ही कहा—"नही भाई साहब! दीदी से घूमने के लिए, मार्केटिंग के लिए, अथवा कही भी जाने के लिए भी कहती हूँ, तो पढाई की व्यस्तता कहकर कभी भी साथ नही देती" शरद् ने कहा—"यह बात है, हम लोगों से झूठ बोला जा रहा है।" अलका

मे खीचकर शालिनी की ओर देखा और शरद् की ओर मुखातिब होकर कहा—"नही ऐसी बात नही है, आप ही बताइये, क्या आप दिन भर पढते ही रहते हैं ?" अब शरद् क्या जवाब देता, चुप हो गया।

अलका शरद् से बात करती हो जा रही थी किन्तु बीच बीच मे नयनकोण मुकुल की एक झाँकी चुपके से ले ही लेते थे। मुकुल निश्चित होकर शरच्चन्द्रिकाछवि का पान कर रहा था। उसे यह याद नही था कि वह किसी कम्पनी मे बैठा है। शालिनी ने मुकुल की कल्पना लहरिका मे कङ्कड डाल ही दी, उसने कहा—'मुकुल भाई साहब! आप और दीदी की जोडी अच्छी है।" शालिनी के इस कथन का अथ शरद् को स्तब्ध कर गया, मुकुल उत्सुक हो गया, लेकिन इसने अलका को लाज की सिहरन से सकम्प कर दिया। सभा के कान खडे हो गये। शालिनी ने फिर कहा—"आप दोनों ही कम बोलते हैं, लगता है इतिहास पढते पढते आप लोग इतिहास की करुण घटनाओं पर मातम मनाने लगते हैं—" शालिनी और कुछ कहती, किन्तु अलका ने उसे झिडक दिया—"तू बहुत बकवास करने लगी है आने तो दे पापा से तेरी शिकायत करूँगी।"

शालिनी कुछ चुप तो अवश्य हो गयी, किन्तु उसकी मुखकान्ति से स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि उसके ऊपर अलका की झिडकी का कोई खास असर नहीं है। मुकुल ने मन्द मुस्कान प्रस्फुटित करते हुए कहा—"शालिनी! आखिर बेचारे उन सम्राटों के प्रति हम भी शोक न मनाये तो कौन मनायेगा ? अगर हम उनके प्रति शोक भावना न प्रगट करें तो वे रात को भूत बनकर क्या हमे डरायेंगे नही ?' मुकुल की बात से अलका की स्मितरेखा कुन्दकली के समान उन्नमित हो गयी। शरद् ठठाकर हँस पडा और शालिनी तो लोटपोट हो गया।

इस बीच प्रेमावती ने जलपान लाकर ड्राइंगरूम मे रखा। सभी

लोगों को जलपान वितरित करके वहीं बैठ गयी। बच्चा के साथ वे वार्तालाप करती जा रही थी, सभी लोग श्रद्धापूर्वक उनके प्रति सम्मान-भावना से युक्त थे, किसी ने अचानक कॉलवेल बजायी शालिनी ने जाकर देखा और आकर बताया—'मम्मी पड़ोस की आण्टी आयी हैं''—प्रेमावती यह सुनकर ड्राइगरूम से चली गयी। घर के भीतर ही प्रागण मे पड़ोसिन के साथ बातचीत करने लगी।

प्रेमावती के जाने के बाद ड्राइंगरूम मे कुछ स्तब्धता सी छा गयी। शालिनी चुप थी, मुकुल न जाने क्या सोच रहा था, शरद् सुदूर कहीं खो गया था और अलका को बार बार शालिनी का सहसा कथित वाक्य—' आप और दीदी की जोडी अच्छी है''—याद आ रहा था। वह अपने मन मे ही चिन्तन कर रही थी। तब तक शालिनी ने कहा—''दीदी। लान मे बैठें, तो कैसा रहेगा।'' अलका ने अनुमोदित होते हुए कहा—''ठीक है।'' सभी लोग लान मे जाकर बैठ गये। लान के चारो ओर सुसज्जित क्यारियो से पुष्प की रसभीनी सुगंध सुवास फैला रही थी। अलका न जाने क्या सोच रही थी, मुकुल को सम्बोधित करते हुये कहा—''आप बडे अच्छे गीतकार हैं, आकाशवाणी से क्यों नही सम्पर्क करते।' मुकुल ने प्रत्युत्तर देते हुये कहा—'आपकी भावना के लिए कृतज्ञ हूँ, वास्तव मे मैं गीतकार नहीं हूँ, बहुत अच्छे का तो प्रश्न ही नही उठता।'' शालिनी ने तुरंत बात काटी—' वाह भाई साहब! खूब बनाते हैं आप भी, मैं तो यह सोचती थी कि गीत के अलावा आप कुछ बोलते ही नहीं, किन्तु अब तो ऐसा लगता है कि आप तक भी अच्छा करते हैं।'' मुकुल ने कहा 'ठीक है लेकिन तुझसे तो कम ही।' शालिनी झेंप गयी। अलका और शरद् मुस्कुराने लगे।

मुकुल को आज का दिन सभी दिनों से कुछ अधिक रोचक लग रहा था। शरद् शालिनी के अलावा उन लोगों के बीच में कोई नहीं

था—एक ओर पूरा संरक्षण था तो दूसरी ओर पूरा आश्वासन। अलका की स्निग्ध पुलकावली, चकित नयन दृष्टि, उत्कंठित कणल-हरिका, विलम्बित भावभङ्गिमा, सस्मित अधरपुट, उत्तरङ्गित केशराशि और प्रमुदित कपालपाली अन्तमन के उल्लास को स्पष्टतः व्यक्त कर रहे थे। स्फुरित अधर से ऐसा लगता था कि वह बहुत कुछ कहने के लिए उत्कण्ठित है। मुकुल तो कौशाम्बी भ्रमण के दिन से ही अपने हृदय-पयोधि में उथल-पुथल अनुभव करने लगा था। उसे प्रतिक्षण अपनी हृदय तरंगों में एक मधुर झंकार सी सुन पड़ती थी, जीवन की यह अनुभूति कुछ अद्भुत ही थी। मुकुल से अलका की दृष्टि मिल जाती थी, सहज लाज मुखमण्डल को आरक्त कर देती थी, कण्ठ गद्गद हो जाते थे, किन्तु क्षण भर में ही कुछ ऐसी व्यग्रता उठती थी कि वह दोनों को ही विह्वल कर देती थी और पुनः उनके नयन चुपचाप एक दूसरे की मुखछवि का गुप्त अनुवीक्षण करना चाहते थे, किन्तु न जाने हृदय की तरंगों में क्या सामंजस्य था—वे एक साथ ही एक दूसरे में उलझ जाते थे। वार्ताक्रम शरद् और शालिनी के मध्य चल रहा था। अलका और मुकुल उनकी बातों का आनन्द तो ले रहे थे, किन्तु अपने उत्कण्ठित मन की भावनाओं का भी आदान प्रदान कर रहे थे।

शालिनी शरद् से विश्वविद्यालय के विषय में बहुत से प्रश्न कर चुकी थी, वह अपनी सभी उत्कण्ठाओं को शान्त कर लेना चाहती थी, इण्टर में पढ़ने वाले प्रत्येक स्टूडेण्ट के मन में विश्वविद्यालय के विषय में बड़ी-बड़ी कल्पनायें भावनायें और उत्सुकतायें रहती हैं। वह विश्वविद्यालय की पढ़ाई, अध्यापक एवं छात्रों के विषय में पूछ रही थी। शरद् बताता जा रहा था। शालिनी के प्रश्नों की बौछार को शान्त करने के लिए अलका ने कहा—"किस पगली की बात का उत्तर दे रहे हैं, अरे यह मेरे भी कान खाती रहती है, पढ़ती लिखती कुछ नहीं, और सोचती है विश्वविद्यालय के विषय में।" मुकुल

शरद् की उपस्थिति के कारण शालिनी ने चुपचाप अलका की डाँट को पी लिया।

मुकुल ने शालिनी को आम्लान देखकर अलका से कहा—"आपका कान तो सुरक्षित है और आप कहती हैं, कान खाती रहती है, शालिनी खाना खाती है कि कान खाती है।" अलका मन्द मुस्कान प्रस्फुटित कर अपने अन्चल को ठीक करने लगी। शालिनी कहने लगी—"दीदी, आप तो कभी बात ही नहीं करतीं और न कुछ बताती हैं किसी से मैं कुछ पूछती हूँ, तो उल्टे डाँट जरूर आप पिलाती हैं।"

मुकुल, शरद् और अलका फिर अपने अध्ययन की प्रगति के विषय में वार्तालाप करने लगे। सभी ने यह अनुभव किया कि कभी कभी आपसी विचार विमर्श बड़ा उपयोगी होगा। मुकुल ने शरद् से कहा—"क्या आज चलने का विचार नहीं है?" शालिनी ने प्रार्थना की—"भाई साहब, बैठिये, जाइएगा ही—एक एक काफी और पी जाय तो जाइएगा।' अलका को शालिनी का यह प्रस्ताव बहुत ही मन पसन्द लगा, उसने उठने का उपक्रम करते हुए कहा—"अच्छा मैं बना कर लाती हूँ। शालिनी ने निश्चय वचन कहा—"दीदी, आप बैठो, मैं बनाकर झटपट लाती हूँ" और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना चली गयी।

अलका के मन में स्थित अथाह-[illegible] उत्त[illegible]
वह चुप थी, मुकुल चुप था—शरद् [illegible] ? शालि[illegible]
से इन लोगो के मध्य गहरा मौन छा[illegible]
का माउथपीस फ्यूज हो गया हो।
शरद् और मु[illegible] [illegible]िए तैयार

[२१]

प्रो० नरेन्द्र दिल्ली से लौटे तो उन्होंने सूचित किया कि राघवेश ने उन्हें गृहमन्त्रालय की हिन्दी—समिति के परामर्शदाता के रूप में नियुक्त करा दिया है, गृहमन्त्री से सम्पर्क स्थापित कराने एवं कार्यभार ग्रहण कराने के लिए बुलाया था। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का सम्पूर्ण कार्य मुझे सौंपा गया है। फिलहाल मुख्यालय दिल्ली है, बाद में परिवर्तित होने की सम्भावना है। प्रो० नरेन्द्र इस नव नियुक्ति से प्रसन्न नहीं थे, यद्यपि शासकीय सुविधाओं अधिकारों एवं आर्थिक लाभ की दृष्टि से उच्चपद पर ही नियुक्त हुए थे, परिवार की तात्कालिक व्यवस्था की समस्या—एक प्रश्न थी।

प्रो० नरेन्द्र ने सोचा कि अपने निकटतम मित्र डा० जोशी को सूचना दे दूँ। प्रो० नरेन्द्र ने फोन का डायल घुमाकर डा० जोशी के यहाँ सूचित किया कि डा० साहब तत्काल मेरे आवास पर आने का कष्ट करें। प्रो० नरेन्द्र अपनी पत्नी से वार्ता कर रहे थे और बता रहे थे कि राघवेश का बहुत ही सबल आग्रह है कि मैं शीघ्र ही दिल्ली लौट आऊँ। अलका और शालिनी के अध्ययन की समस्या तथा अभी कार्यालय के स्थायित्व के प्रश्न ने प्रो० नरेन्द्र तथा प्रेमावती को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दिया। प्रो० नरेन्द्र ने प्रेमावती से कहा कि तुम गृह व्यवस्था तथा अलका एवं शालिनी का संरक्षण करने के लिए यहीं रहो, तात्कालिक समस्याओं के निराकरण के लिए डॉ० जोशी से मैं निवेदन किये जा रहा हूँ।

अलका और शालिनी तो पापा के दिल्ली गमन के समाचार को सुनकर आश्चर्यचकित तथा अवाक् रह गयी। अलका को प्रतीत हुआ कि दिल्ली का प्रस्थान न जाने किस दुर्दैव का षड्यन्त्र है। शालिनी

शरद् की उपस्थिति के कारण शालिनी ने चुपचाप अलका की डाँट को पी लिया।

मुकुल ने शालिनी को झाम्लान देखकर अलका से कहा—"आपका कार तो सुरक्षित है और आप कहती हैं, कान खाती रहती है, शालिनी खाना खाती है कि कान खाती है।" अलका मन्द मुस्कान प्रस्फुटित कर अपने अञ्चल को ठीक करने लगी। शालिनी कहने लगी—"दीदी, आप तो कभी बात ही नहीं करतीं और न कुछ बताती हैं किसी से मैं कुछ पूछती हूँ, तो उल्टे डाँट जरूर आप पिलाती हैं।"

मुकुल, शरद् और अलका फिर अपने अध्ययन की प्रगति के विषय में वार्तालाप करने लगे। सभी ने यह अनुभव किया कि कभी-कभी आपसी विचार विमर्श बड़ा उपयोगी होगा। मुकुल ने शरद् से कहा—"क्या आज चलने का विचार नहीं है ?" शालिनी ने प्रार्थना की—"भाई साहब, बैठिये, जाइएगा ही—एक एक कॉफी और पी जाय तो जाइएगा।" अलका को शालिनी का यह प्रस्ताव बहुत ही मन पसन्द लगा, उसने उठने का उपक्रम करते हुए कहा—"अच्छा मैं बना कर लाती हूँ।" शालिनी ने निश्चय वचन कहा—"दीदी, आप बैठो, मैं बनाकर झटपट लाती हूँ" और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना चली गयी।

अलका के मन में स्थित अथाह-गम्भीर जलधि उत्तरङ्गित होने लगा, वह चुप थी, मुकुल चुप था—शरद् ही क्या बोलता ? शालिनी के जाने से इन लोगों के मध्य गहरा मौन छा गया, लगता है कि लाउडस्पीकर का माउथपीस फ्यूज हो गया हो। काफी आ गयी। सिप करने के बाद शरद् और मुकुल जाने के लिए तैयार हो गये।

[२१]

प्रो० नरेन्द्र दिल्ली से लौटे तो उन्होंने सूचित किया कि राघवेश ने उन्हें गृहमन्त्रालय की हिन्दी—समिति के परामर्शदाता के रूप में नियुक्त करा दिया है, गृहमन्त्री से सम्पर्क स्थापित कराने एवं कार्यभार ग्रहण कराने के लिए बुलाया था। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का सम्पूर्ण कार्य मुझे सौंपा गया है। फिलहाल मुख्यालय दिल्ली है, बाद में परिवर्तित होने की सम्भावना है। प्रो० नरेन्द्र इस नव नियुक्ति से प्रसन्न नहीं थे, यद्यपि शासकीय सुविधाओं अधिकारों एवं आर्थिक लाभ की दृष्टि से उच्चपद पर ही नियुक्त हुए थे, परिवार की तात्कालिक व्यवस्था की समस्या—एक प्रश्न थी।

प्रो० नरेन्द्र ने सोचा कि अपने निकटतम मित्र डॉ० जोशी को सूचना दे दूँ। प्रो० नरेन्द्र ने फोन का डायल घुमाकर डा० जोशी के यहाँ सूचित किया कि डा० साहब तत्काल मेरे आवास पर आने का कष्ट करें। प्रो० नरेन्द्र अपनी पत्नी से वार्ता कर रहे थे और बता रहे थे कि राघवेश का बहुत ही सबल आग्रह है कि मैं शीघ्र ही दिल्ली लौट आऊँ। अलका और शालिनी के अध्ययन की समस्या तथा अभी कार्यालय के स्थायित्व के प्रश्न ने प्रो० नरेन्द्र तथा प्रेमावती को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दिया। प्रो० नरेन्द्र ने प्रेमावती से कहा कि तुम गृह व्यवस्था तथा अलका एवं शालिनी का संरक्षण करने के लिए यहीं रहो, तात्कालिक समस्याओं के निराकरण के लिए डॉ० जोशी से मैं निवेदन किये जा रहा हूँ।

अलका और शालिनी तो पापा के दिल्ली गमन के समाचार को सुनकर आश्चर्यचकित तथा अवाक् रह गयीं। अलका को प्रतीत हुआ कि दिल्ली का प्रस्थान न जाने किस दुर्दैव का षड्यन्त्र है। शालिनी

एक बार तो प्रसन्न हुई, क्योंकि यह दिल्ली की चहल पहल के प्रति आकर्षित थी, किन्तु अपनी कम्पनी का अभाव उसकी कल्पना म कौंध गया। प्रेमावती को हर्ष भी हो रहा था, क्योंकि प्रो० नरेन्द्र उच्चपद पर नियुक्त हुए थे, साथ ही परिवार की व्यवस्था का भार उनके ऊपर आ रहा था तथा पति से विमुक्त होना पड़ रहा था—अत मन चि त भी हो रहा था। अलका और शालिनी की समस्या उन्हें निर तर चि तित रखती थी। फलवती वाटिका एव किशोरी कन्याओं का सरक्षण सतत सावधानी की अपेक्षा करता है। प्रेमवती चिंतित हो रही थी। प्रो० नरेन्द्र एव प्रेमावती मे वार्तालाप हो ही रहा था कि डॉ० जोशी आ गये।

प्रो० नरेन्द्र ने सम्पूर्ण समाचार डॉ० जोशी से बताया। डॉ० जोशी ने प्रो० नरेन्द्र को सहर्ष बधाई दी, क्योंकि गृह मन्त्रालय की यह नियुक्ति अपने आप राजनैतिक उच्च सम्पर्क की प्रतीक थी। आज के युग मे खेतों के श्रमिक से लेकर उच्च पदा धिकारी एव राजनेता भी राजनैतिक संरक्षण के लिए लार टपकाते रहते हैं। कार्यभार ग्रहण करने आदि की योजना सविस्तार डा० जोशी को बताकर प्रो० नरे द्र न सूचित किया कि डा० साहब कल प्रात ही मुझे जाना है मिसेज एव दोना कन्यायें अभी यहीं हैं, कृपया इनकी सुविधा—असुविधा का ध्यान रखेंगे। आपसे न कहूँ तो फिर किससे कहूँ। डॉ० जोशी ने आश्वस्त किया और कहा—"आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें, मैं आपके आदेश का पालन करता रहूँगा।" प्रो० नरे द्र के मन मे थोड़ी शान्ति की अनुभूति हुई। डा० जोशी थोड़ी देर तक अ य औपचारिक बातें करते रहे। चलते चलते प्रो० नरे द्र को सपरिवार सायकाल के भोजन के लिए प्रार्थित करते गये। प्रो० नरे द्र ने अलका और शालिनी को बुलाकर आश्वस्त किया कि तुम्हारे चाचा—डॉ० जोशी—यहाँ हैं ही किसी भी कठिनाई की स्थिति में जोशी जी से कहना। □

[२२]

अलका के मन म कैक्टस के घेरे की तरह आकस्मिक कल्पना व्याप्त हो गयी थी, वह सम्प्रति केवल पापा के दिल्ली जाने की योजना से दूर हो गयी। अलका अपनी अनुभूति मे दिल्ली जाने की कल्पना करती रही और इलाहाबाद के परिवेश से पृथक् होने की कल्पना मे डूबती जा रही थी। प्रारम्भिक चि ता मे मानव स्मृति-सतह पर स्थित होकर भावीकल्पना के कमलसरोवर की मधुरिम झाँकी म व्यस्त हो जाता है। अलका की भी कुछ यही दशा हो रही थी। चि ता के उदग्रह होने के साथ ही साथ स्मृति और कल्पना का समागम विलीन हो गया, क्योंकि शालिनी ने आकर अलका को बताया—"दीदी! शाम को हम सभी को चाचा जी के यहाँ चलना है।' अलका ने पूछा—"कौन से चाचा जी ?" यद्यपि अलका शालिनी के सम्बोधन का समय रही थी। शालिनी ने कहा—"चाचा—डा० जोशी—के यहा, जो अभी आय थे।" अलका न पूछा—'बात क्या है ?" शालिनी न बताया—"चाचा जी न निमं त्रत किया है।" अलका ने शालिनी को आश्वस्त किया—"जब चलना है, तो चला ही जायगा, परेशान क्यों हो रही हो!" शालिनी ने साग्रह प्राथना किया—"दीदी मेरा एक काम कर दोगी।" अलका ने प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा। शालिनी ने निवेदित किया—"मेरी मिडी तैयार हो गयी है, उसम बटन आप लगा दीजिए।"

अलका ने उत्तर दिया—"बटन कभी लगा दूँगी, आज ही क्या, मिडी पहनने का मुहूर्त है ? शालिनी ने निष्कय निकाला कि जब दीदी उल्टी बात करें तो मुझे समझ लेना चाहिए कि काम कर देंगी,

एक बार तो प्रस न हुई, क्योंकि यह दिल्ली की चहल पहल के प्रति आकर्षित थी, कि तु अपनी कम्पनी का अभाव उसकी कल्पना म कौंध गया। प्रेमावती को हर्ष भी हो रहा था, क्योंकि प्रो० नरेन्द्र उच्चपद पर नियुक्त हुए थे, साथ ही परिवार की व्यवस्था का भार उनके ऊपर आ रहा था तथा पति से विमुक्त होना पड़ रहा था—अत मन खि न भी हो रहा था। अलका और शालिनी की समस्या उन्हें निर तर चि तित रखती थी। फलवती वाटिका एव किशोरी कन्याओं का सरक्षण सतत सावधानी की अपेक्षा करता है। प्रेमवती चिंतित हो रही थी। प्रो० नरे द्र एव प्रेमावती मे वार्तालाप हो ही रहा था कि डॉ० जोशी आ गये।

प्रो० नरेन्द्र ने सम्पूर्ण समाचार डॉ० जोशी से बताया। डॉ० जोशी ने प्रो० नरे द्र को सहृष बधाई दी, क्योंकि गृह म त्रालय की यह नियुक्ति अपने आप राजनैतिक उच्च सम्पर्क की प्रतीक थी। आज के युग मे खेतों के श्रमिक से लेकर उच्च पदाधिकारी एव राजनेता भी राजनैतिक सरक्षण के लिए लार टपकाते रहते हैं। कार्यभार ग्रहण करने आदि की योजना सविस्तार डा० जोशी को बताकर प्रो० नरे द्र ने सूचित किया कि डा० साहब कल प्रात ही मुझे जाना है मिसेज एव दोनो क यायें अभी यहीं हैं, कृपया इनकी सुविधा—असुविधा का ध्यान रखेंगे। आपसे न कहूँ तो फिर किससे कहूँ। डा० जोशी ने आश्वस्त किया और कहा—"आप किसी प्रकार की चि ता न करें, मैं आपके आदेश का पालन करता रहूँगा।" प्रो० नरे द्र के मन मे थोड़ी शा ति की अनुभूति हुई। डा० जोशी थोड़ी देर तक अ य औपचारिक बातें करते रह। चलते चलते प्रो० नरे द्र को सपरिवार सायकाल के भोजन के लिए प्रार्थित करते गये। प्रो० नरे द्र ने अलका और शालिनी को बुलाकर आश्वस्त किया कि तुम्हारे चाचा—डॉ० जोशी—यहाँ हैं हो किसी भी कठिनाई की स्थिति मे जोशी जी से कहना। □

[२२]

अलका के मन मे कैक्टस के घेरे की तरह आकस्मिक कल्पना व्याप्त हो गयी थी, वह सम्प्रति केवल पापा के दिल्ली जाने की योजना से दूर हो गयी। अलका अपनी अनुभूति मे दिल्ली जाने की कल्पना करती रही और इलाहाबाद के परिवेश से पृथक् होने की कल्पना मे डूबती जा रही थी। प्रारम्भिक चिन्ता मे मानव स्मृति सतह पर स्थित होकर भावीकल्पना के कमलसरोवर की मधुरिम झाँकी मे व्यस्त हो जाता है। अलका की भी कुछ यही दशा हो रही थी। चिन्ता के उदग्रह होने के साथ ही साथ स्मृति और कल्पना का समागम विलीन हो गया, क्योंकि शालिनी ने आकर अलका को बताया—"दीदी! शाम को हम सभी का चाचा जी के यहाँ चलना है।" अलका ने पूछा—"कौन से चाचा जी?" यद्यपि अलका शालिनी के सम्बोधन का समझ रही थी। शालिनी ने कहा—"चाचा—डा० जोशी—के यहा, जा अभी आय थे।" अलका ने पूछा—'बात क्या है?' शालिनी न बताया—"चाचा जी ने निमन्त्रण दिया है।" अलका ने शालिनी को आश्वस्त किया—"जब चलना है, तो चला ही जायगा, परेशान क्यों हो रही हो!" शालिनी ने साग्रह प्राथना किया—"दीदी मेरा एक काम कर दोगी!" अलका ने प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा। शालिनी ने निवेदित किया—"मेरी मिडी तैयार हो गयी है, उसम बटन आप लगा दीजिए।"

अलका ने उत्तर दिया—"बटन कभी लगा दूँगी, आज ही क्या, मिडी पहनने का मुहूर्त है?' शालिनी ने निष्कर्ष निकाला कि जब दीदी उल्टी बात करें तो मुझे समझ लेना चाहिए कि काम कर देंगी,

एक बार तो प्रस न हुई, क्योंकि वह दिल्ली की पहल पहल के प्रति आकर्षित थी, कि तु अपनी कम्पनी का अभाव उसकी कल्पना म कौंध गया। प्रेमावती को हृष भी हो रहा था, क्योंकि प्रो० नरेन्द्र उच्चपद पर नियुक्त हुए थे, साथ ही परिवार की व्यवस्था का भार उनके उपर आ रहा था तथा पति से विमुक्त होना पड रहा था—अत मन खि न भी हो रहा था। अलका और शालिनी की समस्या उन्हें निर तर चि तित रखती थी। फलवती वाटिका एव किशोरी क याओं का सरक्षण सतत सावधानी की अपेक्षा करता है। प्रेमवती चिंतित हो रही थी। प्रो० नरे द्र एव प्रेमावती मे वार्तालाप हो ही रहा था कि डॉ० जोशी आ गये।

प्रो० नरेन्द्र ने सम्पूर्ण समाचार डॉ० जोशी से बताया। डॉ० जोशी ने प्रो० नरेन्द्र को सहष बधाई दी, क्योंकि गृह म त्रालय की यह नियुक्ति अपने आप राजनैतिक उच्च सम्पक की प्रतीक थी। आज के युग मे खेतों के श्रमिक से लेकर उच्च पदा धिकारी एव राजनेता भी राजनैतिक सरक्षण के लिए लार टपकाते रहते हैं। कायभार ग्रहण करने आदि की योजना सविस्तार डा० जोशी को बताकर प्रो० नरे द्र ने सूचित किया कि डा० साहब कल प्रात ही मुझ जाना है मिसेज एव दोना क यायें अभी यही हैं, कृपया इनकी सुविधा—असुविधा का ध्यान रखेंगे। आपसे न कहूँ तो फिर किससे कहूँ। डॉ० जोशी ने आश्वस्त किया और कहा—"आप किसी प्रकार की चि ता न करें, मैं आपके आदेश का पालन करता रहूँगा।" प्रो० नरे द्र के मन मे थोडी शा ति की अनुभूति हुई। डा० जोशी थोडी देर तक अ य औपचारिक बातें करते रहे। चलते चलते प्रो० नरे द्र को सपरिवार सायकाल के भोजन के लिए प्रार्थित करते गये। प्रो० नरे द्र ने अलका और शालिनी को बुलाकर आश्वस्त किया कि तुम्हारे चाचा—डा० जोशी—यहाँ हैं ही किसी भी कठिनाई की स्थिति मे जोशी जी से कहना। □

[२२]

अलका के मन म कैक्टस क घेरे की तरह ,आकस्मिक कल्पना व्याप्त हो गयी थी, वह सम्प्रति केवल पापा के दिल्ली जाने की योजना से दूर हो गयी। अलका अपनी अनुभूति मे दिल्ली जाने की कल्पना करती रही और इलाहाबाद के परिवेश से पृथक् होने की कल्पना मे डूबती जा रही थी। प्रारम्भिक चिंता में मानव स्मृति-सतह पर स्थित होकर भावीकल्पना के कमलसरोवर की मधुरिम झाँकी मे व्यस्त हो जाता है। अलका की भी कुछ यही दशा हो रही थी। चिंता के उदग्रह होने के साथ ही साथ स्मृति और कल्पना का समागम विलीन हो गया, क्योंकि शालिनी ने आकर अलका को बताया—"दीदी! शाम को हम सभी को चाचा जी के यहाँ चलना है।' अलका न पूछा—"कौन से चाचा जी ?" यद्यपि अलका शालिनी के सम्बोधन को समझ रही थी। शालिनी ने कहा—"चाचा—डा० जोशी—क यहाँ, जा अभी आय थे।" अलका न पूछा—'बात क्या है ?" शालिनी न बताया—'चाचा जी ने निमंत्रित किया है।" अलका ने शालिनी को आश्वस्त किया—"जब चलना है, तो चला ही जायगा, परेशान क्यों हा रही हा।" शालिनी ने साग्रह प्राथना किया—"दीदी मेरा एक काम कर दोगी।" अलका ने प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा। शालिनी ने निवेदित किया—"मेरी मिडी तैयार हा गयी है, उसम बटन आप लगा दीजिए।"

अलका न उत्तर दिया—"बटन कभी लगा दूँगी, आज ही क्या, मिडी पहनने का मुहूर्त है ?' शालिनी ने निष्कष निकाला कि जब दीदी उल्टी बात करें तो मुझे समझ लेना चाहिए कि काम कर देंगी,

क्योंकि सभी बहिनें छोटे भाई बहिनों का काम करने से पहले खिड़ खिड़ाती ही हैं। शालिनी ने मिश्री, बटन, सुई और तागा लाकर अलका के पास रख दिया।

+ + +

डा० जोशी ने घर पहुँचकर अपनी मिसेज को सम्पूर्ण बातें बतायीं और यह भी बताया कि शाम के भोजन पर हमने प्रो० नरेन्द्र के परिवार को आमंत्रित कर दिया है। मिसेज जोशी अत्यधिक प्रसन्न हुईं क्योंकि दोनों परिवारों में बहुत ही घनिष्ठता है। डॉ० जोशी ने व्यवस्था के विषय में वार्तालाप करके कहा आते समय मैं शरद तथा मुकुल को भी लेता आऊँगा। तुम्हें कुछ सहायता हो जायगी। मिसेज जोशी इस विषय में कहती ही क्या ? डा० जोशी थोड़ी देर में तैयार होकर विश्वविद्यालय चले गये।

विश्वविद्यालय पहुँचते ही डॉ० जोशी ने चपरासी से मुकुल और शरद को बुलाया। उन लोगों के आते ही डॉ० जोशी ने आदेश दिया कि आप लोग कक्षाओं की समाप्ति के बाद सीधे मेरे आवास पर पहुँचिएगा। मुकुल ने पूछा—"सर! क्या बात है ?" लेकिन डा० जोशी ने कहा—"घर पहुँचने पर मालूम हो जायगा।" दोनों ही अपने दृष्टिकोण से डा० जोशी के आदेश का अर्थ लगाते रहे किन्तु किसी प्राचीन शिलालेख की भाषा की तरह कुछ समझ न सके।

× × ×

अलका जब विश्वविद्यालय पहुँची तो उसने अपनी सहेलियों से अपने पापा की नियुक्ति के विषय में बताया। लड़कियाँ अगर अपने पेट में कोई बात रखती हैं तो उन्हें अपच होने लगती है लेकिन चाट कितना ही ज्यादा खा लें उन्हें कुछ नहीं होता। मथुरा के चौबे यदि पेड़े खाने में विख्यात हैं तो इलाहाबाद ही क्या उत्तर भारत की सभी लड़कियाँ चाट खाने में विख्यात हैं, किन्तु बात को उगलने में भी

लड़कियों से ज्यादा नाजुक कोई नहीं होता। अलका के द्वारा सूचित किये गये समाचार को सुनकर उसकी सहेलियों को प्रसन्नता भी हुई मन में इस आशंका के कारण सहन-ग्लानि भी होती रही कि शायद अलका को भी पापा के साथ ही दिल्ली जाना होगा, किन्तु वे सम्पूर्ण स्थिति को स्पष्ट कर दिया। तब जाकर सभी सहेलियों का मन स्थिति सुस्थिर हुई। सभी ने वहाँ विश्वविद्यालय के पश्चात् अलका के घर चलकर प्रो० साहब को बधाई देंगे।

मुकुल और शरद् इस सम्पूर्ण दृश्य को दूर से देखते रहे और मन में सोचते रहे कि अलका को घेरे हुये छात्राओं के मध्य किसी सुखद वृत्तान्त पर वार्तालाप हो रहा है। किसी विशिष्ट घटना पर मुकुल अपने अन्तमन से वार्तालाप करने लगता है, तो बाह्यपरिवेश के प्रति पूर्णतः तटस्थ सा हो जाता है। सहसा किसी बात पर वह अपनी प्रतिक्रिया भी नहीं व्यक्त करता। मुकुल चुप था तभी शरद् ने उससे कहा— "मुकुल ! क्या बात है ? 'अलका एण्ड को' बहुत उत्साहित हो रही है।"

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम है, हाँ उत्साह कुछ ज्यादा ही लग रहा है"—मुकुल ने उत्तर दिया और कहा—"पूछना क्यों नहीं तू जाकर ' शरद् ने एक बार लड़कियों के समूह की ओर देखा फिर उसने उत्तर दिया—"क्या फायदा, अपने आप ही मालूम हो जायेगा" —मुकुल ने शरद् पर आक्षेप किया— "शरद् आज का दिन ही अजीब है, सुबह से ही 'मालूम हो जायगा' का पीछा पड़ गया है।" शरद् को डा० जोशी की बात याद आ गयी वह हँसने लगा। मुकुल की भी स्मितरेखा अधरपुट के भीतर छिप गयी। शरद् ने फिर मुकुल को याद दिलाते हुए कहा—"डा० जोशी ने सहसा इस तरह घर पहुँचने का क्यों आदेश दिया होगा ?' "चिन्ता की कोई बात नहीं डा० जोशी चिंतित नहीं थे, मुखाकृति विलसित थी—

अतः स्नेह की आवश्यकता नहीं, हाँ कारण ज्ञात करने का कौतूहल तो है ही" मुकुल ने उत्तर दिया। इसी बीच प्रो० जोशी कक्षा की ओर आते हुये दिखाई पड़े। सभी छात्र छात्रायें तीव्रता से कक्षा की ओर चल पड़े।

डा० जोशी ने कक्षा मे आकर उपस्थिति ला, फिर उनकी दृष्टि अलका पर पड़ी—और सभी छात्रा को सम्बोधित करते हुय आह्लादित स्वर म कहने लगे—"आज तो तुम लोगो को अलका स पार्टी लनी चाहिये " डॉ० जोशी और कुछ कहते तभी विजया ने कहा—"नही, सर। पार्टी तो आपको देनी चाहिये, क्योकि अलका क पापा आपके फ्रेण्ड जो हैं।" तभी कई लड़कों ने पूछा—"सर! क्या बात है ?" तब डॉ० जोशी ने प्रो० नरेन्द्र की नियुक्ति के विषय मे बताया। विस्तृत विवरण सुनकर शरद् और मुकुल के मन का कौतूहल शान्त हो गया, क्योकि अलका और लड़कियो के बीच वार्ता का कारण स्पष्ट हो गया था। फिर तो प्रो० नरेन्द्र की विद्वता पर ही डॉ० जोशी बात करते रहे। छात्रो को बताते रहे कि प्रो० नरेन्द्र के यहाँ स चले जाने से विश्वविद्यालय मे एक रिक्तता आ जायगी, क्याकि प्रो० नरेन्द्र क कारण इस समय तक इस विश्वविद्यालय की ख्याति थी, नही तो गली गली मे अनेक विश्वविद्यालयो क खुल जाने से लोगा को उनका नाम तक याद नही है। फिर डा० जोशी इलाहाबाद—विश्वविद्यालय मे उन दिनो का वणन करने लगे जब इस विश्वविद्यालय का क्षत्र अत्यन्त विस्तृत था। सभी छात्र ध्यान से सुनते रहे और वे समझ गए थे कि आज प्रो० साहब प्रो० नरेन्द्र के अभाव की कल्पना मे डूबे हैं। तभी घण्टी लग गई।

मुकुल प्रो० नरेन्द्र की दिल्ली नियुक्ति के विषय म सुनकर प्रसन्न हुआ किन्तु तत्क्षण उसकी दृष्टि अलका पर पड़ी—कक्षा म सदैव की भाँति अलका संयमित और ध्यानमग्न थी—अलका की इस स्थिति

का अथ कुछ मुकुल ने और ही लगाया तथा वह सोचने लगा—"प्रो० नरेन्द्र सपरिवार ही दिल्ली जायेंगे"—इस विचार ने मुकुल के स्मतिपटल को झकझोर दिया और वह साचन लगा कि अलका मुझसे दूर हो रही है, न जाने कब अलका के साथ मेरी मुलाकात हो। मुकुल चितामग्न होता जा रहा था और उसकी मुखकांति मलिन हो रही थी—शरद ने मुकुल को देखा तो उसे कुछ अस्वस्थ सा मुकुल प्रतीत हुआ। अचानक शरद ने पूछ ही लिया—"मुकुल! क्या तुम अस्वस्थ हो ?" मुकुल ने अपने को निगूहित करते हुए कहा—"रात में मैं अधिक जग गया था, तुम मेरे आवास पर आना तभी डा० जोशी के यहाँ चलूंगा। इस समय मैं घर जाकर थोड़ा विश्राम करूंगा।

□

मुकुल घर आकर अलका के विषय में सोचते सोचते हृदय से अति व्यथित हो गया था। विरह कल्पना को चिन्ता से पङ्किल सरोवर में ही प्रणयिसुरभि की सुवास से उत्फुल्ल अरविन्दकलिका पुष्पित होती है। विरहावस्था की अनन्य सहेलियाँ चिन्ता और कल्पना हैं। मुकुल चिन्ता से घिर रहा था और कल्पना से व्यथित हो रहा था। उसने सोचा—कौशाम्बी के परिवेश में प्रस्फुटित प्रणय—कलिका क्या विलास बिना ही मुरझा जायगी? उसे अपने अन्तमन में दृढ़ विश्वास हो गया था कि अलका मेरे समान ही मुझ पर आकृष्ट है। वह सोचता था कि सान्ध्य प्रभा की लालिमा के आगमन के समय सिमटते हुए इन्दीवर के समान अलका के नयनदल मुझे प्राय आश्वस्त करते रहते हैं। मुझे अवलोकित करके अलका के हृदयतल में जो बासन्तिकसमीर की मन्द मन्थर गति प्रवाहित होती है, क्या उसकी तरङ्ग कतिपय बार परिलक्षित नहीं हुई? कल्पना भविष्य की ओर दौड़ती है तो उसकी चोटी खींचकर स्मृति छलांग लगाकर आगे निकल जाती है। प्रणय के ट्रैक पर स्मृति और कल्पना दौड़ती रहती है। कल्पना स्वर्णिम स्वर्गलोक सजाती है और प्रणयि—हृदय को उत्साहित करती है। स्मृति अनुभूत यथार्थ को प्रत्यक्ष करके सहज सावधान करती है।

मुकुल को भविष्य के प्रति न जाने क्यों निश्चिन्तता थी—वह सोचता था कि भविष्य की चिन्ता न करके यदि अतीत से प्रेरणा, उत्साह, परामर्श लेकर वर्तमान को कर्ममय कर दिया जाय तो अवश्य ही भविष्य इन्द्रधनुष हो जाता है। यह विचार कुछ अद्भुत प्रेरणा मुकुल को दे गया और उसने सोचा कि मैं वर्तमान का कर्ममय करना चाहता हूँ किन्तु कर्म किया कहाँ मैंने? आस्था और क्रियाशीलता में

यदि समन्वय हो जाय, तो कर्ममन्त्र जन जन मे अपना प्रभाव स्थापित कर सके। मुकुल ने सोचा—अलका का अवलोकन विलोकन, सब कुछ एक संकेत से सदैव मुझे लगे है। अलका के प्रत्येक व्यापार मे मुझे एक उल्लास, आह्वान और आमन्त्रण प्राप्त हुआ है। उसने सोचा कि न जाने दिल्ली गमन के कारण अलका से मेरी मुलाकात हो या न हो, मुझे कुछ स्पष्ट वार्ता कर लेना चाहिए।

इस विचार के आने पर मुकुल ने सोचा—"अपने प्रियमित्र शरद् से परामर्श किया जाय। मित्र से काय निवेदन समस्या का परामर्श—अपनी चिन्तनशक्ति को जहा क्षमता प्रदान करता है, वही समस्याओ के तर्क वितर्क से सहजमुक्ति भी प्राप्त हो जाती है। मुकुल अपनी हृद्‌यतरङ्गिणी की धारा मे सन्तरण कर रहा था, अनिश्चय के हिन्दोले पर आरूढ मुकुल सोच रहा था कि शरद् से कहूँ या न कहूँ। चिन्तित कब निद्रा के अधीन हो गया—वह ज्ञात नही कर सका। स्वप्न मे वह एक पुष्पित उद्यान वीथी मे भ्रमण करते हुए अकेली अलका को देखता है, अलका गुनगुना रही है—"मेरे उपवन के हरिण आज वनचारी" सहसा मुकुल की वाणी प्रस्फुटित होती है और वह कहता है—"आपके उपवन का हरिण आपके उपवन मे ही उपस्थित होकर आपका सहचारी है"—मुकुल दखता है कि अलका उसकी आकस्मिक उपस्थिति से लज्जा मुकुलित हो गयी है और धीरे धीरे वह मुकुल के सामीप्य म आती जाती है, मुकुल नीलनभस्सर से उतरकर सन्तरण करने वाली हंसिनी की मदिर गति का अवलोकन कर रहा था, अलका समीप आयी और समीपआयी और समीप मुकुल ने अलका को परिरम्भण म ले लिया, अलका बोली—"मेरे देव! यह प्रयास मेरी प्रणयवीथी मे पुष्पित मदिर मधुर भुवन मोहिनी मादक भावनाओ की प्रथम कलिका को शुष्क तो नही कर देगा। मैं आपसे याचना करती हूँ कि अपने भावसलिल की मधुरधारा को प्रणयलेखा के माध्यम

से मेरी प्रणयवीथी मे प्रवाहित करते रहें, बोलिये, मौन क्यो ? निर्वाक क्यो, बोलिए, आश्वस्त कीजिए, बोलिए "

मुकुल की नींद टूटी। शरद् उसे जगा रहा था। मुकुल सोचता है कि कहूँ या न कहूँ ? अन्ततः डॉ० जोशी के बँगले की ओर शीघ्रता से दोनों प्रस्थान कर देते हैं। शरद् ने सोकर उठे हुये मुकुल को सचमुच तरो ताजा पाया। उसके मन की चिन्ता दूर हुई। शरद् चलते चलते मुकुल से—"हो सकता है, अब तो अलका भी दिल्ली में ही पढ़े" जानते हुए भी कि इस आशका का समुचित निराकरण मुकुल द्वारा नहीं हो सकता है, आशका व्यक्त की। "प्रो० नरेन्द्र को तो आना ही है, अपने परिवार के विषय मे वे जो भी निर्णय लें"—मुकुल ने शरद् को उत्तर दिया। शरद् ने अनुभव किया कि मेरी यह आशका मुकुल के हृदय मे कहीं चुभ गई है, क्योंकि मुकुल की मुखदीप्ति फिर आलसमयी हो गयी थी। एक टीस, वेदना, पीड़ा उभर उठी है, जिसे मुकुल न तो सह सकता है और न तो व्यक्त ही कर सकता है, मुकुल सोचने लगता है कि कदाचित् प्रणयपीड़ा सबसे दर्दीली और सरस होती है, एक ओर मन वेदना की तटिनी मे डूबने लगता है, डूबता जाता है और दूसरी ओर अपने प्रणयसहचर के प्रति सहजउत्थान, आकर्षण, स्मृति उभरती है, वह सब कोमल कर पल्लव मे सुसज्जित अभ्यर्थना-अञ्जलि के समान प्रतीत होती है। मुकुल ने भविष्य देखा नहीं था, कोई नहीं देख पाता, उसने वर्तमान को भी अपना प्रणयसहचर नहीं बनाया था, प्रतिदिन उसे वर्तमान की कल्पना रहती थी, किन्तु वर्तमान जब उपस्थित होता था—सामने, तो मुकुल दौड़ने लगता था। अपनी विकसित, सुरभित, मकरन्दपरिपूरित स्मृतिवाटिका मे, जो उसके द्वारा अतीत मे सचित की गई निधि थी।

आज का नहीं, आज के अतीत का स्वप्न उसकी स्मृतिवाटिका

में एक और नवकलिका प्रस्फुटित कर गया था—बार-बार मुकुल आत्मविह्वल हो रहा था और अलका का वाक्य उसे याद आ रहा था—" अपने भावसलिल की मधुर धारा को प्रणय लेखों के माध्यम से मेरी प्रणय वीथी में प्रवाहित करते रहें।' अतीन ने मुकुल के हृदय को झङ्कृत कर दिया और उसने सोचा कि स्वप्न हृदय मे दमित-कल्पित भावनाओं के विकास होते हैं, अत मेरा हृदय अलका को प्रणयपत्रिका प्रेषित करने के लिए उत्कण्ठित है। हृदय के द्वारा कल्पित भावनायें आत्मा की सच्ची प्रेरणा से अनुविद्ध होती हैं, मुझे अवश्य ही अपनी प्रणयदेवी की सेवा मे भावनापुष्प की अञ्जलि समर्पित करनी चाहिये। मुकुल का मन कुछ निश्चय कर चुका था। शरद् क्या जानता कि उसके पास ही इतना विशाल भावजलधि उद्वेलित हो रहा है।

□

प्रो० साहब के दिल्ली जाने की तैयारी चल रही है" फिर मिसेज जोशी और मिसेज नरेन्द्र ने बात का जो सिलसिला शुरू किया तो मानो दोनों आमने सामने बैठी बात कर रही हैं। डॉ० जोशी ने याद दिलाया—"अरे असली बात तो कहती नहीं अभी तो भाभी यहीं रहेंगी, रात भर बातें करना" तब कहीं मिसेज जोशी ने अलका और शालिनी को भेजने के लिए कहा।

मुकुल और शरद् मार्केट से लौट तो अलका और शालिनी को वहीं देखा। पारस्परिक अभिवादन प्रत्याभिवादन के पश्चात् अलका को बधाई दी। अलका ने धन्यवाद देते हुए कहा कि पापा की इस नियुक्ति से हम सभी डिस्टर्ब्ड हो गये हैं। पापा वहीं अकेले रह जायेंगे और हम सभी यहाँ उनकी अनुपस्थिति से व्यग्र रहेंगे। बात सच ही थी। मुकुल और शरद् ने मौन प्रतिक्रिया व्यक्त की। मुकुल के मन का एक भारी बोझ हल्का हो गया और शरद् का कौतूहल शान्त हो गया कि अलका यहीं रहेगी। मिसेज जोशी ने मुकुल और शरद् से कहा—'आज तुम लोग भी यहीं भोजन करोगे, तब तक हमारी सहायता करो' मुकुल ने कहा—"आण्टी, आज्ञा दीजिए, किन्तु भोजन के लिए क्षमा करें, क्योंकि" "बस, बस, बहाना हो गया, चुपचाप तुम लोग वह करो जो मैं कहूँ" मिसेज जोशी ने आदेश दिया। इस पर डॉ० जोशी ने परिहास पूर्वक कहा—' मुकुल, जब इस देवी के सामने गुरु की नहीं चलती, तो शिष्य की कैसे चलेगी? बैठो हम लोग कुछ काम करते हैं।" अलका, शालिनी, मुकुल, शरद् और मिसेज जोशी—सभी हँसने लगे, किन्तु शालिनी ने कहा—"चाचा जी! इसमें चलने न चलने की क्या बात है, आण्टी जी का गृहव्यवस्था में पूरा अधिकार है कैसे क्नाम मैं आपका" मिसेज जोशी ने कहा—"अब दो उत्तर, तो जानें" सभी हँसने लगे। मुकुल ने भी समझ लिया कि अब जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

[२४]

डॉ० जोशी अभी अभी विश्वविद्यालय से पहुँचे ही थे, मुकुल और शरद् भी इतनी देर में ही आ पहुँचे। डा० जोशी ने सर्वेंट का चाय लाने का आदेश दिया और पत्नी से कहा—"ये तुम्हारे भतीजे लोग आ गये हैं, मैं तो हुआ फुरसत।' मिसेज जोशा मुस्कराने लगीं। तभी शरद् ने कहा—"चाचा जी! क्या बात है? सर सुबह ये हम लोगा को कौतूहल मे डाले हैं।" "आज प्रो० नरेन्द्र और उनके परिवार का यहाँ सायंकाल डिनर हो रहा है, जानते ही हागे, प्रो० नरेन्द्र अब दिल्ली हीं रहेंगे' मिसेज जोशी ने शरद् क कौतूहल को शात किया और कहा—'तुम लोग यह लिस्ट लेकर जरा मार्केटिंग कर आओ, तो हम सचमुच मे इन्हें फुरसत ही बोल दें।" शरद् और मुकुल लिस्ट लेकर तैयार हुये मिसेज जोशी ने उन्हें पैसा देते हुए यथा शीघ्र आने क लिए कहा।

मिसेज जोशी ने डॉ० जोशी से पूछा—"क्या! प्रो० साहब का पूरा परिवार भी जायगा?" डॉ० जोशी ने उत्तर दिया—"अभी प्रो० साहब अकेले ही जायेंगे, फिर भविष्य मे जैसा निणय लें।" मिसेज जोशी ने कहा—'फोन करके देखो—अलका और शालिनी—आ गई हों, तो उन्हें पहले बुला लो, प्रो० साहब और उनकी मिसज समय पर आ जायेंगे।" विश्वविद्यालय से अलका ता आ ही गई होगी, शालिनी या तो आ ही गई होगी या आ ही रही हागी" यह कहते हुए डॉ० जोशी ने डायल घुमाना शुरू किया। मिसेज नरेन्द्र ने फोन रिसीव किया तो डॉ० जोशी ने कहा—"मिसेज स बात कीजिए।" मिसेज जोशी ने माउथपीस लेते हुए कहा—'हलो दीदी! क्या हो रहा है, बहुत बहुत बधाइयाँ!" उधर से उत्तर आया—"धन्यवाद,

प्रो० साहब के दिल्ली जाने की तैयारी चल रही है" फिर मिसेज जोशी और मिसेज नरेन्द्र ने बात का जो सिलसिला शुरु किया तो लगा दोनों आमने सामने बैठी बात कर रही हैं। डा० जोशी ने याद दिलाया—"अरे असली बात तो कहती नहीं, अभी तो भाभी आ ही रही हैं, रात भर बातें करना" तब कहीं मिसेज जोशी ने अलका और शालिनी को भेजने के लिये कहा।

मुकुल और शरद् मार्केट से लौटे तो अलका और शालिनी को नहीं देखा। पारस्परिक अभिवादन प्रत्याभिवादन के पश्चात् अलका को बधाइ दी। अलका ने धन्यवाद देते हुए कहा कि पापा की इस नियुक्ति से हम सभी डिस्टर्ब्ड हो गये हैं। पापा वहाँ अकेले ही जायेंगे और हम सभी यहाँ उनकी अनुपस्थिति से व्यग्र रहेंगे। बात सत्य ही थी। मुकुल और शरद् ने मौन प्रतिक्रिया व्यक्त की। मुकुल के मन का एक भारी बोझ हल्का हो गया और शरद् का कौतूहल शान्त हो गया कि अलका यहीं रहेगी। मिसेज जोशी ने मुकुल और शरद से कहा—'आज तुम लोग भी यहीं भोजन करोगे, तब तक हमारी सहायता करो" मुकुल ने कहा—"आण्टी, आदेश दीजिए, किन्तु भोजन के लिये क्षमा करें, क्योंकि " "बस, बस, बहाना हो गया, चुपचाप तुम लोग वह करो जो मैं कहूँ" मिसेज जोशी ने आदेश दिया। इस पर डा० जोशी ने परिहास पूर्वक कहा—' मुकुल, जब इस देवी के सामने गुरु की नहीं चलती, तो शिष्य की कैसे चलेगी? बैठो हम लोग कुछ काम करते हैं।" अलका, शालिनी, मुकुल, शरद् और मिसेज जोशी—सभी हँसने लगे, किन्तु शालिनी ने कहा—"चाचा जी! इसमें चलने न चलने की क्या बात है, आण्टी जी का गृहव्यवस्था में पूरा अधिकार है जैसे क्लास में आपका" मिसेज जोशी ने कहा—"अब दो उत्तर, तो जानें" सभी हँसने लगे। मुकुल ने भी समझ लिया कि अब जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

[२४]

डॉ० जोशी अभी अभी विश्वविद्यालय से पहुँचे ही थे, मुकुल और शरद् भी इतनी देर मे ही आ पहुँचे। डॉ० जोशी ने सर्वेंट का चाय लाने का आदेश दिया और पत्नी से कहा—"ये तुम्हारे भतीजे लोग आ गये हैं, मैं तो हुआ फुरसत।' मिसेज जोशी मुस्कराने लगी। तभी शरद् ने कहा—"चाचा जी! क्या बात है? सर सुबह य हम लोगा को कौतूहल मे डाले हैं।" "आज प्रो० नरेन्द्र और उनके परिवार का यहाँ सायंकाल डिनर हो रहा है, जानते ही होगे, प्रो० नरेन्द्र अब दिल्ली ही रहेंगे ' मिसेज जोशी ने शरद् क कौतूहल को शान्त किया और कहा—'तुम लोग यह लिस्ट लेकर जरा मार्केटिंग कर आओ, तो हम सचमुच मे इन्हें फुरसत ही बोल दें।" शरद् और मुकुल लिस्ट लेकर तैयार हुये मिसेज जोशी ने उन्हे पैसा दते हुए यथा शीघ्र आने के लिए कहा।

मिसेज जोशी ने डॉ० जोशी से पूछा—"क्या! प्रो० साहब का पूरा परिवार भी जायगा?" डा० जोशी ने उत्तर दिया—"अभी प्रो० साहब अकेले ही जायेगे, फिर भविष्य मे जैसा निणय लें।" मिसेज जोशी ने कहा—'फोन करके देखो—अलका और शालिनी—आ गई हो, तो उन्हें पहले बुला लो, प्रो० साह्ब और उनकी मिसेज समय पर आ जायेंगे।" विश्वविद्यालय से अलका तो आ ही गई होगी, शालिनी या तो आ ही गई होगी या आ ही रही होगी" यह कहते हुए डॉ० जोशी नें डायल घुमाना शुरू किया। मिसेज नरेन्द्र ने फोन रिसीव किया तो डॉ० जोशी ने कहा—'मिसेज स बात कीजिए।' मिसेज जोशी ने माउथपीस लेते हुए कहा—'हलो दीदी! क्या हो रहा है, बहुत बहुत बधाइयाँ" उधर से उत्तर आया—"धन्यवाद,

प्रो० साहब के दिल्ली जाने की तैयारी चल रही है" फिर मिसेज जोशी और मिसेज नरेन्द्र ने बात का जो सिलसिला शुरू किया तो लगा दोनो आमने सामने बैठी बात कर रही हैं। डा० जोशी ने याद दिलाया—"अरे असली बात तो कहती नही, अभी तो भाभी आ ही रही हैं, रात भर बातें करना" तब कहीं मिसेज जोशी ने अलका और शालिनी को भेजने के लिये कहा।

मुकुल और शरद् मार्केट से लौटे तो अलका और शालिनी को नही देखा। पारस्परिक अभिवादन प्रत्याभिवादन के पश्चात् अलका को बधाई दी। अलका ने धन्यवाद देते हुए कहा कि पापा की इस नियुक्ति से हम सभी डिस्टर्ब्ड हो गये हैं। पापा वहाँ अकेले ही जायेंगे और हम सभी यहाँ उनकी अनुपस्थिति से व्यग्र रहेंगे। बात सत्य ही थी। मुकुल और शरद् ने मौन प्रतिक्रिया व्यक्त की। मुकुल के मन का एक भारी बोझ हल्का हो गया और शरद् का कौतूहल शान्त हो गया कि अलका यहीं रहेगी। मिसेज जोशी ने मुकुल और शरद से कहा—"आज तुम लोग भी यहीं भोजन करोगे, तब तक हमारी सहायता करो" मुकुल ने कहा—"आण्टी, आदेश दीजिए, किन्तु भोजन के लिये क्षमा करें, क्योंकि " 'बस, बस, बहाना हो गया, चुपचाप तुम लोग वह करो जो मैं कहूँ" मिसेज जोशी ने आदेश दिया। इस पर डा० जोशी ने परिहास पूर्वक कहा—"मुकुल, जब इस देवी के सामने गुरु की नहीं चलती, तो शिष्य की कैसे चलेगी ? बैठो हम लोग कुछ काम करते हैं।" अलका, शालिनी, मुकुल, शरद् और मिसेज जोशी—सभी हँसने लगे, किन्तु शालिनी ने कहा—"चाचा जी ! इसमें चलने न चलने की क्या बात है, आण्टी जी का गृहव्यवस्था में पूरा अधिकार है जैसे क्लास में आपका" मिसेज जोशी ने कहा—"अब दो उत्तर, तो जानें" सभी हँसने लगे। मुकुल ने भी समय लिया कि अब जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

व्यवस्था सम्पन्न करके सभी पुनः ड्राइंग रूम में बैठे थे। मिसेज जोशी के पास दीप्ति बैठी थी और उसकी बगल में अलका, शालिनी दीप्ति को अपने पास बुला रही थी, किंतु वह नाराज थी शालिनी से, कह रही थी—"तुम लोज लोज क्यों नहीं आती ? शालिनी ने कहा—तुम कहाँ बुलाती हो ? अच्छा, अब रोज आऊँगी, आ मेरे पास।" दीप्ति शालिनी के पास चली गयी और शालिनी ने कहा—"चलो दीदी खेलें गेंद।" शालिनी और दीप्ति गेंद खेलने बाहर लान में निकल गयी।

मुकुल चुपचाप बैठा अपने उस स्वप्न के विषय में सोच रहा था, जिसमें अलका के दिल्ली के प्रवास की बात तथा अलका के द्वारा पत्र प्रेषित करने का मुकुल से आग्रह किया गया था। अलका एक पत्रिका लिये उसके पन्ने उलट रही थी—मुकुल ने एक उड़ती दृष्टि से अलका की ओर देखा, अलका वक्रदृष्टि से मुकुल को अवलोकित करने का प्रयास कर रही थी, उसके हाथ से पत्रिका गिर पड़ी। एक विद्युत्तरंग का प्रकम्प अलका के शरीर में व्याप्त हो गया। किसी को क्या अनुमान ? अलका पत्रिका फिर से उठाकर सहज बनने की चेष्टा करने लगी। डा० जोशी कह रहे थे—"इस बार देखना है, तुम्हारी कक्षा में टाप पोजीशन कौन लाता है ?' यद्यपि डॉ० जोशी के अंतमन का आशय था कि देखना है तुम दोनों में कौन टाप करता है ? दोनों ने आशय स्पष्टतः समझ लिया था। शरद् ने कहा—"सर ! बड़ा ही टफ कम्पटीशन है" शरद् और कुछ कहता—तभी शालिनी और दीप्ति की "पापा, पापा, अंकल अंकल" की चहक सुनाई पड़ने लगी। डा० जोशी तथा अन्य सभी लोग ड्राइंगरूम से बाहर आ गये, क्योंकि प्रो० नरेन्द्र के आने से ही शालिनी और दीप्ति का उल्लास व्यक्त हो उठा था।

प्रो० नरेन्द्र एवं प्रेमावती को रिसीव करके सभी लोग ड्राइंगरूम

मे बैठे । फिर समस्त तैयारी आदि के विषय मे जानकारी होती रही । प्रो० नरेन्द्र ने बताया कि राधवेश का आग्रह है कि जब तक समुचित व्यवस्था नही हो जाती है, तब तक वही रहूँ। मैंने समग्र परिस्थिति को देखकर उनके आग्रह को स्वीकार कर लिया है। प्रो० नरेन्द्र ने मुकुल से अचानक प्रश्न किया—"मुकुल एम० ए० करने के बाद क्या करोगे ?" मुकुल ने कहा—"सर ! आप लोगो का जैसा आदेश होगा वैसा ही करूँगा, वैसे रिसर्च तो ज्वाइन करूँगा ही, किन्तु कम्पटीशन मे बैठने की दृढ इच्छा है ।" "आज के युग के अनुसार निर्णय अच्छा ही है ' प्रो० नरेन्द्र ने सहमति व्यक्त की ।

डिनर के समाप्त होने के बाद प्रो० नरेन्द्र ने जोशी जी से अनुमति चाही, क्योंकि अभी प्रस्थान की तैयारी शेष थी । चलते समय प्रो० नरेन्द्र ने डॉ० जोशी से अपने परिवार की देखरेख का पुन आग्रह किया तथा मुकुल और शरद् से भी कहा—"आप लोगो ने मेरा घर देख ही रखा है , कृपया इन सभी लोगा की असुविधा का निवारण करने के लिये यथोचित कष्ट कीजिये गा । आप लोगो से कोई फार्मेलटी भी नही है, जैसे डा० जोशी की फेमिली को समझते हैं वैसे ही मेरी फेमिली को समझिएगा ।"

प्रो० नरेन्द्र के इस आग्रह की मुकुल, शरद्, शालिनी अलका, पर तीव्र प्रभाव रेखा पड़ी, किन्तु सभी रहे मौन ही । लेकिन चुप रहना शालिनी का स्वभाव नही था, उसने मुकुल और शरद् को सम्बोधित करते हुए कहा—"भाई साहब ! आप लोगो को रोज आना होगा और आपसे तो मैं गीत सुनूगी ।" अलका ने शालिनी की ओर तीखी दृष्टि से देखा । मन मे अलका ने सोचा कहीं इसके बकवास करने से मुकुल के आने मे कोई बाधा न उपस्थित हो जाय । मुकुल और शरद ने प्रो० नरेन्द्र के आग्रह को आदेश सा मान लिया था—कुछ उत्तर देने की आवश्यकता थी ही नही । ☐

[२५]

प्रो० नरेन्द्र को दिल्ली गये हुए तीन दिन व्यतीत हो चुके थे। मुकुल प्रो० जोशी के स्टडीरूम म बैठा हुआ कुछ नोट्स बना रहा था। तभी प्रो० जोशी आये और मिसेज से कहा कि चाय यहीं मँगाओ, हम सभी चाय यहीं पियेंगे। डॉ० जोशी ने मुकुल से पूछा— 'क्या आज अलका विश्वविद्यालय आयी थी ?" "सर मुझे क्या मालूम, आज तो मैं ही विश्वविद्यालय नहीं गया था।"—मुकुल ने उत्तर दिया। डा० जोशी ने कहा—"घर जाते समय प्रो० नरेन्द्र के यहाँ से ही होते हुए जाना और कल मुझे समाचार बता देना", "ठीक है सर"—मुकुल ने उत्तर दिया और फिर पूछा—"सर ! क्या क्या पूछना और क्या-क्या वहाँ मुझे कहना है।" "समाचार जान लेना—इतना ही काफी है" —डॉ० जोशी ने मुकुल की जिज्ञासा को शान्त किया।

मुकुल प्रो० नरेन्द्र के यहाँ पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि प्रेमावती और शालिनी दोनों अस्वस्थ हैं। प्रेमावती को तीव्रज्वर के साथ साथ सिरदर्द भी था, शालिनी को जुकाम और दर्द था। अलका ने मुकुल को देखा तो मन प्रसन्न हो गया। पापा के जाने के दूसरे दिन से ही मम्मी अस्वस्थ हुई हैं, शालिनी को आज ही जुकाम हुआ है। अलका ने कल ही सोचा था कि प्रो० जोशी को सूचित कर दें तथा मुकुल को भेजने का आग्रह कर दे, लेकिन कुँआरे, हृदय म शंका और लज्जा निवास करती हैं, वे कैसे अलका को स्वतन्त्र करती ? अलका ने मुकुल को देखा तो वह उसी तरह से प्रफुल्लित हो गयी जैसे कई घण्टों से बिजली गायब रहने के बाद कमरे मे अचानक लाइट आ जाय।

अलका ने कालबेल की आवाज सुनते ही अनुमान लगा लिया था

कि सम्भवत मुकुल ही होगा। मुकुल को देखने पर अलका ने उसे ड्राइंग रूम में चलने के लिए कहा। ड्राइंगरूम में जाकर मुकुल एक सोफे पर बैठ गया। अलका खड़ी थी। मुकुल चुप। अलका चुप। कौन क्या बोले? क्या पूछे। कभी अलका ऊपर देखती, तो कभी ड्राइंगरूम के गलीचे को पैर के अँगूठे से खुरचती। मुकुल कभी अलका को देखता, कभी अपनी घड़ी देखता, कभी ड्राइंगरूम को, कभी कैलेण्डर को देखता अनायास ही दोनो की दृष्टि मिल जाती तो लाज की ऐसी तरंग उठती कि दोनो उसी में निमज्जित हो जाते और कोई किसी को न देखता।

इन क्षणो ने किसको क्या दिया और किससे क्या लिया? यह तो मुकुल और अलका ही बता सकते हैं। मुकुल ने ही अपने को नियन्त्रित करके पूछा—"मम्मी और शालू कहा हैं?" तब अलका को याद आया और उसने बताया कि मम्मी कल से अस्वस्थ है और शालिनी आज से। मुकुल ने अलका के मुख पर उल्लसित प्रसन्नता की रेखा को तत्काल ही प्रस्फुटित हुई अनुमानित कर लिया था और यह भी अलका के मुख पटल से स्पष्ट था कि अपनी मम्मी और शालिनी की अस्वस्थता से वह काफी परेशान रही है। इसलिए मुकुल पूछना चाहता था—"आप कब से अस्वस्थ हैं।" साहस ने साथ नहीं दिया। अलका ने मम्मी और शालिनी की अस्वस्थता का सम्पूर्ण समाचार बताया।

अलका की वाणी से प्रतीत हो रहा था कि उसके हृदय में घबड़ाहट विद्यमान है। मुकुल ने अलका के गृहसम्बन्धी अन्य समाचार को पूछा। अपनी उपस्थिति की आवश्यकता के विषय में उसने कह दिया कि जब आवश्यक समझें, मुझे सहज सूचित करें। मुकुल ने कहा कि मम्मी हैं तो कहाँ? अलका ने मुकुल को अपने साथ आने का संकेत किया। मुकुल अलका का अनुगमन करते हुई प्रेमावती के पास गया। अभिवादन करने पर प्रेमावती ने उसे आशीर्वाद दिया। काफी समय

तब मुकुल प्रेमावती और शालिनी के पास बैठा रहा। मुकुल ने प्रेमावती से कहा—"मम्मी कोई काम हो तो निसंकोच आज्ञा दीजिएगा।" प्रेमावती ने कहा—"बेटा, ठीक है, कहने की आवश्यकता है ? आवश्यकता पड़ने पर जरूर कहूँगी।"

शालिनी जो सदैव चहकती रहती थी, आज अस्वस्थता के कारण चुप थी, फिर भी उसने पूछा—"भाई साहब कहाँ से आ रहे हैं ?" मुकुल ने बताया कि डॉ० जोशी के यहाँ से आ रहा हूँ। शालिनी ने फिर यूँ ही शरद् के विषय में पूछा तो मुकुल ने उसके विषय में आज अपनी अनभिज्ञता व्यक्त की, क्योंकि शरद् से आज उसकी मुलाकात हुई ही नहीं थी। इतने में अलका चाय और नाश्ता लेकर आ गयी। चाय का प्याला अलका ने उठाकर उसकी ओर बढ़ाया, किन्तु "पहले मम्मी को दीजिए" मुकुल के इस आग्रह पर अलका ने मम्मी को चाय देकर फिर मुकुल को चाय दिया—सहसा मुकुल के स्पर्श ने अलका को वीणातन्त्री के समान झंकृत कर दिया। शालिनी को कप देने के बाद अलका ने स्वयं अपना कप लिया।

मुकुल चलने के लिये तत्पर हुआ, तो शालिनी ने आग्रह किया—"भाई साहब ! कल भी आइएगा'। प्रेमावती ने भी अनुरोध किया—'बेटा, अवश्य आना।" अलका ने अपनी उत्कण्ठा को नियन्त्रित ही रखा। शालिनी के आग्रह से वह मन ही मन आह्लादित हो गयी थी। मुकुल यथोचित अभिवादन के पश्चात् अपने वासस्थान पर आ गया।

प्रो० नरेन्द्र की तैयारी कराने में प्रेमावती श्रान्त हो गयी थी। एक दिन के पूर्ण विश्राम के पश्चात् स्वस्थ होने लगी थी। आज मुकुल आया था तो काफी वे ठीक हो गयी थी। अलका का आग्रह था कि वे अभी पूर्ण विश्राम करें। उसके अनुरोध के कारण प्रेमावती को आज भी विश्राम करना पड़ा। शालिनी को अचानक ही जुकाम हो गया

था । अलका अपनी छोटी बहिन शालिनी से बहुत ही स्नेह करती थी । शालिनी भी अपनी दीदी का सम्मान करती थी । महराजिन और सर्वेण्ट था ही, वैसे अलका को कोई परेशानी विशेष न थी, लेकिन भावुक होने के कारण वह आवश्यकता से अधिक तत्पर थी । इसलिये कुछ श्रान्त सी अलका अवलोकित हो रही थी । वैसे भी एक के बीमार होने पर पूरा घर बीमार हो जाता है—यह किंवद ती प्रचलित ही है, फिर यहाँ तो थोड़ा बहुत दो-दो बीमार थे ।

रात्रि मे अलका, मम्मी और शालू की यथोचित व्यवस्था करके अपने रूम मे चली गयी । महराजिन को कल से रात्रि म यहीं रहने के लिये कह दिया गया था, अत अलका कुछ निश्चिन्त होकर पढ़ने में तन्मय होना चाहती थी ।

पलग पर अलका ने सोचा कि कुछ समय अध्ययन करूँ, लेकिन पुस्तक के पृष्ठ छूते ही उसे ऐसी स्पर्श की छुवन अनुभव हुई कि वह रोमांचित हो गयी, उसकी रोमावलि कण्टकित हो गयी, उसे चाय देते समय छू गये मुकुल के स्पर्श की ही याद आ गयी, —मुकुल—मुकुल— मुकुल कब से अलका के हृदय मे आसीन हो गया है, उसका पञ्जरगत सारिका-सी तड़पती रहती है और मुकुल है कि न जाने अलका के विषय मे क्या सोचता है, कभी कोई बात ही नहीं करता है अलका भी किसी से कुछ नहीं कहती, कई दिन उसने चाहा कि अन्तरंग सखी से अपनी अनुभूति को वह व्यक्त कर दे, लेकिन [illegible] का साहस न कर सकी । उसे सदैव आशंका रहती है कि कहीं कोई बात जानकर प्रचार न कर दे—इसलिए उसका [illegible] साधती रहती है, [illegible] रहती है, कतिपय बार मुकुल के विषय में चिन्तित हो जाती है और सोचती है कि मुकुल पर, वहाँ तक हृदय का सम्बन्ध [illegible] फिर उसके हृदय में मुकुल के व्यवहार के प्रति प्रश्न [illegible] जाता है—

स्कूलो, कालेजो और विश्वविद्यालयो मे होली का मौसम बडा ही उन्माद भरा होता है। दीवालो पर, नोटिस बार्डों पर, श्याम पटो पर प्राय कोई न कोई कागज चिपका मिलता है, इन सब मे प्रोफेसरो, छात्रो एव छात्राओ के सम्बन्ध मे मर्यादित, भद्दे और अश्लील वाक्य, सिनेमा के गानो क टुकडे या कोई तुकबन्दी अंकित रहती है। होली के इस हुडदंग के विषय म प्राक्टर की हमेशा नोटिस निकलती है, दण्डित करन की चेतावनी दी जाती है, कि तु जमाने की प्रक्रिया के अनुसार जब प्राक्टर को ही उपाधिया मिलने लगती हैं तो सब नोटिसें यथास्थान चिपकी रह जाती हैं और होली अवकाश मे विश्वविद्यालय ब द होने के पूव ही भरपूर होली मना लेता है। इतिहास विभाग मे भी होली के पूव एम० ए० प्रथम वप की कक्षा मे एक पुलिन्दा पैम्फलेटस का गिरा। कुछ प्रोफसरो, द्वितीय वष एव प्रथम वष के कुछ छात्रो एव छात्राओ क विषय मे कुछ वाक्य इस प्रकार अङ्कित थे

शरद्—"हम फिदा मुकुल पे, मुकुल हम पे है फिदा।"
विजया—विजया को खाकर लोग नशा करते हैं।
विजया का देखकर सभी आह भरते हैं॥
विजया के नाजुक ख्यालो को हम जानते हैं।
रोज सुबह शाम वे खिडकी झाकते हैं।

दीपा—मेरे नोटस मत दखो, उसमे प्रेमपत्र लिखे हं,
मेरा पस मत छुओ उसमे प्रेमपत्र भरे है।
प्रेम करने कोई क्यो डरता है,
हाय! मेरा जी सण्डे सण्डे ही मचलता है॥

मुकुल—मुकुल चुपचाप सुनो एक दिन अजमाना,
क्लास मे किसी से नजर तो मिलाना।
लगता है कोई तुम्हे लेकर उड जायेगा,
अपने इस क्लास मे नाक तू कटायेगा॥

अलका—शबे—इ तजार मे, मैं रात भर जागी थी,
सुबह के स्वप्नो से आग मुझे लागी थी।
अब मैं थकी हूँ, मुझस न बात करो,
मेरी तमन्ना जानोगे, लेकिन इतजार करो॥

× × ×

कोई भी प्रोफेसर उस समय क्लास मे तो था नही। उत्सुकतावश सब के हाथ पैम्पलेट पहुँच गया। एक दूसरे को देखकर सभी मुस्कुराने लगे। कोई भी नही बचा था। सभी के विषय मे कुछ न कछ लिखा ही था। इन वाक्यो के विषय मे कमेटस चलने लगे थे। कुछ लडकिया दीपा के पर्स को छीनने लगी तो कुछ नोटस। कुछ लडके मुकुल पर कमेट करने लगे। क्लास की नाक मत कटाना। कुछ लडकियाँ अलका से पूछ रही थी किसके इ तजार मे तू जागती है। कोई किसी को उत्तर क्या देता आखिर होली का हा ठिठोली थी। इसी समय उसी क्लास के सामने से एक रिसचस्कालर जा रहे थे उन्हें पता नही था कि उनकी पीठ पर चिपके एक कागज मे क्या लिखा था—

"मैं साधना का पुजारी, राखी का उपासक और परवीन का दोस्त हूँ।'

जो कोई भी इस वाक्या को पढ़ता, वही हँसता। अ त म किसी ने वह कागज निकाल कर उसके हाथो मे दे दिया—वह बेचारा बहुत ही बोर हुआ—यह थी—विश्वविद्यालय की होली की तरङ्ग—जिसमे चारो ओर ही एक परिहास, एक मस्ती और एक आकर्षण भरा था।

प्रत्यक्षत प्रोफेसर जरूर इस व्यवहार की आलोचना करते थे, किन्तु होली के किसी पैम्पलेट को पाकर वे भी रुचि के साथ पढ़ते थे और हास परिहास का आपस मे आनन्द उठाते थे। हो सकता है और विभागो मे भी ऐसी धूम मची हो, लेकिन इतिहास विभाग की इस कक्षा मे पैम्फ्लेट की तीव्र प्रतिक्रिया थी। इसी परिहासपूर्ण वातावरण मे विश्वविद्यालय की कक्षायें विसर्जित होने की घण्टी बज गयी।

अलका की पस मे वह पैम्पलेट पड़ा। घर पहुँचकर वह उसके विषय मे सोचती है—सभी के विषय मे अङ्कित वाक्यो को कई बार पढती है। अपने विषय मे पढा—मुस्कुरायी। मुकुल के विषय मे पढते ही उसे खूब हँसी आयी। वह सोचती रही कि पैम्पलेट निकालने वाले भी क्या मजेदार हैं? कैसी कैसी कमेन्ट्स निकालते हैं? दीपा बेचारी को तो खूब पीसा गया है, फिर सोचती है कि मेरे विषय मे ही क्या कम कमेन्ट्स हैं?

प्रो० नरेन्द्र के जाने के बाद से मुकुल प्राय आ ही जाता था। अलका और मुकुल मे बातचीत का सिलसिला चल पडा था। लेकिन मन को खोलकर कोई नही रख सका था। अलका कई दिन से सोचती थी कि वह अपने हृदय की सुकुमार कलियो के भरे हुए रस से मुकुल को आप्यायित कर दे, वह सोचती थी कि अपने मन की बात को मुकुल से बता दे, लेकिन मनुहार से ईर्ष्या करने वाली लज्जा उसे अनुत्साहित कर देती। फिर भी धन्य हो—होलिका को!! अलका ने सुदृढ निश्चय कर लिया कि मुकुल को वह "होलिका परिहास" उपहार के रूप मे देगी। इस निश्चय के साथ वह सोचने लगी और उसने लिखा

"सुना है कि लोग आपका इन्तजार करते हैं।
हम तो आपको रट्टू तोता ही समझते हैं।।

अगर कोई आपको उड़ा के ले आयेगी ।
विश्वविद्यालय का नया इतिहास वह बनायेगी ॥

एक लिफाफे मे भरकर शाम के समय मुकुल के आने पर घर जाते समय अलका ने "बुरा न मानो होली है" इतना और लिखकर उसे दे दिया। मुकुल ने घर पहुँच कर उस लिफाफे को खोला। अलका द्वारा लिखे गये कमेण्टस को पढ़कर उसे अति प्रसन्नता हुई। हर्ष लहरिका की तरंग मे वह भावविह्वल हो गया। मुकुल न जाने कितनी बार उसे पढता रहा पढता रहा उसने भी निश्चय किया कि वह भी अलका को कुछ अवश्य समर्पित करेगा

"होली का रङ्ग आप पर भी चढ गया है,
रटटू तोता अब राम राम भूल गया है।
मैना से उसका कम्पटीशन पड़ गया है,
नोटस चाटना उसका जरूरी हो गया है॥

सब लोग करते हैं इन्तजार,
आप रात दिन पढती हैं।
सुना है कि सपनो मे आप,
सखियों से कुछ कहती हैं॥"

इतना तो हाथ से लिखकर, "बुरा न मानो होली है" कलात्मक ढङ्ग से काटकर आलू का ठप्पा बनाकर एक ठप्पा लगाकर मुकुल ने अलका के ही लिफाफे मे भर कर रख दिया। दूसरे दिन वह प्रात काल ही वहाँ चला गया और अलका को लिफाफा दे आया। अलका को लिफाफा देकर वह वहाँ रुका नहीं सीधे अपने घर आ गया। अलका ने मुकुल के शब्दों को पढ़ा और मुकुल की भावनाओं की अनुभूति में वह सिहर उठी। *वासंतिक पवन उसकी केशराशि को चपला गया।* कपोलपाली पर ऊषा किरण की सुनहरी आभा प्रदीप्त हो गयी। कर

किसलय मचलने लगे। कणलहरिका मे गूंजने लगा—"मीठी मीठी बतिया कलेजा छुवेला"। खञ्जन मञ्जिमा से विलसित नयन लालच से भरकर व्यग्र हो गये। रसीली रसना गुनगुनाने लगी। अधरराग प्रगाढ हो गया। मन कभी इस पार—कभी उस पार सोचने लगा। होली की स्पर्धा भी अनूठी होती है। अलका ने फिर निश्चय किया कि मुकुल को होली के दिन खूब परेशान करूँगी।

□

[२७]

रगा की बौछार लिए होली का दिन आ गया। लगभग ६ बजे प्रात मुकुल डॉ० जोशी के यहाँ गया। शरद् का इन्तजार कर रहा था। शरद् ने कहा था कि ७ ३० तक मैं आ जाऊँगा, फिर एक साथ डा० साहब के यहा चलेंगे। लेकिन शरद् नही आया तो मुकुल अकेला ही डा० जोशी के यहाँ गया। डॉ० जोशी के यहाँ लगभग १० बजे तक रहा। वहाँ से वह सीधे अलका के यहाँ को चल पडा।

प्रो० नरेन्द्र के बँगल पर जैसे ही पहुँचा, प्रेमावती ने उसका स्वागत किया। प्रो० नरेन्द्र को आना था, किन्तु रात मे तार आ गया था कि इस समय मैं नही आ पाऊँगा। प्रेमावती खूब जलपान सामग्री लेकर आयी। मुकुल ने जैसे ही जलपान समाप्त किया उसी समय शालिनी पिचकारी लेकर आ गई। मुकुल के ऊपर पिचकारी का सम्पूण रग डाल दिया और पिचकारी लिए वहाँ से भाग खडी हुई।

प्रेमावती जलपान के बतन उठाकर भीतर आ गयी थी। अलका रँग लिए मुकुल की ओर आ गयी और उसने मुकुल के ऊपर रँग डालने का प्रयास किया। एक मग रँग मुकुल के ऊपर पड गया था, दूसरा मग भरकर जैसे ही अलका पहुँची, मुकुल ने सावधानी से उठकर अलका का हाथ पकडकर मग छीनने का प्रयास किया। छीनाझपटी मे अलका का आचल सरक गया। अलका सकुचाकर रह गई और मुकुल ने रँग लेकर अलका के ऊपर डाल दिया। अलका के ऊपर इस रँग का उत्साह कुछ और ही पडा वह रँगभरी बाल्टी उठा लायी। फिर क्या था ? रँग की छीना-झपटी शुरू हुई। अलका के विभिन्न

अगो का स्पर्श मुकुल को पुलकित करता रहा। अलका रोमान्चित हो उठी और मुकुल को अलका के सस्पर्श से मादकता प्राप्त होती रही। होली की मस्ती, और होली के आलम ने अलका और मुकुल को अध परिरम्भ म भर दिया। घुला हुआ रँग समाप्त हो गया था। मुकुल ने अपने पास सुरक्षित सूखे रँग को निकाला और अलका के कपोलो पर कुकुम, गुलाल, मिश्रित रग लगा दिया।

अलका भावविभोर हो उठी थी। यद्यपि वह बार बार प्रयास कर रही थी मुकुल को परेशान करने का, लेकिन वह अपने हर प्रयास की सार्थकता जानती थी। उसका प्रयास हो रहा था मुकुल के स्पश की मधुमती छुवन को प्राप्त करने का, पुलक की उत्कट आकांक्षा उसे ललक दे रही थी अङ्गो की मन्दिर छवि म एक प्यास जग उठी थी अलका क्षणभर के लिए भी इस समय नही सोच पा रही थी—मुकुल भी सोच रहा था जीवन की रसीली अनुभूति जो मिल रही है, वह उसक प्रणय की साथकता है—प्यास है, वह इसी तृष्णा स प्यासा था उसके मन पपीहे को स्वाती की—बद मिल गई थी, मुकुल की मुखकान्ति की स्निग्धता—प्राय विकसित अरविन्द प्रसून की भाँति विलासमयी हो गयी थी।

प्रेमावती के आ जाने पर मुकुल अपनी पुलक मे तन्मय था। अलका अपनी आह्लादमाधुरी का रसपान करने के लिए भीतर चली गयी जो सुख अलका ने इन क्षणो मे प्राप्त कर लिया था, वह उसकी अपनी निजी निधि हो गयी थी। अलका मुकुल की बाहो मे सरोवर मे सन्तरण करती हुई मत्स्यकन्या के समान छटपटा रही थी मुकुल अपने बाहुपाश मे कसकर शीतल, स्निग्ध कपोलपाली पर गुलाल अबीर का लेप कर गया वह बार बार अपने कपोलो को छूती है, अपने को मुकुल के बाहुवलय मे आवेष्टित अनुभव करती है, मणिबन्ध पर मुकुल के कर बन्धन को महसूसती, अधरपुट पर अभी भी तरलता

गुलाबी मन्कता विद्यमान् थी, जो मुकुल के अंगुलिसस्पर्श से उल्लसित हो गई थी।

एक ओर ये सरस अनुभूतियाँ थी, वसन्त की अठखेलियाँ थी, दूसरी ओर अलका का मन कोकिल उतावला हो रहा था—अपनी पञ्चमराग छेड़ने के लिए, अलका स्पर्शमाधुरी में डूबी कुछ सोच रही थी—सोचती जा रही थी, एक कागज निकालकर वह लिखने लगती है—

"मेरे हृदय मे एक उथल पुथल, एक क्रन्दन एक पुलक उमड़ रही है, क्या आप अनुग्रह करके मेरी हार्दिक अनुभूतियो की कल्लोलिनी म उद्वेलित अन्तरगित सुकुमार भाव कलिका को स्नेहपियूष के रसनिर्झर से अभिसिक्त करेंगे।"

"कौशाम्बी नगरी ने मेरे मन को विमुग्ध कर दिया था। अतीत हो चुका है—विशाल समय का अन्तराल, यह वासवदत्ता—प्रतिक्षण अपने उदयन के आह्वान की प्यासी है, क्या भरपूर निशाकर की चन्द्रिका से शीतल विभावरी मुझे कभी स्निग्ध लगी है? क्या किसी क्षण मेरा मन अपनी उपस्थिति से शून्य रहा है? क्या कोई शब्द आपकी गीत-गुंजिमा से विरहित होकर मुझे पुलकित कर सका है?'

"आप से मैं उत्तर चाहती हूँ—बताइये, यह सब क्या? न जाने मेरे हृदय मे कितनी अनुभूतियाँ मुकुलित हुई हैं, उन सबकी स्निग्धता और कल्पना ने मुझे अत्यधिक पीड़ा, वेदना और आशङ्का दी है—क्या? मैं सर्जन करती रही हूँ—अपने अधिष्ठित देव को समर्पित करने के लिए भाव पुष्पो का, मैं सोचती रही हूँ—कौशाम्बी म लञ्च के समय अपने सामने बैठे हुए आपने, नयनो की भाषा से मुझे मधुर आमन्त्रण दिया था, नयनो के द्वार से आप जानते हैं या नहीं, मेरे हृदय मन्दिर मे पहुँचकर आपने मेरा आतिथ्य स्वीकार किया है,

लेकिन आज तक मुझे उत्कण्ठित उत्साहित और उल्लसित करके आप चुप क्यो हैं ?"

मुझे भ्रम नहीं है, निश्चय ही—आप भी स्नेहसुधा बिन्दुओ से अभिषिक्त हैं ? कतिपयवार आपके नयनो मे जो आभा मेरे समक्ष विलसित हुई है, वह मुझे स्नेहसम्बल प्रदान करने के लिए ही है—भावविह्वलता मे कैसे क्या लिख गई हूँ, मुझे अपने इन शब्दो पर विश्वास नही है, क्योकि मेरे हृदय मे विद्यमान् मधुरमदिर भावनाओ को व्यक्त करने की क्षमता इन निगोडे शब्दो मे होती, तो आज तक आप क्यो चुप रहते ? मैं क्यो चुप रहती हूँ ?

"आपके सुधासरस स्पर्श ने, आप द्वारा सिक्तरँग की बिन्दुओ ने —मुझे बडा उल्लास प्रदान किया है, क्या मैं अपनी चिरसंजोयी कल्पनातालिका मे स्फुटित कलिका के सुवास से आपको अवगत न कराऊ ?'

इतना लिखकर अलका पत्र को एक लिफाफे मे भरकर रख देती है। होली के रग क्षपण की समाप्ति होने वाली थी, वह अपनी तन्मयता मे भूल ही गयी था। प्रेमावती ने सोचा था कि अलका रग से घबराकर भीतर बैठ गयी है। मुकुल थोडी देर तक बैठा था, फिर वह स्नान करने के लिए घर आ गया था। शालिनी ने पहले ही उससे दो बजे पुन आने के लिए कह दिया था, यह भी आग्रह कर दिया था कि आप हम सभी के साथ ही भोजन करेंगे, फिर आपके साथ हम लोग डा० जोशी के यहाँ चलेंगे।

□

[२८]

मुकुल अलका के यहाँ से सीधे अपने घर गया। शीघ्र ही स्नान किया। वह अलका के साथ की गई छीना झपटी को याद करने लगा। रँग छोड़ने के प्रयास के विफल किये जाने पर भी वह मुकुल से उलझती रही और मुकुल होली की उस तरंग का उचित उत्तर देता रहा। याद करता है मुकुल अलका के कपोल पर रँग, गुलाल मलने के प्रयास को। उसे अपनी तरल उँगुलियों में वही मुस्कुराहट, वही सिहरन और वही स्पर्शानुभूति होने लगी थी। अलका के पुलकित अङ्ग अङ्ग ने एक अनकहा अप्रकट आमन्त्रण मुकुल को प्रदान कर दिया, अलका के अधर का प्रगाढ़ राग। मुकुल के लिए निगूहित नहीं रहा, मञ्जुल वक्र नयनों की लालिमा से मुकुल ने प्रणय के रँग को देख लिया था, उड़ती उरझती अलकावलि में सहज लहर की मचल को अवलोकित कर लिया था। मुकुल ने अलका की हथेली में जिस सुकुमारता का अनुभव किया था—वह उसके अंग अंग को झंकृत कर गयी थी, वह उन्हीं सुधियों में खो गया था।

आज की इस होली ने उसे जिस रंग में सराबोर कर दिया था—वह उसके मन से कभी छूट नहीं सकता था। अलका के लिए उसकी कल्पना सदा उत्कण्ठित रहती थी। आज उसकी उत्कण्ठा सरस हो गई थी, उसमें आह्लाद भर गया था—उसे एक एक चित्र, बीते हुए दिन के याद आ रहे थे, अलका के नयनों का मिल जाना, फिर कोध कर सहज लालिमा से कपोलपाली का आरक्त हो जाना, कर्णपुट का सदैव सनद्ध रहना, मधुकरी निनाद के समान मधुर शब्दों की अनुगूंज पग पग पर मृदुमन्थर अलसगति, केशराशि का झूमकर उत्तरंगित होना, ओष्ठ पर शबनम बिंदु-सी स्वेदकणिका का विलसित होना—

मुकुल के हृदय मे ये सब चित्र उभरने लगे थे, और प्रश्न उठ रहा था—आज तक इन भावो की वास्तविकता को मुकुल केवल कल्पना क्यों मानता रहा ? लेकिन तभी सोचता है कि मैंने सदैव अलका मे इन समस्त भावो को अनुभव किया था—तभी तो अपनी हृदय नगरी मे अलका की छवि को, उसके हृदय चित्रो को, उसकी स्मृतियो को एक मधुर और अनूठी निधि के समान सुरक्षित कर लिया था—जो उसे आज अनुपम कल्पना द्वारा सृजित चित्र प्रदान कर रही है।

इन भावनाओ मे डूबे मुकुल को याद आ जाती है दो बजे तक पहुँचने की। वह जल्दी स तैयार होकर चल पडता है। मुकुल को विलम्ब हो गया था। अलका बार बार अपनी खिडकी स गेट की ओर देखती थी। उसके हृदय का कम्प बढ रहा था। मुखछवि का उल्लास *शङ्का आशङ्का से मलिन हो रहा था—वह सोचती थी कि मुकुल आ* रहा होगा, फिर सोचती कि कही रुष्ट तो नही हो गया। शालिनी कई बार पूछ गई थी कि दीदी जाते समय मुकुल ने आने के लिए न' तो नही किया था—अलका कहती—नही, फिर शालिनी पूछती की क्यो देर कर रहा है ? शालिनी को उतावली थी कि वह कितनी जल्दी अपने चाचा—डा० जोशी—के यहाँ पहुँचे ? शालिनी और अलका—दोनो ही प्रतीक्षा कर रही थी। प्रेमावती कई बार इन लोगो से भोजन कर लेने के लिए कह चुकी थी लेकिन दोनो ही 'मुकुल को, मम्मी, आ जाने दीजिए''—कहकर टाल चुकी थी।

मुकुल गेट पर दीख पडा। अलका प्रसन्न हो गई और शालिनी चहक उठी। मुकुल के आने पर नयनो मे बाँकपन और अधरपुट मे मदमुस्कान भरकर अलका ने प्रश्न किया—'आपने बडी देर कर दी—हम लोग कब से प्रतीक्षा कर रहे हैं। 'शालिनी ने कहा— 'भाइ साहब ! आप बडे लापरवाह तथा आलसी हैं ? कितनी देर कर दी है आपने ?'' मुकुल हँस पडा, शालिनी की ओर उन्मुख होकर कहा—

"सारी" और अलका की ओर देखते हुए पुन कहा—"स्वस सारी।" दोनों हँस पड़े।

प्रेमावती ने आकर के कहा कि इतनी देर तो मुकुल ने किया है, अब तुम लोग और देर करो, "चलो सब कोई खाना खालें"—कहती हुई प्रेमावती डाइनिंग टेबुल पर चली गयी। वहा खाना सजा हुआ था। टेबुल के दोना ओर सभी बैठ गये। शालिनी और प्रेमावती, मुकुल और अलका आमने सामने पड़े। शालिनी ने कहा—"भाई साहब! आज हमारा आपका कम्पटीशन है, देखते हैं कौन ज्यादा खाता है ?" मुकुल ने कहा—'मैं हार मानता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी साजिश जानता हूँ एक गुझिया खाकर कहोगी कि मेरा पेट भर गया है—यहाँ दस गोले मे भी कुछ नही होगा ता तुम्हार साथ कम्पटीशन लगाकर मुझे भूखा नही रहना है।

बात खूब बनाना जानते हे'—अलका न अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। डाइनिंग टेबुल के नीचे स मुकुल का अगूठा अलका क पैर से छू गया। अलका की दृष्टि उ मीलित हुई, पूरी अङ्गलतिका कम्पित हो गयी, और मुकुल सिहर कर रह गया। अलका ने अपन को नियन्त्रित किया। सामा य हुई। पुन अलका ने अपने पैर क अगूठे के नाखून से मुकुल क पैर को चुभा दिया। मुकुल उस चुभन का सह गया, लेकिन अलका की तरल पदतली के स्पश स पुलकित हो उठा। भोजन समाप्त हुआ। अलका शालिनी डा० जोशी के यहाँ चलने के लिए तैयार होन लगी। प्रेमावती घर पर ही आग तुको का सत्कार करन के लिए रहने का निश्चय कर चुकी थी।

अलका ने तैयार होकर गाडी निकाला। शालिनी, मुकुल और अलका—डा० जोशी के यहाँ के लिये स्टाट हुए तो अलका ने अवसर देखकर मुकुल को लिफाफा दे दिया। मुकुल ने सोचा इस लिफाफे म फिर कुछ होली का परिहास ही होगा। चुपचाप अपन पाकेट मे रख

लिया और अलका से पूछा—"इसमे क्या है ?" अलका सिहर उठी और उसने उत्तर दिया—"मैं क्या जानूँ ?" शालिनी अलका मुकुल के उत्तर प्रत्युत्तर से अनभिज्ञ रही।

मुकुल के हृदय मे अलका द्वारा दिये गये लिफाफे को पढने की लालसा उफन रही थी, लेकिन क्या करता ? डॉ० जोशी के बँगले पर पहुँचकर वह डॉ० साहब से बात करने लगा और आग तुको का सत्कार करने म व्यस्त डा० साहब की सहायता करने लगा। शालिनी कई बार डा० जोशी के पास जाकर नोक झोक कर आयी थी—उसे तो दीप्ति के साथ चुहल करने मे ही आन द आ रहा था। अलका मिसेज जोशी के पास बैठी उनको सहायता प्रदान करने लगी थी। घर पर कौन कौन आया, कौन गया, का विवरण भी बता रही थी तथा मिसेज जोशी से भी ज्ञात कर रही थी। लगभग दो घण्टे रहकर अलका ने मुकुल को सानुरोध शालिनी से बुलवाया फिर डॉ० जोशी और मिसेज जोशी से अनुमति लेकर अपने घर आ गयी।

।

-

[२६]

मुकुल अलका के घर से आकर उसके द्वारा दिये गये लिफाफे को खोलकर पढने लगा। मुकुल एक सांस म पूरा पत्र पढ गया, दुबारा पढा, तिबारा पढ़ा, फिर पढा फिर फिर फिर न जाने कितनी बार उसने पत्र पढा भावजलदमालिका की स्नेह बिन्दुओ से अभिषिञ्चित हो गयी थी मुकुल को हृदय कलिका की एक पाखुरी ! हृदय की लहर उफनने लगी थी उजरञ्जित होने लगी थी अतीत क परिवेश मे सजोयी समग्र स्मृतिया पल्लवित पुष्पित हो उठी थी, उनकी रसभीनी गमक—सुवास—सुरभि मुकुल का अनुभूत होने लगी थी।

याद आने लगी कौशाम्बी की यात्रा। लंच का समय अलका के मदुल नयन पटल से अपने नयना की अठखेली फिर स्वप्न का सुनहरा ससार गीत की प्यास आग्रह डा० जोशी के यहा सहसा चम्मच गिर जाना कितनी ही बातें थी, जो मुकुल के मन पर अपनी यादो की स्वण रेखा अङ्कित कर चुकी थी। मुकुल स्वय अपने विषय मे सोचता है कि वह कौशाम्बी से आकर कितना कुछ सोचता रहा है, अलका ने उसके मन को अपहृत ही कर लिया था। विचारगोष्ठी के दिन—अपने पत्रक को पढते पढते कितनी बार चोरी से उसने अलका की मुखछवि पर तीखे नयन प्रहार किय थे, अलका उसे निहारती ही रही है ! भाव मुग्ध होकर उनके विचारा को त मयता से सुनती रही है, सभी के द्वारा उसकी प्रशसा किय जाने पर अलका खिल उठी थी।

कितनी ही बातें थी, जो उसे क्रमश उन रसबिन्दुआ के मकरन्द को आप्यायित कराने लगी थी जो कदाचित् उसके द्वारा अनुभूत नही हो सकी थी अनुराग की स्याही से सँवारी गई शब्दराशि मुकुल

को अलकामय बना चुकी थी, मन मे कितनी चिन्ता उमडती थी, क्या मुकुल कभी अलका से उन भावनाओ को व्यक्त करने का साहस कर सका था आज मुकुल को वैभव की वह अतुलित राशि मिल गयी थी जिसके लिए युग युग से किशोर मन प्यासा रहता है ।

आनन्द लहरिका मे कल्लोल कर रहा था मुकुल, अलका के पत्र को पुन पढा और वह भी लिखने के लिए अपने को तत्पर करने लगा सोचन लगा समस्त अतीत को एक एक क्षण को – और लिखता है ।

" मुझे आप द्वारा प्रश्न जाल मे उलझाकर क्यो इस तरह आरोपित किया गया है ? उदयन अगर कारागार मे पडा था तो यह उदयन कदापि कारागार का अभिलाषी नही है, हाँ वासवदत्ता के नयना क कोर मे अवश्य उलझ गया है । अलका ! मेरी सुधानिधि !! मैं अपने स्नेहपीयूष से क्या अभिषिक्त करूँ ? मुझे अपन स्वप्न को यथार्थनिधि प्राप्त हो गई है । सुहानी चन्द्रिका म मुक्तादल सा शबनम बिन्दुओ से अभिषिक्त होती हुई न जाने कितनी बार हरित दूर्वापङ्क्तियो को मैंने निहारा है, लेकिन सदैव उनमे मुझे अलका की छवि ही अवलोकित हुई है ।"

"आपने इतने दिनो तक मेरे मन को अपहृत करके रखा है, इसका परिणाम शायद आपको विदित नही, मेरो प्रिय ! आपक आरोप निराधार हैं, "उल्टा चोर कोतवाल को डाटे' की उक्ति को आपने चरितार्थ किया है । अपनी छवि का सम्मोहन, अपनी मधुकरी गुनगुन का अनुरणन और अपनी रसपेशला दृष्टि का आकर्षण डालकर आपने मुझे इतना उत्पीडित किया है कि मन अगर एक एक पीडा का वर्णन करने लगे तो आप प्रश्न भूल जायेंगी ।"

"आपको भ्रम नही था स्नेहसुधा बिन्दुओ से अभिषिक्त होने

का तो फिर प्रतिक्षण मेरी कल्पना को उत्कण्ठित, कुतूहलमयी और तृपाकुलित आपने क्या रखा है ?"

'आज का यह कमनीय दिवस मेरी भावनाओ को कितना सुहाना वैभव समर्पित कर गया है। मेरी हृदय कलिका का सुरभित पराग आपके द्वारा प्रवाहित किये गये प्रणयसमीर की अठखेलियो मे समा गया है क्या वह सुरभित समीर आपकी भावनाओ की उद्यान वीथी मे स्वच्छ सचरण करे ? अनुमति है ? और सब प्रश्न भूलकर कृपया सहमति प्रदान करें अ यथा बहुत आरोप मुझ पर हैं ही आप जानें।"

मुकुल इतना ही लिख सका। अधिक उफान आता है, तो उसे नियन्त्रित करने के लिए उत्कट चातुरी की आवश्यकता होती है। मुकुल अलका की भावनावीथी मे सचरण करता हुआ अपने मन को कल्पनाओ म उलझ गया था वह अतीत से रसग्रहण करके भविष्य मे विकसित होने वाले भावसुमनो की वाटिका को अभिषिक्त करने लगा था। वह अति यग्र हो रहा था अलका की एक झलक को तत्काल प्राप्त करने के लिए !!

अलका की सुधियो म विभोर मुकुल सो गया मुकुल और अलका विश्वविद्यालय से लौट रहे हैं ड्राइविंग सीट पर बैठी अलका मुकुल से कहती है, आइये आपको ड्राइविंग सिखाऊँ ? मुकुल ड्राइविंग सीट पर बैठता है, अलका झुक झुककर मुकुल के दायें बायें हाथ पर हाथ रखती है, अलका को मुकुल का स्पर्श रोमाञ्चित कर गया, और मुकुल अलका के स्पर्श से आनन्दाकुल हो गया अलका के अलक जाल मुकुल को अपने म उलझाने लगे थे और मुकुल अपने को अनुत्कण्ठित प्रदर्शित कर रहा था अलका मुकुल के दाहिने हाथ को नियन्त्रित करने के लिए मुकुल के पीछे की ओर से प्रयास करने लगी उसके हृदय का उत्कम्प मुकुल के स्पर्श से द्विगुणित हो

गया वह आत्मविभोर होकर सुध बुध खो बैठी और मुकुल, जो पहले से ही ड्राईविंग जानता था स्पीड फुलकर कार को भगाने लगा अलका को जब अपनी सुधि आयी तो मुकुल पर तीक्ष्ण नयन प्रहार किया और मुकुल के अधर पर स्मित रेखा विकसित होकर चान्‍ किरन सी आलोकित हो उठी।

फुल स्पीड पर ब्रेक लगाकर फिर अलका को देखकर मुकुल ने उसे अपने आलिङ्गन म लेना चाहा स्वप्न उल्लासातिरेक से प्रस्थान कर गया नीद की मधुरिमा खुमार व्यक्त करन लगी और स्वप्नदृश्य की मादकता का प्रभाव शनै शनै छा रहा था मुकुल के मन पर।

□

[३०]

होली का दूसरा दिन आपस मे मिलन का दिन होता है विश्व-विद्यालय मे अवकाश था ही मुकुल स्नान आदि करके शरद् का पता लगाने चला गया, क्योकि वह होली के दिन भी नही आया था वहाँ जाने पर उसे पता चला कि वह घर चला गया है। मुकुल फिर लौट-कर अपने कमरे पर आ गया। भोजन करके होली के रगो की खुमार इतनी चढी थी कि वह सो गया सोकर उठने पर वह अपनी कल्पना परी की याद मे फिर डूब गया, अपना पत्र निकाला पढा, अलका के पत्र को फिर पढा, अपने पत्र को उसने सोचा—यह अपूर्ण है और फिर लिखने लगा।

"चाहता तो हूँ कि बहुत ही मधुर सम्बोधन से अपनी स्वप्न सहचरी को सम्बोधित करूँ ? लेकिन मन कहता है जब उन्हें ही उतावल। नही तो तुम्हे क्यो व्यग्रता ? अलका नही जानती हो यह मन बड़ा ही धोखेबाज है, मुझे तो इस तरह रोक देता है और स्वय आपके आँचल की छाह मे बसेरा बना चुका है।"

"रात भर तुम्हारी एक छवि, एक मुस्कान और एक झलक प्राप्त करने के लिए उत्कण्ठित, आकुल रहता हूँ, क्या कभी आप भी ऐसा महसूसती है ? मेरा हृदय, आप द्वारा बिना अनुमति के ही, अधि गृहीत कर लिया गया है, लेकिन उसके साथ आप व्यवहार एक मैत्री जैसा कर रही हैं, आप इस विषय मे है ही—स्वतन्त्र।"

"हम आमन्त्रित कर दिया है आपने प्रणय के मधुर पथ की लालसा संजोने के लिए ! आप अवश्य ही बहुत कुछ सोच चुकी होगी ? मुझे आपकी प्रतिक्षण प्रतीक्षा है आकुलता है, व्यग्रता है, और है—उत्कण्ठा !! समर्पित क्या करूँ ? मात्र एक हृदय था—उसे आपने

पहले ही चुरा लिया है—मन ने बिना पूछे ही आपके पास डेरा डाल लिया है। फिर भी हृदय में अंकुरित मधुर कल्पनायें आपको समर्पित करता हूँ।"

मुकुल अपनी कल्पना को समाप्त करके अलका के यहाँ जाने की तैयारी करने लगता है। मन में असीम पुलक और उल्लास भरा है, आज का दिन उसके लिए कुछ दूसरे ही प्रकार का प्रतीत हो रहा था पग पग पर उत्कण्ठा की अनुभूति होती है विविध विचारों में वह डूबा रहता है। पत्र लेकर प्रस्थान करता है।

अलका सामने आने से झेंपती है। वह रात भर उत्कण्ठित थी कि मुकुल क्या निर्णय लेता है, उसके पत्र का क्या उत्तर देता है, इसी व्यग्रता में रात भर उसे नींद ही नहीं आयी थी, प्रात होने पर उठी, अपने अन्य कार्यों को समाप्त कर दोपहर के आस पास थोड़ा विश्राम कर चुकी, नींद आयी नहीं फिर भी, लेकिन कुछ शिथिलता दूर ही हो गयी थी, उठने पर उसे मुकुल की प्रतीक्षा व्यग्र करने लगी। मुकुल के पहुँचते ही उसे उसकी प्रतिक्रिया जानने की उत्कण्ठा थी और मन में इतना सङ्कोच का अनुभव कर रही थी कि पुस्तक के पन्ने के समान उसने अपना हृदय मुकुल के सामने खोल कर रख दिया था—अब करे तो क्या करे ?

मुकुल के आने पर उसके पास अलका का ही जाना पड़ा, प्रेमा वती अतिथियों में व्यस्त थीं और मालिनी, मिसेज जोशी आई थीं, उन्हीं के साथ चली गयी थी। मुकुल को देखने पर अलका का कुछ धैर्य बढ़ा। मुकुल की स्मितरेखा बता रही था—सब कुछ ठीक है। मुकुल भी मन में संकुचित हो ही रहा था, फिर भी वह आश्वस्त था। मुकुल ने अलका को अपना पत्र दे दिया—अलका "अभी आयी" कह-कर भीतर चली गयी। उत्कण्ठा को नियन्त्रित न कर सकने के कारण वह पत्र को एक ही साँस में पढ़ गयी।

अलका को मुकुल की सहमति मिल गई थी—मन मे उल्लासपयाधि उमड़ने लगा था—वह पत्र को सुरक्षित रखकर मुकुल के पास गयी। मुकुल उसी के विषय मे सोचता हुआ बैठा था कि मैं कितना सौभाग्य शाली हूँ। मृदुलता की निधि—अलका ने उसे प्रणयपथ पर आहूत किया है। मुकुल के मन मे आसीन अलका की छवि तो पहले से ही थी, लेकिन मुकुल आशंकित हो उठता था कि उस छवि की उपासना में वह अपने प्रणय सुवास की सुरभि से समन्वित हृदयकलिका की अञ्जलि समर्पित करने का अवसर प्राप्त कर सकेगा या नहीं ? अलका को वह सोचता था कि उसके लिए एक कल्पना मात्र है [भावना की उत्कृष्ट भूमि मे वह अपनी प्रणयदेवी को पहले से ही सुसज्जित करना चाहता था—अलका के पत्र मिलने पर मुकुल अपनी कल्पना को साकार अनुभव कर रहा था।

अपने पास अलका को खड़ी देखकर मुकुल ने उसकी ओर देखा, अलका ने मुकुल को देखा—मुकुल ने अलका को बैठने के लिए कहा। अलका बैठ गई। मुकुल फिर शा त होकर स्निग्ध दृष्टि से अलका की छवि के पान म त मय हो गया। पुलकित हो उठा—मुकुल। अलका की किसलय कोमल हथेली को अपने हाथ मे ले लिया। स्पर्श की मधुर तरङ्गिणी की लहरो म हिलकोरें लेने लगी—अलका। मन म सुशोभित राजकुमार राजकुमारी के समक्ष बैठा था। राजकिशोरी अपने मन की उत्कण्ठा को अब नहीं नियन्त्रित कर पा रही थी। अलका ने मुकुल से कहा—"चलो कहीं घूम आयें", मुकुल ने सहर्ष स्वीकृति दी—"चलो।"

प्रभावती से अनुमति लेकर अलका ने तैयारी किया और गैरेज से गाड़ी निकालकर चल पड़ी।

□

का अनुवीक्षण किया, सहसा उठा और अपने बाहुवलय मे अलका को आवेष्टित करके मुकुल भावविमुग्ध स्वर मे बोला—"मेरी अलका! मेरी कल्पना !! मेरी हृदयदेवि अलका !!!" अलका और मुकुल सहज परिरम्भ मे न जाने कब तक आबद्ध रहते, लेकिन होटल की आशका ने उनको चैत य कर दिया। अलका कह रही थी—"मुकुल! मेरे जीवन पुष्प का विकास सार्थक हो गया, इसका अपने देव को आर्पित करने का उद्देश्य पुरा हो गया। पुष्प की चाह, अनजानी राह मजिल नही पाते—लेकिन मेरे जीवनपुष्प की चाह सार्थक हो गई है, तुम्हें मेरे हृदय ने अपनी कल्पना प्रभा की रश्मियो से अलकृत मधुरनिकेतन का अधीश्वर बना लिया है, बोलो—मेरे हृदय का आग्रह कहो तुम—"अलका! मैं क्या करूगा और क्या करना चाहूँगा शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना असहज है, सामने आह्लादित च द्ररश्मियो को जो आह्वान मेरी भावनाओ के द्वारा दिया गया था—उसका प्रत्युत्तर आज प्राप्त हुआ है, मेरे जीवन का परम सौभाग्यमय यह दिन है। कौशाम्बी भ्रमण के बाद प्रतिरात्रि हमने तुम्हें समर्पित की है, शायद तुम नही जानती! प्रतिक्षण तुम्हारी ही कल्पना की है—तुम्हें नहीं ज्ञात होगा। प्रभात की सुनहली रश्मिप्रभा का आलोक उस दिन से तुम्हारी याद लेकर कुछ नये स देश के साथ ही मेरे जीवन मे आया है। सा ध्यछटा उत्कृष्ट सपना की चाह लेकर आयी है। अलका मैं अपने हृदय की नगरी का राज्य न जाने कब का तुम्हे समर्पित कर चुका हूँ। मन चिन्तित होता था कि दान तो कर चुका हूँ, कि तु इसका लेने वाला कभी आयेगा कि नहीं ?"

निरभ्र आकाश और नि सकोच हृदय से प्रस्फुटित आलोक अति स्निग्ध होता है। अलका और मुकुल के हृदय का सकोच सिमट चुका था, लज्जा समझदार सखो की भाँति सव्याज दूर हट गई थी, उर का उत्कम्प प्रखर आह्वान भावना से आकुल हो रहा था, अधर की

प्रगाढ रक्तिमा से सुधाबिंदु छलछला रहा था, कपोल उत्सुक हो रहे थे, कर्णकुहर स नद्ध था—और मुकुल अलका की अगलतिका की एक-एक पाँखुरी की स्निग्धता के प्रति अपने सहज भाव को उन्मुक्त कर चुका था

× × ×

लकी स्वीट हाउस से अलका मुकुल बाहर आये। प्रफुल्लता की तरङ्गरेखा उनके वदनमण्डल पर विद्यमान थी। समय का आकलन इन मृदुक्षणो मे मूख ही करते हैं, अलका और मुकुल घर पहुँचे तो समय इतना हो गया था कि प्रेमावती प्रतीक्षा कर रही थी, क्योकि आज शालिनी भी नही आयी थी।

प्रमावती ने मुकुल से खाने का आग्रह किया—मुकुल—"नही मम्मी, नही मम्मी—करता रहा', तब तक महराजिन खाना लगाकर सूचित करने आयी। मुकुल जब अपने घर की आर चला तो प्रसन्नता उसके अङ्ग अङ्ग मे हिलोरें ले रही थी, कि तु हिलोरो मे कही फॅकी गयी ककडो के समान एक आशका भी आ गयी कि यदि मुकुल—अलका के प्रणय मे कुछ अडचन आयी, तो क्या होगा ?

□

प्रो० नरेन्द्र दिल्ली पहुँचकर अपने कार्य मे तमय हो गये। गृहविभाग के ऊपर हिन्दी विकास के दायित्व का गुरुतर भार, चातुरी से अनचाहे परिवेश मे हिन्दी के विकास का बीडा, परामश दाता को सौंप दिया जाता है। सम्न पटल पर प्रत्येक गृहमन्त्री साहस दिखा नही पाता। विभिन्न भाषाई लोगा को हिन्दी के लिए आकृष्ट करना, उसकी राष्ट्रीय भावना से सबको समभना—अँग्रेजी एव प्रान्तीय भाषाओ के प्रति मोहाग्र लोगा के मन म हिन्दी प्रेम भरना —प्रेमिका के स्नेह मे प्रतिबद्ध व्यक्ति को पत्नी भक्त बनाने के समान काय है। प्रो० नरेन्द्र फिर भी नय परिवेश मे तल्लीन हो गये। कभी-कभी राघवेश से उनकी गम्भीर बातें और कभी कभी गृहसमस्या पर विचार विमश हो जाता था। नरन्द्र अलका की शादी क विषय मे गम्भीरता स सोचते भी रहते थे। लेकिन न्यी दिल्ली म पहुँचकर लोग कुछ और ही आकषण म उलभ जाते हैं। प्रो० नरेन्द्र भी कुछ नई जोड तोड के प्रयास मे लग गये। राघवेश का वरदहस्त प्राप्त हुआ और नरन्द्र पेरिस मे भारत क सांस्कृतिक अधिकारी नियुक्त हो गये। विदेश मे शीघ्र कायभार ग्रहण करना था—अलका और शालिनी की परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। नरेन्द्र ने ट्रंकाल करके मुकुल के साथ दूसरे दिन पूरे परिवार को दिल्ली पहुचने क लिए सूचित किया।

× × ×

मुकुल के साथ प्रो० नरेन्द्र का परिवार दिल्ली पहुँचा। समग्र स्थिति पर विचार करके प्रो० नरेन्द्र ने यह निश्चय किया कि उनका परिवार फिलहाल इलाहाबाद ही रहेगा। अलका और मुकुल जो

अन्तर्द्वन्द्व में फँसे थे—ने थोड़ी राहत अनुभव किया। फ्रांस एयर-लाइन्स के विमान से प्रो० नरेन्द्र पेरिस चले गये। पेरिस में प्रो० नरेन्द्र भारतीय संस्कृति के आदर्शों के मूल्य एवं उदार सिद्धान्तों की गौरवमयी भावना के प्रसार में लग गये। लेकिन उनके मन में अलका के विवाह का प्रश्न उमड़ता रहा।

एक दिन नरेन्द्र अपने वास स्थान पर बैठे थे कि अचानक राघवेश एवं उनके साथ एक युवक आते हुए दीख पड़े। प्रो० नरेन्द्र ने राघवेश का स्वागत किया। राघवेश द्वारा ही ज्ञात हुआ कि यही अमित उनका पुत्र है जिसके विषय में यदा कदा दिल्ली में चर्चा होती रहती थी, सम्प्रति भारतीय विदेश सेवा में सफल होने के पश्चात् प्रथम नियुक्ति पर यहाँ आया है। दिल्ली में राघवेश के पुत्र से नरेन्द्र इसलिए नहीं मिल सके थे, क्योंकि अमित बम्बई की किसी फर्म में इस समय सर्विस कर रहा था। अमित के साथ ही राघवेश भी परिस देखने के मोह में यहाँ तक आ गये हैं। नरेन्द्र का राघवेश से ज्ञात ही था कि अमित प्रतिभाशाली है और उसी के परिणामस्वरूप भारतीय विदेश सेवा में चुना गया है। नरेन्द्र ने अमित को देखकर मन में एक कल्पना अंकुरित कर ली, अलका के विवाह। राघवेश से उनका कार्यक्रम पूछा और उन्होंने निश्चय किया कि इस समय अलका एवम् उनके परिवार की उपस्थिति यहाँ होनी चाहिए।

नरेन्द्र ने प्रेमावती को अलका और शालिनी के साथ पेरिस शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने का सन्देश प्रेषित किया। सन्देश में प्रो० नरेन्द्र ने घर का उत्तरदायित्व डॉ० जोशी तथा मुकुल पर छोड़ने का परामर्श भी दिया था। प्रेमावती ने प्रो० नरेन्द्र के आदेश का पालन किया, उन्होंने तदनुसार योजना बना ली। अलका और मुकुल ने यह समाचार सुना तो सान्ध्यपटल पर अवस्थित दिनमणि रेखा के समान म्लान हो

गये। मुकुल हृदय निरंतर व्यग्रता से भरता गया। अलका अवाक होकर मुकुल का अवलोकन करने लगी।

× × ×

शालिनी को जब पेरिस जाने का समाचार ज्ञात हुआ तो वह अति प्रसन्न हुई। विश्व मे सौन्दय की रानी नगरी पेरिस जाने की लालच ने उसे उत्फुल्ल कर दिया। वह कभी अलका से बात करती, कभी मुकुल से। शालिनी की उत्सुकता और प्रसन्नता को देखकर मन मे एक टीस अलका और मुकुल के मन मे उठती थी। शालिनी फोन पर अपने चाचा डा० जोशी को समाचार बताने चली गयी। मुकुल की आखो मे सलिल बिन्दुयें मुक्ताफल की भाँति अवलोकित होने लगी। अलका बिना कुछ कहे ही मुकुल के वक्षस्थल पर अपने मुखमण्डल को रखकर सिसकने लगी। अलका सिसकती रही, मुकुल स्तब्ध, निर्वाक् रहा। क्या बात करें ? वे दोनो कुछ सोच नही पा रहे थे।

अलका ही बोली– 'मेरे प्राण ! अब कब मैं मिल सकूगी !" मुकुल उत्तर क्या देता—शान्त ही रहा। अलका ने फिर कहा—"मुझे तो यह यात्रा न जाने क्या आशंकित कर रही है, तुम्हारे स्नेहसलिल के बिना यह कुमुदिनी सूख जायगी। ' क्या करू ?" मुकुल ने अपने को आश्वस्त करके अलका को समझाने का प्रयत्न आरम्भ किया "अलका ! छिन छिन तुम्हारी सुधि मुझे बेसुध रखेगी। तुम्हारी उपस्थिति से मुझे स्नेहनिष्यंदिनी को सुधाधारा पान करने को मिलती थी—उसके अभाव मे सच है कि मेरे जीवन से आगामी सभी दिवस सूख और विह्वलता से भरे बीतेंगे, लेकिन स्थिति का आकलन करके हमे प्रसन्न रहना चाहिये। फिर यह वियोग तो अल्पकालिक है।' "नही नही" कहती हुई शालिनी आ गयी। मुकुल ने उससे पूछा क्या—"नही नही" ! शालिनी ने बताया—' चाचा चाची घर पर नही हैं। मैं मम्मी के प्रश्न का उत्तर दे रही थी।" यह कहकर उसने अलका को सम्बो

घित करते हुए कहा—"दीदी ! मैं अपनी क्लासफेलो के यहा जा रही हूँ । थोडी देर मे आऊँगी ।" शालिनी के जाने के बाद मुकुल ने फिर कहना प्रारम्भ किया—"तो तुम्हें व्यग्र नही होना चाहिए । इस वियोग का भी अपना मजा होगा । देखेंगे, कितनी झूमती हुई तुम पेरिस से मेरे स्वप्नो मे आती हो । हर रात तुम्हारी याद म सोयेंगे । सपनो मे तुमसे बात करेंगे । सपना की खुमारी के साथ प्रातः उठेंगे और शाम की प्रतीक्षा म दिन बिता देंगे । चुटकी बजाते तुम्हारा पेरिस प्रवास बीत जायगा । फिर तुम होगी—मैं हूँगा और होगा—हम दोना का मृदुल प्यार !"

अलका मुकुल की बात सुन जरूर रही थी लेकिन वह सोच रही थी कि प्रियसाहचय से भी सुहाना क्या कोई शहर है कभी हा सका है ? प्रिय सुरभि सा रसभीनी क्या कोई सुरभि हो सकी है ? प्यार की पहली ही निगोडी सीढी पर वियोग मिलेगा—यह अलका कहा जानती थी । मुकुल ने अलका को अन य निमग्ना मे देखा तो उसने सोचा कि अच्छा होगा; थोडा उसे घुमा लायें । बाहर चलने का प्रस्ताव मुकुल ने रखा । अलका तैयार हो गयी ।

× × ×

खुसरो बाग के मकबरे की चहारदीवारी पर बैठा अलका पुष्पवीथी मे खिली सुमन कलिकाओ की मधुमती आभा को देखने लगी । मधुकर मधुकरी की छेडछाड उसे व्यग्र करने लगी । उसने कहा—मुकुल ! जा रही हूँ—सात समुन्दर पार ! सु दरतम् नगर पेरिस !! पेरिस मे अपने प्रिय के साथ अठखेलियाँ करती हुई, गलबाही डाले घूमती हुई, अधर-रस समर्पित करती हुइ और प्रिय की मीठी मीठी बाता क रस म डूबी हुइ आत्मविभार किशोरियो को दखकर मैं क्या कसक अनुभव करूँगी—जानते हो ? खिलती हुई कि तु तीव्र चि तन की चाह मे सूखती हुई कलिकाओ के समान मेरे मन की प्रिय मिलन की आकाक्षा

मचलकर टीस दे जायगी और कहीं यह टीस बढ़ गयी तो न जाने क्या होगा ?

\+ + +

मुकुल और अलका देर से लौटे। घर पर प्रो० जोशी एवं उनका परिवार आया था। प्रेमावती ने प्रो० नरेन्द्र का सन्देश बताया और प्रो० जोशी एवं मुकुल को घर का उत्तरदायित्व सहेजा। दूसरे दिन दिल्ली प्रस्थान की बात बतायी। प्रो० जोशी ने उन्हें आश्वस्त करते हुए तथा छेड़ते हुए कहा—"भाभी जी! चिन्ता मत कीजिए यहाँ तो मैं सब सम्हाल लूगा, लेकिन पेरिस में कहीं आपने कुछ नयी चक्करबाजी शुरू कर दिया तो वहाँ कौन आपको सम्हालेगा, प्रो० साहब आफिस सम्हालेंगे कि आपको! सावधान रहिएगा। परिस बड़ा रोमाण्टिक शहर है।" प्रेमावती ने हँसते हुए कहा—"मैं पेरिस मे बस जाऊँगी तुम देखते रहियो"। परिहासपूर्ण वातावरण में डॉ० जोशी ने प्रेमावती को यहाँ के विषय में निश्चित कर दिया।

प्रेमावती ने डा० जोशी के जाने के बाद मुकुल से तैयारी की सब बातें की। मुकुल प्रेमावती की सब बातें सुनता रहा। प्रेमावती ने बँगले कार आदि का प्रत्यक्षतः उत्तरदायित्व मुकुल को ही सौंपा। काफी रात बीत चुकी थी मुकुल प्रात आने के लिए कह कर अपने वास स्थान पर चला आया।

◘

[३३]

मुकुल घर आकर सोने की चेष्टा करता रहा। पलग पर पडे पडे वह आगामी दिनो के विषय मे सोचता है। अलका यहाँ नही मिलेगी—तो कैसा लगेगा? प्रो० नरेन्द्र का घर कैसे सम्हालूगा। चिन्ता घेरती जा रही थी, मुकुल तन्द्रिल होता जा रहा था, कल्पना मे अलका सुनहरी रेखा सी कौंध रही थी, धीरे धीरे प्रारम्भ होती है मुकुल की अलस कल्पनाओ की दौड! मुकुल और अलका कालिन्दीकूल पर सिक्ता के घर बना रहे हैं, अलका पूछती है—"मुकुल! क्या हमारे भाग्य मे बालू की ही दीवार बनाना है?" मुकुल आश्वस्त करता है—"नही, हमारे प्यार की वह मजबूत दीवाल बनगी, जो युगो तक अक्षय रहेगी।" मुकुल बालू पर लेट जाता है, अलका उसके वक्ष पर लेट जाती है, अलका की केशराशि मे मुकुल की अँगुलियाँ उलझ जाती हैं, सुखद समीर, कालिन्दी का तीर, मन अधीर हो उठता है। अलका अधमुकुलित दृष्टि से मुकुल को देखती है, मुकुल अपने बाहुवलय मे अलका को आवेष्टित कर लेता है मुकुल इतने मे ही सुदूर तट पर कुछ अस्त्रो से लस गुण्डो को देखता है मन मे दृढ़ निश्चय करके गुण्डो से भिडने की योजना बनाता है गुण्डो के प्रहार से वह मूर्च्छित हो जाता है अलका चीखती जाती है—बचाओ! बचाओ!! मुकुल बचाओ!!! "नीद टूट जाती है। मुकुल के मुखमण्डल पर व्यथा रेखा स्पष्टत अकित हो उठती है।

× × ×

प्रात काल अलका के यहाँ पहुँचा तो अलका ने अपनी स्मित रेखा से मुकुल का अभिनन्दन किया। लेकिन स्मितरेखा मे प्रसन्नता

का चटकीलापन नही था, बल्कि व्यथा का फीकापन आभासित हो रहा था। नयनकोरो मे अंकित लाल डोरे रात्रि जागरण की सूचना दे रह थे। अलका ही तो थी, लेकिन मुकुल को प्रतीत हुआ कि बरसो से रोगग्रस्त कोई दूसरी छाया है। रात्रि ने ही अलका की जो दुदशा कर दी थी—उसे देखकर मुकुल बहुत ही चिंतित हुआ। अलका रात्रि भर जागती रही है। अपने प्यार की सुहानी स्मृतियो मे डूबी थी, उसे मुकुल के साहचय मे व्यतीत क्षण भावाकुल करते रहे हैं, रात तिल-तिल कर कटी है। तैयारी पूरी हो चुकी थी। अलका और मुकुल प्रेमावती के पास गये। और गाडी पर सब सामान रखकर स्टेशन चल पडे।

गाडी ने सीटी दी। अलका, शालिनी और प्रेमावती चल पडी—दूर! सुदूर!! अतिदूर!!! मुकुल तब तक प्लेटफार्म पर खडा रहा—जब तक गाडी की क्षीण रेखा दीखती रही। अलका व्यथा भरे मन से और शालिनी प्रसन्नता से तब तक देखती रहीं, जब तक उन्हें मुकुल दीखता रहा।

स्टेशन से वापस आकर मुकुल अलका की सुहानी छवि को सोचता है पास के घर से फिल्मी धुन की तान सुनाई पडती है "तेरी दुनियाँ से चले होके मजबूर, हमे याद रखना" मुकुल गीत को सुनता है और मन ही मन यादो की जलधि-तरङ्गो मे गोते खाने लगता है। दिल्ली के विषय मे सोचता है, फिर पासपोर्ट और पेरिस के विषय मे अन्ततः सोचता है अलका के लम्बे पेरिस प्रवास को और उसकी तरल भावनाओ को।

× × ×

प्रो० नरेन्द्र अपने परिवार के पहुँचने से अत्यधिक आह्लादित हुए दूसरे ही दिन उन्होने राघवेश और अमित को अपने यहाँ भोजन पर बुलाया। प्रेमावती से उन्होने स्पष्ट कह दिया कि राघवेश का पुत्र

अमित भारतीय विदेश सेवा मे नियुक्त होकर यहाँ आया है, मुझे पसन्द है, अलका के लिए इससे अच्छा लडका मिलना कठिन है। प्रेमावती अमित के आने की व्यग्रता से प्रतीक्षा करने लगी। राघवेश और अमित के आगमन से सभी अति प्रसन्न हुए। अलका ने राघवेश को प्रणाम किया। शालिनी तो राघवेश को पेरिस मे देखकर पूछ ही बैठी—"चाचा जी! आप यहाँ कैसे?" "तुम्हारी तरह मैं भी तो घुमक्कड़ हूँ' राघवेश ने उत्तर दिया। अब तक नरेन्द्र ने अमित का परिचय सबसे करा दिया था। प्रेमावती ने अमित को देखकर मन ही मन दृढ निश्चय कर लिया।

अलका और अमित आपस मे बातें करते रहे। अलका अमित से कम्पीटीशन के विषय मे जानकारी लेती रही। अमित अलका से विश्वविद्यालय के विषय मे पूछता रहा। नरेन्द्र ने ही अमित से आग्रहपूर्वक कहा—"बेटा! शालिनी और अलका को एकाध स्थान दिखा लाते मुझे तो अवसर मिलता नहीं। तुम अभी नये नये आये हो, तुम्हारी भी उत्कण्ठा पेरिस के विषय मे होगी ही। चाचा जी जैसा आप कहें अच्छा तो हम लोग इसी समय से आपकी आज्ञा मानते हैं, आइये अलका जी चलें—हम लोग तब तक थोड़ा घूम आते हैं शालिनी क्या तुम भी चलोगी?' अमित ने इस प्रकार भ्रमण का प्रस्ताव रखा।' "क्या नहीं, हम भी तो पेरिस घूमने आये हैं'—शालिनी ने उत्तर दिया।

अलका शालिनी और अमित के जाने के बाद प्रेमावती ने अपनी बात पर शीघ्र आ जाना ही उचित समझा। राघवेश से उन्होने पूछा —'क्यो नेता जी! अमित की शादी कहीं निश्चित की या अभी भी कुछ दिन प्रतीक्षा करना है।" राघवेश ने कहा—नहीं भाभी! इस वर्ष तो अमित की शादी करके बहू लाना ही है। अमित सेटिल हो ही चुका है।" प्रेमावती ने कहा—"तो यह कार्य शीघ्र ही हो जाना

चाहिए।" नरेन्द्र प्रेमावती की बात सुनते रहे, राघवेश की बात को आधार बनाकर उन्होंने कहा—"भाई राघवेश! तुमसे मेरा सकोच तो रहा नही, अगर तुम्हें कोई अन्यथा आपत्ति न हो तो अलका के लिए अमित मुझे पसन्द है, सच पूछो तो अमित और तुम्हें देखकर मैंने केवल इसी प्रयोजन से इन सभी को यहाँ पर बुलाया है।" राघवेश ने उत्तर देते हुए कहा—भाई! प्रोफेसर! मुझे तो कोई आपत्ति नही है, लेकिन आप जानते हैं कि अमित की सहमति के बिना कोई भी निर्णय लेना उचित नही होगा। मैंने अभी किसी को वचन दिया नही है, आप चाहें तो स्वय बात कर लें या मुझे समय दें, मैं अमित की सहमति जानने का आज ही प्रयत्न करूगा। जहाँ तक मेरी इच्छा का सवाल है, मुझे तो अलका को अपनी बहू बनाकर बडी प्रसन्नता ही होगी।"

नरेन्द्र और राघवेश काफी देर तक वार्तालाप करते रहे। अमित आदि के आने पर सभी ने भोजन किया। रात्रि के दस बज चुके थे। अमित और राघवेश चले गये। प्रेमावती और नरेन्द्र बातें करते रहे।

× × ×

दूसरे दिन शाम को राघवेश के यहाँ नरेन्द्र प्रेमावती के साथ पहुँचे तो उन्हें राघवेश ने बधाई दी और यह बताया कि अमित अलका से बहुत प्रभावित हो चुका है। नरेन्द्र और प्रेमावती अत्यधिक आह्लादित हुए। राघवेश के मन का उत्साह तो उनके पुलक से विदित हो रहा था। अमित के नयनो की तरल दृष्टि मे जो मोहमयी भाषा अंकित होती रही थी—अलका उससे सावधान होती जा रही थी। अमित अलका की सावधानी को किशोरियो का सहज दुराव समझ रहा था। राघवेश ने विगत रात बडे ही सपाट शब्दो मे पूछा था—'अमित! तुम अलका को क्या पसन्द करोगे" पिता के आकस्मिक प्रश्न से भारतीय विदेश सेवा का अधिकारी अवाक रहा गया था, किन्तु दृढ स्वर मे उत्तर दिया—'मुझे प्रसन्नता होगी।'

राघवेश ने उसी क्षण से अपनी तमन्नायें संजोना शुरू कर दिया। नरेन्द्र और राघवेश के मध्य शैशव काल से ही कुछ भी दुराव नहीं था। बड़ी ही सहजता से अमित अलका के प्रणय बंधन की तिथि निर्धारित कर दी गयी। यह तय हुआ कि शादी भारत में सम्पन्न होगी। राघवेश के यहाँ से लौटने पर प्रो० नरेन्द्र ने प्रेमावती से विस्तृत परामर्श किया और निर्णय से अलका को अवगत कराने के लिए कहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल प्रेमावती ने अलका को उत्साहित मन से समाचार बताया। अलका प्रेमावती की बात सुनकर चुप रही, तुषाराहत कमलिनी सी वह मुरझा गयी। माँ को उत्तर देने का साहस वह नहीं कर पा रही थी। वह नहीं सोचती थी कि पेरिस में उसकी कल्पना पर इस प्रकार आकस्मिक आघात होगा। वह चुपचाप माँ की बात सुनकर एकान्त में चली गयी। वह सोच नहीं पा रही थी कि इतना शीघ्र मेरे जीवन के विषय में निर्णय ले लिया जायगा। मुकुल भी दूर है। क्या करूँ? चिन्ता की ज्वाला के सन्ताप ने अलका को आहत कर दिया। वह सोचती है कि मुकुल के प्रति अपने प्रणय का रहस्य माँ से उद्घाटित कर दूँ? अथवा पिता के समक्ष निवेदित करूँ? उस मुकुल के अतिरिक्त सब कुछ भूल गया था। प्रेमावती से यह भी बात विदित हो गयी थी कि १५ दिन बाद यहाँ से भारत के लिये प्रस्थान किया जायगा। अमित शादी के दो दिन पूर्व भारत पहुँचेगा। राघवेश १० दिन बाद भारत के लिए प्रस्थान करेंगे। नरेन्द्र लम्बा अवकाश लेकर शादी तक भारत में ही रहेंगे। अलका सुन सब चुकी थी, लेकिन उसे अपना भविष्य डरावना लग रहा था। एक बार फिर उसने माँ की बातों पर विचार किया। उसने निश्चय किया कि भारत पहुँचकर मुकुल के साथ विचार विमर्श करके ही कुछ निर्णय करूँगी। तब तक मुकुल को पत्र द्वारा स्थिति से अवगत करा देती हूँ। □

[३४]

रात सरकती जा रही थी। अलका अपने बिस्तर पर करवटें ले रही थी। उसे अपनी व्यथा के क्षण बड़े ही दूभर प्रतीत हो रहे थे। मुकुल को पत्र लिखने का दिन का निश्चय ही याद आता है। अलका पत्र लिखने मे मग्न हो जाती है—

'मेरे हृदयमंदिर के देव! अपनी कल्पना के अनुरूप न तो मैं भाव पुष्प समर्पित कर सकी और न अपनी मधुर रागिनी की मीठी तान से स्तुतिगान ही गा सकी। पेरिस मे पहुँचकर सुख की कल्पना तो मैंने नही की थी, किंतु जिस व्यथा की कील ने हृदय को अणुविद्ध किया है, उसके विषय मे भी नही सोचा था।"

'मेरे सिरताज! तुम्हें वेदनाभरा समाचार सुनाने का साहस नही हो रहा है लेकिन मेरा हृदय समर्पित होकर आश्वस्त है कि प्रत्येक वेदनाघटी मे तुमसे प्राप्त होगा—सम्बल आश्रय और मधुर प्यार!"

'तुम नही जानते हो चाचा राघवेश का पुत्र अमित यहाँ भारतीय विदेश सेवा मे नियुक्त होकर आया है। मेरे विषय मे पापा जी ने चाचा राघवेश से बात की और अमित के साथ मेरा सम्बंध पक्का कर दिया है। आज पन्द्रहवें दिन हम सभी भारत आ रहे हैं। एक माह के भीतर ही मैरेज की तिथि निर्धारित की गई है।"

'मेरे अपने प्राण! मैं तुम्हारे अतिरिक्त और किसी के विषय में सोच नही सकती। पापा और मम्मी को अभी मैंने कुछ नही बताया। भारत पहुँचकर तुम्हारे मधुर प्यार के मकरंद से अपने को पुनीत कर पापा से विनत शब्दो मे अपनी कल्पना मंजुरी को मुखरित कर दूँगी।"

तुमसे निवेदन है कि मेरी परीक्षा घड़ी मे मुझे बल प्रदान करना।

जिससे मैं आत्मबल के साथ अपने प्यार की मधुर कल्पनाओ की उद्यान-वीथी को हृदयसलिल से अभिषिञ्चित कर सकू।"

'जीवन साथ देगा तो, हमे व्यथानुभूति से अवश्य ही मुक्ति मिलेगी। पापा ने जीवन मे अब तक वही किया है, जो मैंने प्रार्थित किया है। यह निणय इतनी शीघ्रता और चातुरी से किया गया है— मैं स्तब्ध, हतप्रभ, चिताग्रस्त और आशङ्कित हो उठी हूँ, विश्वास न होते हुए भी मन के एक कोने मे दुश्चिता हो रही है कि पापा जी भी तो भारतीय पिता के सस्कारो से ही मुक्त हागे। कही वे भी पुत्री के लिए वर चुनना अपना अधिकार समझें, तो इस स्थिति मे मुझे अपन विवेक का प्रयोग करना पड सकता है।"

"प्रिय! तुम्हें वस्तु स्थिति से अवगत करा चुकी हूँ। मैंने अपनी कल्पना से निणय ले लिया है। एक एक क्षण दुश्चिता की ज्वाला से मुझे भुलसा रहे हैं। उत्कण्ठा के साथ भारत की पावनी धरित्री पर उतर कर अपने चदा के आह्लादपूर्ण कल्पना लोक म विचरण करने की प्रतीक्षा मे प्रतिक्षण सपने सजो रही हूँ।"

"मेरे जीवन! विगत और आगत क्षण कितने पृथुल हो गये हैं, सोच नही पाती हूँ" अपनी उस कल्पना स ता तुम्हें अवगत न करा सकी, जो तुम्हें भी आह्लादित कर सकती। मेर हृदय! आश्वस्त रहना, तुम्हारी अलका तुम्हारी हो चुकी है, अन्य की कल्पना भी नही कर सकती है। हृदय मे जो कील चुभ रही है उसकी मर्मा तक व्यथा से पीडित हूँ अवश्य, लेकिन प्रतिक्षण तुम्हारा मधुर प्यार मुझे शक्ति दे रहा है। प्रिय! शीघ्र ही अलका आ रही है, सदा सदा के लिये वह अपनी हृदयनगरी के अधीश्वर की कल्पना म निमज्जित हो जाना चाहती है।"

मधुर प्यार की सुहानी कल्पना मे विभार—अलका।

× × ×

अलका के जाने के बाद से मुकुल की दिनचर्या अस्तव्यस्त ही हो

गयी है। रात दस बजे जब वह प्रो० नरेन्द्र के बँगले पर पहुँचा तो उसे अलका का पत्र मिला। तीव्र उत्कण्ठा के साथ उसने पूरा पत्र एक ही साँस मे पढ़ डाला। मुकुल प्रो० नरेन्द्र के निश्चय के विषय मे जान कर मर्माहत हो गया, लेकिन अलका के पत्र ने उसे पूरी तरह से आश्वस्त कर दिया। पत्र को कई बार पढा। अलका के निश्चय को पढकर मुकुल का हृदय अलका के प्रति तीव्र उत्कण्ठित हो उठा। वह अपनी कल्पनादेवी की भावना से अभिभूत हो गया। उसने निश्चय किया कि अलका के विषय मे वह स्वय प्रो० नरेन्द्र से बात करेगा। अलका को पिता से बात करने की आवश्यकता नही पडेगी।

पत्र को पुन पढा और पढते पढते सो गया। स्वप्नजगत् बडा विचित्र होता है, वह कल्पना लोक का प्रतिबिम्ब और चिन्तालोक का सजीव चित्र उपस्थित करने मे तनिक भी विलम्ब नही करता। मुकुल स्वप्न लोक मे विचरण करने लगता है 'कालिन्दीधारा मे जलयान से मुकुल और अलका तैर रहे हैं, अलका अवमुकुलित दृष्टि से मुकुल को अवलोकित करती है, मुकुल की नयन तरंग अलका की दृष्टि को स्पर्श कर लेती है। अलका पुलकित होकर रोमाञ्चित हो जाती है और अपनी दृष्टि नीचे कर लेती है, कहती है—मुकुल अगर हो सका तो हम अपना बँगला कालिन्दी तट पर बनावेंगे, इस सलिलराशि पर अपने जीवन के कुछ मधुर क्षण अवश्य ही व्यतीत करेंगे। मुकुल अलका की नयन-पुलकावली से आह्लादित होकर अलका की ओर वक्र दृष्टि से अवलोकित करता है अलका देखती है मुकुल देखता है हृदयवीणा की तन्त्री प्रणयतान छेड देती है अलका और मुकुल, मुकुल और अलका प्रणय की मदिर चञ्चलताओ मे निमग्न हो जाते हैं सहसा मुकुल को प्रतीत होता है कि जलयान टूट गया है मुकुल अलका को बचाने का प्रयत्न करता है किन्तु सफल नही होता अलका कालिन्दी की प्रखर धारा मे जल समाधि ले लेती है मुकुल पसीने से लथपथ निःशब्द व्यथित हो रहा है। धीरे-धीरे स्वप्नदृश्य का चिन्तन करता है और चिन्ता से भयभीत हो उठता है, व्यथा कल्पना सकम्प सिहरन भर जाती है।

1

[३५]

प्रो० नरेन्द्र दो दिन के लिए दिल्ली ही रुक जाते हैं, प्रेमावती अलका और शालिनी को इलाहाबाद भेज देते हैं। तार द्वारा मुकुल को सूचना दी जा चुकी थी। मुकुल स्टेशन पर उपस्थित था। अलका ने अपने धैर्य का परिचय दिया। प्रेमावती को प्रणामकर अलका और शालिनी का प्रत्यभिवादन किया। सामान को व्यवस्थित कर सभी लोग चल पड़े।

कार पर बैठते ही शालिनी पेरिस की बातो का प्रवाह प्रवाहित करने लगी। प्रेमावती ने भी पेरिस के सौदय का वणन किया, किन्तु वहाँ के उ मुक्त, स्वच्छ द और विदेशी जीवन की रगीन परम्पराओ के प्रति उनकी अरुचि छिपी न रह सकी। शालिनी तो वहाँ का वणन ही किय जा रही थी।

× × ×

अलका और मुकुल निष्प द बैठ है। कही भी कुछ उत्साह अव लोकित नही हो रहा है। नीरज वातावरण विह्वलता की सृष्टि करता है। अलका की नयन पाँखुरी मे शबनम वि दुयें छलछला उठती हैं। मुकुल अपने बाहुपाश मे अलका को भरकर "नही नही, अलका नही," कहता हुआ आश्वस्त करने लगता है। वह कहता है—"अलका! हमारी प्रणयवीथिका का पथ प्रशस्त है, तुम्हारी भावना का एक भी सकेत मेरे लिए पर्याप्त निदेश होगा, जीवन की भी बाजी लगाकर मैं पूण प्रयत्न करूँगा, यदि जीवन आश कित न हुआ तो कोई मुझसे तुम्हें नहीं छीन सकेगा। प्रो० साहब विचारक हैं, साहित्यजगत् की भाँति जीवन के नये प्रतिमानो एव समीकरणो से वे अवगत हैं, वे अवश्य ही अपना आशीर्वाद देंगे, तुम्हें चिन्तित नहीं होना चाहिए।"

चि ता की गहराई मे डूबी हुई अलका ने कहा—"मुकुल ! मुकुल !! मैं कितना घुट रही हूँ, कुछ कह नही सकती, पापा ने अ नव निणय लेकर तात्कालिक कायक्रम निर्धारित करके और त तक मेरी सहमति असहमति न पूछकर आशकित कर दिया है। मु और तो नही कुछ कहती, पापा के दृढ निश्चय म अगर परिवतन करा सका तो मुझे अपने द्वारा कुछ करना पडगा।"

मुकुल अलका की सुदशना मुखकाति का अवलोकन करके भ मग्न होता रहा। अलका की बात उसे सकेत दे गयी, लेकिन उ सकेत की मजिल को समझने मे मुकुल असमथ रहा। मुकुल अ अलका ड्राइगरूम मे बैठ बातें कर रहे थे। प्रेमावती और शालिनी डॉ जोशी के यहा गयी थी। मुकुल आशका के जिस अधकार म डूबा रहा था। उसमे पथ की सहज प्राप्ति कठिन प्रतीत हो रही थी, अलव और मुकुल बिना कुछ कहे—अपना लक्ष्य निर्धारित कर लें—यह उचित नही लगा। अ तत निश्चय हुआ कि अलका प्रो० नरेन्द्र को प द्वारा अपनी बात स्पष्ट करेगी। यदि प्रो० नरे द्र की असहमति हुई त दोना अपनी मजिल प्राप्त करने के लिए स्वत प्रभावशील हो जायेंगे।

× × ×

प्रो० नरे द्र के आने के पश्चात् उ हें पत्र द्वारा अपनी प्रणयभावन के अकुरण के विषय मे अवगत करा दिया। प्रो० नरेन्द्र विचलित हुए कि तु उन्होने अमित और मुकुल के विषय मे सोचा और निश्चय किया कि अलका का विचार किशोरावस्था की उफनती ललक मात्र है, विवाह हो जाने के पश्चात् सब ठीक हो जायगा। स्थिति से प्रेमावती को भी अवगत करा दिया। प्रेमावती के मुखमण्डल पर एक विषाद रेखा दौड पडी। उन्होने प्रो० नरे द्र से कहा—"हम लोग नये सिरे से पुनर्विचार करें तो " प्रो० नरेन्द्र ने उत्तर दिया—"आपत्ति तो कुछ नही है, लेकिन मुकुल अभी छात्र हैं, उसका भविष्य अनिश्चित

है। अमित भारत की सर्वोत्तम सेवा में नियुक्त होकर सेटिल हो चुका है, उसका भविष्य सुरक्षित हो चुका है, तुम चिन्ता मत करो, हाँ इतना अवश्य है कि मुकुल और अलका को अब से एकान्त में बात करने का अवसर न प्राप्त हो तो अच्छा होगा। मैं भी प्रयत्न करूँगा कि मुकुल और अलका एक साथ बात करने का अवसर न प्राप्त करें। कितना दिन ही शेष रह गया है।"

प्रेमावती को अलका की उदासी का रहस्य अब ज्ञात हुआ। माँ का हृदय विह्वल हो उठा, लेकिन विचार करने के उपरान्त यही सोचा कि निर्णय लिया जा चुका है वह ठीक है। अलका अपने पापा और मम्मी की बात सुन चुकी थी। समस्त स्थितियों पर अपने नये ढंग से सोचा और निष्कर्ष निकाला कि मुकुल से परामर्श करने का अवसर अब उसे नहीं प्राप्त होगा—यह निश्चित है। अलका व्यथा की चट्टान से अपने को दबी हुई अनुभव कर रही थी, उसे मुकुल के बिना अपना जीवन व्यर्थ सा लगने लगा। उसने सोचा—प्यार की गरिमा को पापा तूफान समझते हैं—यह हमारे प्यार की अवमानना है, मेरी मधुर भावनाओं को आहत करना है, मेरे पवित्र मन पर यदि मुकुल के अतिरिक्त किसी अन्य का अधिकार हुआ तो धिक्कार होगा—मेरे जीवन को, मेरे प्यार को और मेरी भावनाओं को। अलका ने अपना धैर्य खोकर मुकुल को एक पत्र लिखा—

'मेरे प्रणयनगरी के अधीश्वर! पापा से मैंने पत्र द्वारा बात की, उनका निश्चय मैं ज्ञात कर चुकी हूँ, किसी न किसी प्रकार अमित के साथ मुझे बाँध ही दिया जायगा। आपके प्यार की शपथ है, अलका इस जन्म में अब आपको प्राप्त करने का साहस खो चुकी है अगले जन्म में क्या होगा—कुछ कह नहीं सकती, अमित के साथ विवाहित होकर तिल तिल घुटती रहूँगी, आपकी व्यथा को भी सहारा न दे सकूँगी और न सह सकूँगी। पापा से मैंने कभी लड़ाई नहीं की, आज

भी न सह सकूंगी । मेरे प्रिय ! मैंने अपना प्रबन्ध कर लिया है, जीवन पथ की मेरी मंजिल मुझे बुला रही है, विदा ले रही हूँ। सन्तुष्ट हूँ—आपकी स्मृति और आपकी सुभावनी मुखकान्ति मेरे मानसपटल पर है, इतना आपसे आग्रह करती हूँ आप मेरी बात मानेंगे, बताइये मानेंगे न, अपने जीवन को सुरक्षित रखकर विवाह अवश्य कीजियेगा, जीवन मे सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न कीजियेगा—*आपका सुखमय* जीवन होगा, तो मुझे शान्ति मिलती रहेगी । मैं ट्रैंक्विलाइजर का घोल तैयार कर रात मे पी कर सोऊँगी, आपकी सुहानी चाह को सहेजकर प्रगाढ़ नीद मे मग्न हो जाऊँगी । अपनी अलका को भूलियेगा तो नही, चलते चलते अपनी रसभीनी दृष्टि स तो देखिए । विदा प्रिय ! *विदा !!"*

चिरपिपासी—अलका

पत्र लिखकर, घर से निकलकर अलका ने लेटर बाक्स मे डाल दिया ।

दूसरे दिन प्रात ८ बजे ही प्रथम वितरण म अलका का पत्र मुकुल को प्राप्त हो गया । विक्षिप्त सा दौड़ता हुआ वह प्रा० नरेन्द्र के बँगले पर पहुँचा । चिर निद्रा मे मग्न अलका की लाश सज रही थी, अलका के आकस्मिक निधन पर सभी स्तब्ध थे । कारण मुकुल के *अतिरिक्त किसी को ज्ञात नही था । प्रो० नरे द्र विह्वल होकर रो* रहे थे मुकुल को देखकर वे भीतर भाग गये । प्रभावती विलाप कर रही थी । शालिनी दीदी चिल्लाती हुई पागल हो रही थी । मुकुल "अलका अलका" चिल्लाने लगा ।

× × ×

अलका जा चुकी थी दूर" बहुत दूर श्मशान पर उसकी चिता जल रही थी, चिता की ज्वाला मे एक कान्ति दैदीप्त हो रही थी भास्वर पुञ्ज सी । आलोकित स्वणरेखा सी !!

□